In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चरक गवेषणा पीठ पुस्तक-माला

164

सिद्धौषधि मञ्जूषा

प्रथम खण्ड

लेखक

प्राणाचार्य कविराज केशवदेव शास्त्री
तीर्थत्रय आयुर्वेदाचार्य भिषक् चूड़ामणि

चरक गवेषणा पीठ · कलकत्ता-७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिद्धौषधि मञ्जूषा के सुयोग्य लेखक

प्राणाचार्य कविराज केशवदेव शास्त्री

तीर्थत्रय, आयुर्वेदाचार्य, भिषक् चूड़ामणि, प्रतिष्ठाता अध्यक्ष
चरक गवेषणा पीठ, संचालक श्री लोकनाथ आयुर्वेद भवन,
कल०, प्र० चि० श्री दि० जैन दातव्य औषधालय, कल०,
भू० पू० चि० एस० वी० एस० मारवाड़ी अस्पताल,
कल०, भू० पू० अध्यक्ष श्री धन्वन्तरिपरिषद्, कल०,
लेखक—श्वित्र रोग और उसकी सफल चिकित्सा,
आविष्कारक—कठिन रोग कल्प चिकित्सा पद्धति ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदात्मकं ज्योतिः शाश्वतं नः प्रकाशताम्

सिद्धौषधि-मञ्जूषा

लेखक

प्राणाचार्य कविराज केशवदेव शास्त्री

तीर्थत्रय आयुर्वेदाचार्य भिषक् चूड़ामणि

चरक गवेषणा पीठ

कलकत्ता-७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रकाशक
चरक गवेषणा पीठ
४५, सर हरिराम गोयेनका स्ट्रीट,
कलकत्ता-७
फोन : ३३-४१३९

मूल्य १५ रुपये

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. LX3 N86
Book No.
Acc No. 000008

जनवाणी प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड,
१७८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-३ द्वारा मुद्रित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्या और क्यों !

इन प्रश्नों का आशय है, इस पुस्तक में क्या है और इसे क्यों लिखा गया है। वैसे तो इन प्रश्नों का उत्तर स्वयं यह पुस्तक है। इसके अध्ययन से पाठक को यह अवश्य विदित हो जायगा कि किस विशेषता को अपनी गोद में लिए यह उसके सामने प्रकट हुई है और किस महती स्थिति को लक्ष्य कर इसे साकार रूप देना आवश्यक समझा गया है। यह समस्त विश्व ही सद् की अभिव्यक्ति है। असत् से कभी सत् पैदा नहीं होता। ज्ञान नित्य, स्थायी एवं अविकारी होता है। विकारी ज्ञान ज्ञानाभास माना गया है। रज्जु में सर्पाभास भ्रान्त बुद्धि प्रसूत होता है। किन्तु दर्शक को जब तक सत्य ज्ञान का आश्रय नहीं मिलता, तब तक सर्प का आग्रह दूर नहीं होता। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि उस भ्रान्ति का पर्यवसान करने के लिए सत्य स्वरूप को उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाय। इस पुस्तक के प्रकाशन का उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही है।

वैसे यह पुस्तक आयुर्वेदीय चिकित्सा योगों की है और हजारों ही इस तरह के योग परम्परा से छपते आ रहे हैं। उनमें से अधिकांश योग पूर्ण सफलतामण्डित तथा अपने क्षेत्र के समर्थ प्रतिनिधि हैं। किन्तु स्वाधीन भारत वादों और नारों का देश बन गया है। इसमें प्रत्येक बात के लिए नये नारों का आविष्कार हुआ है। भारतीय संस्कृति के विशिष्ट अंग आयुर्वेद के लिए जिस नये नारे का आविष्कार हुआ है, वह है कि इसमें नूतन अनुसन्धान नहीं है। यह नारा समस्त क्षेत्रों से यहाँ तक कि सरकारी अट्टालिकाओं से भी मुखरित हो रहा है। आचार्य चरक के 'अमित्रस्यापि धन्यं यशस्यं लोक्यं वचोऽभि मन्तव्यमनुविधातव्यञ्च' के उपदेश को आयुर्वेद सेवी भूले नहीं हैं और प्रत्येक अच्छी बात को वे ग्रहण करने के लिए आज भी सादर तैयार हैं। किन्तु परामर्शदाता के लिए उस विषय का ज्ञान प्रथमत: आवश्यक होता है। रज्जु का परिज्ञान कराने वाले के लिए उसके सत्य स्वरूप का परिज्ञान अत्यावश्यक है।

आयुर्वेद का पदार्थ विज्ञान विभक्त ज्ञान नहीं विशिष्ट ज्ञान है। आयुर्वेद दर्शन है। इसके द्वारा वस्तु के सत्य स्वरूप का दर्शन किया जा सकता है। सत्य कभी विकल्पात्मक नहीं होता। आयुर्वेद ने खण्ड ज्ञान पद्धति को कभी स्वीकार नहीं किया। आयुर्वेद का अनुसन्धान द्रव्य में व्याप्त रहनेवाले रस, गुण, वीर्य, विपाक एवं शक्ति के आधार से होता है। किस वस्तु में कौन-कौन रस हैं और उनके आधार से वह किन दोषों का शमन करेगी एवं किन दोषों को बढ़ायेगी यह परिज्ञान आयुर्वेद प्रदान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करता है। इसी तरह गुण आदि के द्वारा भी औषधि के वस्तुतत्व का सम्यक् ज्ञान आयुर्वेद द्वारा होता है। सजीव मानव शरीर ही इस परिज्ञान का मूल आधार होता है। प्रथमतः औषधितत्त्व परिज्ञाता निर्मित होनेवाले योग की उपादेयता तथा अनुपादेयता का परिचय उसमें पड़ने वाले द्रव्यों के द्वारा प्राप्त करता है और फिर सजीव शरीर पर उसका परीक्षण कर एक सिद्धान्त पर पहुँच जाता है। आयुर्वेद की यही अन्वेषण-पद्धति रही है और आज भी है।

प्रस्तुत पुस्तक सम्पूर्ण रूप से ऐसे नूतन अनुसन्धानों का ही प्रतिफल है। अधिकांश योग सर्वथा नवीन हैं, जिनका प्रकाशन आज तक किसी पुस्तक में नहीं हुआ है। अत्यल्प संख्यक जो प्राचीन योग हैं उनमें भी परिवर्त्तन-परिवर्द्धन से वैशिष्ट्य परिलक्षित हुआ है। परिवर्द्धन की यह प्रक्रिया अधिक अंश में परम्परा प्राप्त है। प्रस्तुत खण्ड में रस वर्ग तथा भस्म प्रकरण का संकलन हुआ है। रस वर्ग में एक सौ छप्पन योग हैं। प्रत्येक योग अपनी नूतनता लिए हुए हैं। ये योग दो श्रेणियों में विभक्त हैं। पहली में कस्तूरी, अम्बर, स्वर्ण, मुक्ता आदि का समावेश हैं। दूसरी के उपादान संस्कारित हिंगुल, हरताल, सोमल, रसकर्पूर एवं भल्लातक आदि हैं। आधुनिक समय—जब कि हर व्यक्ति अत्यल्प समय में रोग मिटाना चाहता है—में इस तरह की उच्च औषधियां ही पूर्ण सन्तोषप्रद हो सकती हैं। उल्लिखित पहला वर्ग अधिक व्ययसाध्य है। जबकि दूसरा श्रमापेक्षी है। इसके बनाने में उतने अर्थ-व्यय की आवश्यकता नहीं होती। वैद्यों की कष्टप्रद स्थिति के इस समय में ऐसे योगों का निर्माण उनके लिए बृहत् अवलम्ब देनेवाला सिद्ध होगा।

इन योगों का संकलन दो आधार पर हुआ है। पहला आधार भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों के विशिष्ट चिकित्सकों से इनकी प्राप्ति का रहा है। दूसरा अपनी चिकित्सा में समय-समय पर किये गये परीक्षणों का हुआ है। पहली श्रेणी के योग राजस्थान, पंजाब, गुजरात, उत्तर प्रदेश एवं बंगाल से प्राप्त किये गये हैं। भारत के समस्त प्रदेशों के विशिष्ट चिकित्सकों के पास परम्परा से ऐसे योग चलते आये हैं, जिनका प्रकाशन पुस्तकों में नहीं हुआ है। यदि सम्पूर्ण भारत की इस ज्ञानराशि का संकलन किया जा सके तो एक बृहत् ग्रन्थ तैयार होगा और आयुर्वेद का वह अपूर्व अनुसन्धान होगा। लेखक आबाल काल से संग्रह-शील रहा है। इसने बचपन में ही मातृकुल तथा पितृकुल में चिकित्सा में व्यवहृत होनेवाले विशिष्ट योगों के प्रति अपना मनोभाव रखा है।

लेखक ने अपने नाना स्वर्गत वैद्य पं० विलास रायजी खेड़वाल के कुछ योग इस पुस्तक में दिये हैं, जिनमें 'कालविजय रस' नामक योग पहला है। यह सर्पविष का योग है जो शीताङ्ग सन्निपात और विशूचिका की अन्तिम अवस्था में चमत्कार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पूर्ण काम करता है। वैसे सर्पविष के कुछ योग प्रकाशित साहित्य में प्राप्त होते हैं, किन्तु जिस सुविधापूर्ण विधि तथा अनुभव युक्त पद्धति से यह प्रयुक्त होता हैं वह इसकी अपनी विशेषता है। भल्लातक तथा रस कर्पूर के उनके योग जैसे ग्रन्थि वातान्तक आदि इसमें संग्रहीत हुए हैं। इन योगों की प्राप्ति लेखक को अपने ज्येष्ठ सहोदरद्वय स्वर्गत वैद्य सांवलराम जी हरीतवाल एवं स्वर्गत वैद्य शुभकरण जी हरीतवाल के माध्यम से हुई है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य योगों, जो इन अग्रजोंकी चिकित्सा में व्यवहृत होते रहे हैं—का समावेश इस पुस्तक में हुआ है। लक्ष्मणगढ़, राजस्थान के तत्कालीन सुप्रसिद्ध वैद्य स्वर्गत पं० कृष्णदत्त जी का एक योग 'दरदकल्प' नाम से इसमें है। हिसार-हरियाणा के तत्कालीन विशिष्ट विद्वान् चिकित्सक स्वर्गत वैद्य पं० दुलीचन्द जी शर्मा के दशों योग इस पुस्तक में सन्निवेशित हुए हैं, जो लेखक द्वारा अपनी चिकित्सा में समय-समय पर व्यवहृत हुए हैं। भस्म प्रकरण की कुछ अलभ्य विधियाँ लेखक को इन महानुभाव के संग्रह से ही प्राप्त हुई हैं।

लेखक के अध्ययन काल में काशी प्रवास के समय आयुर्वेद शास्त्राचार्य वैद्य पं० दुर्गादत्त जी शास्त्री की सन्निधि में संग्रहीत कुछ योगों का समावेश इस पुस्तक में हुआ है। स्वनामधन्य आचार्य स्वर्गत पं० यादवजी त्रिकमजी के काशी आगमन पर हुई गोष्ठी चर्चा में उद्धृत दो योग 'तिलक रस' तथा 'स्वर्णाय: कान्त सिन्दूरम्' का उल्लेख इस पुस्तक में हुआ है। आचार्यजी के अपने प्रकाशन में ये योग देखे नहीं जाते। काशी के अन्य विशिष्ट विद्वानों—जिनमें स्वनामधन्य पं० त्र्यम्बक शास्त्री भी हैं—के कुछ योगों का भी सन्निवेश इस पुस्तक में हुआ है। इनका संकलन वैद्य परम्परा से हुआ है।

लेखक ने अपने कलकत्ता आगमन के बाद बंगाल की आयुर्वेदीय चिकित्सा परम्परा के अध्ययन के लिए जिन महानुभावों की सन्निधि प्राप्त की उनमें स्वनाम-धन्य कविराज स्वर्गत ज्योतिर्मयजी सेन थे। कविराज जी महामहोपाध्याय स्वर्गत —कविराज द्वारका नाथ सेन महाशय के सुयोग्य शिष्यों में थे। इन्हीं महामहो-पाध्याय जी की सन्निधि में बैठकर राजस्थान के सुप्रसिद्ध चिकित्सक स्वर्गत स्वामी लक्ष्मीराम जी ने कर्माभ्यास किया था। लेखक के श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल में चिकित्सारत रहने के समय कविराज स्व० ज्योतिर्मय सेन अस्पताल में आयुर्वेदीय विभाग के अधीक्षक थे। उसके बाद भी कविराज जी का स्नेह लेखक पर बराबर बना रहा। कविराज जी के ज्येष्ठ पुत्र सुप्रसिद्ध चिकित्सक स्वर्गत कविराज हिरण्यमय सेन लेखक से पूर्ण भ्रातृत्वभाव रखते थे। अस्पताल के सेवाकाल में जिन दो अन्य महानुभावों का सहयोग लेखक को प्राप्त हुआ वे स्वर्गत कविराज प्रबोधचन्द्र जी गुप्त एवं कविराज श्री हरिवक्षजी जोशी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तीर्थत्रय रहे हैं। एक अन्य महानुभाव लेखक के पूर्ण आदर के पात्र रहे हैं, वे थे स्वर्गत वैद्य पं० कृष्णदत्तजी पाटनवाले। इनके दो योग इस पुस्तक में संकलित हैं। एक रसेश्वर रस के नाम से और दूसरा क्लैव्यारि रस नाम से है। रसेश्वर रस को वे अपने भ्राता स्वर्गीय वैद्य पं० जगन्नाथ जी का योग बतलाया करते थे।

लेखक ने उक्त अस्पताल को छोड़कर सन् १९३५ ई० में श्री दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। अब यह औषधालय दो सेवा-केन्द्रों से जनता की सेवा कर रहा है। प्रतिदिन सैकड़ों रोगी इनसे लाभ उठाते हैं। लेखक ने अपने द्वारा आविष्कृत योगों का परीक्षण औषधालय में आनेवाले रोगियों और अपने प्रतिष्ठान श्री लोकनाथ आयुर्वेद भवन में चिकित्सा करानेवाले व्यक्तियों पर किया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय कलकत्ता पर आसन्न विपत्ति को लक्ष्यकर उक्त-दातव्य औषधालय का सेवा-केन्द्र अस्थायी रूप से सुजानगढ़ में खोला गया था। प्रधान चिकित्सक होने के कारण लेखक का भी वहाँ जाना आवश्यक था। फलतः चार वर्षों तक औषधालय के साथ लेखक वहाँ रहा। उस अवधि में राजस्थान निवासी वैद्यों तथा यतिओं के सिद्धयोगों के संग्रह का अच्छा अवसर मिला। ग्रहणी मार्तण्ड रस, यशद रसायन, ज्वरसूदन आदि विशिष्ट योगों के संग्रह के मूल में लेखक का राजस्थान निवास रहा है। बीकानेर के सुयोग्य कुछ चिकित्सकों की परम्परा का संकलन उसी समय हुआ है।

लेखक ने आयुर्वेदीय चिकित्सा में क्रान्ति लाने के निमित्त श्री धत्वन्तरि परिषद एवं आयुर्विज्ञान परिषद् के मञ्च से कठिन रोगों में अन्वेषणार्थ व्याख्यानमाला चलायी थी। इसी कार्य को अग्रसर करने के लिये चरक गवेषणा पीठ से अन्वेषण प्रारम्भ किये गये। पीठ का प्रथम अनुसन्धानात्मक पुष्प 'श्वित्र और उसकी सफल चिकित्सा' प्रकाशित हो चुका है। यह द्वितीय पुष्प भी आपके करगत है। इन दोनों के प्रकाशन में भारतीय संस्कृति के परम उपासक स्वर्गीय सेठ मुरलीधर जी सराफ के सुयोग्य पुत्रद्वय श्री राधेश्याम जी सराफ एवं श्री रामावतार जी सराफ का विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है। इन दोनों ही भ्राताओं की आयुर्वेद-निष्ठा प्रशंसनीय है। ये प्रयास कहाँ तक सफल हो सके हैं, यह पाठकों की भावना में निहित है।

श्री कृष्णजन्माष्टमी
संवत् २०३१ वि०

केशवदेव शास्त्री

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय विमर्श

आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में रसचिकित्सा का विशिष्ट स्थान है। आशुकारी गुणयुक्त होने तथा अल्प माता में क्रियाकारी होने से काष्टौषधियों से इसे उच्च स्थान प्राप्त है। रस शब्द से पारद का ग्रहण होता है। रस, रसेन्द्र, पारद, सूत, शिवबीज, एवं सूतक ये पारद के पर्यायवाची शब्द हैं। पारद के योग से बननेवाला वर्ग रस वर्ग कहा जाता है। पारद विषयक तन्त्र को रस तन्त्र कहते हैं।

रस शब्द के अर्थ—

रस शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। इस शब्दका परिभाषिक अर्थ होता है आस्वादयुक्त होना। परिभाषा होती है, रस्यतेआस्वाद्यते इतिरसः'। आस्वादन के अधिष्टान पंचज्ञानेन्द्रियाँ और मन होते हैं। रसनेन्द्रिय द्वारा जिस रस का आस्वादन होता है, उसके मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त एवं कषाय ये छ भेद होते हैं। कर्णेन्द्रिय द्वारा जिस शब्द-रस का आस्वादन होता है उसके शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत, शान्त ये भेद होते हैं। नेत्रों द्वारा जिस रस का आस्वादन किया जाता है, उसके प्रीतिकर तथा अप्रीतिकर ये दो भेद होते हैं। इन्द्रियों के साथ मन का संयोग होने से ही विषय प्रवृत्ति संभव होती है। इन्द्रिय जन्य विषय आस्वाद में इन्द्रियों की प्रधानता होती है। अतीन्द्रिय विषयों का आस्वादन अन्तः करण चतुष्टय के आधार पर होता है।

रस स्वरूप संसार—

पर ब्रह्म परमात्मा स्वतः रस स्वरूप हैं। इसीलिए श्रुति का वचन है 'रसोवै सः रसं एवाऽयं लब्ध्वा आनन्दी भवति'। रस स्वरूप परमात्मा से संसार की अभिव्यक्ति होने के कारण संसार स्वतः रस स्वरूप है। रस का दूसरा नाम आनन्द है। आनन्द तृप्ति का पर्यायवाची शब्द है। जिनः पदार्थों की मानव को आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति से उसे आनन्द मिलता है अथवा उसकी अनुभूति होती है। मनुष्य जब प्यासा अथवा भूखा होता है तब उसे जल तथा अन्न की प्राप्ति होने से वह आनन्द का अनुभव करता है। इन इन्द्रिय जन्य आस्वादनों के साथ नव निर्माण का कोई सम्बन्ध नहीं होता। लेकिन उपस्थ इन्द्रिय के विषयास्वाद के साथ नवनिर्माण जुड़ा हुआ होता है। संसार के समस्त जरायुज तथा अण्डज प्राणियों की उत्पत्ति का यही मूल आधार है। इस उत्पत्ति में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आवश्यक तत्व प्रकृति पुरुषात्मक होते हैं। प्रकृति पुरुष के संयोग से ही नवनिर्माण संभव होता है। इस संसार का नियामक अपनी प्रकृति के साथ इस संसार में ओत-प्रोत है। संसार का वह निमित्त कारण के साथ उपादान कारण भी है। जिस वस्तु से जो तत्व बनता है बननेवाले तत्व की वह उपादान कारण होती है। मिट्टी घड़े का उपादान कारण है। मिट्टी के बगैर घड़े की संभावना हीं नहीं हो सकती।

प्रकृति पुरुषात्मक संसार में पारद--

संसार के समस्त तत्व प्रकृति पुरुषात्मक होते हैं। कारण का यह स्वरुप कार्य में भी प्रतिफलित होता है। समस्त प्राणि जगत् में इस तथ्य का प्रत्यक्षीकरण संभव है। स्थावरों की दो श्रेणियाँ देखी जाती हैं। एक पुरुष जाति की होती है, दूसरी स्त्री वर्गीय। उनके आकार-प्रकार में भी भेद होता है। जानकारी रखनेवाले अनायास इन्हें पहचान लेते हैं। पार्थिव अथवा खनिज वर्ग में भी इन दो तत्वों का स्वरूप स्पष्टता से प्रतिस्फुटित होता है। जिस तरह इस सृष्टि का पुरुष मूल स्तम्भ है, उसी प्रकार पारद भूगर्भीय पदार्थों का मूल आधार है। इस श्वेत तरल धातु को पारद इस लिए कहा गया है कि यह रोग तथा संसार दोनों से पार करने की क्षमता रखता है। आयुर्वेद के दोनों उद्देश्य 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमने अप्रमादः' का यह पूर्ण प्रतीक है। रोग निर्मुक्ति के लिए सेवन से रोग प्रशमन और स्वस्थ शरीर में सेवन से पूर्ण स्वस्थता प्राप्त होती है। यह पुरुष तत्वात्मक होता है और संसार के समस्त तत्वों में ओत-प्रोत है।

अभिव्यक्ति के कारण--

किसी भी व्याप्त वस्तु की अभिव्यक्ति उसकी मात्रा के अनुपात तथा अभिव्यक्ति के कारणों की क्षमता पर निर्भर करती है। अभिव्यक्ति में शीघ्रता अथवा विलम्ब के भी ये दो ही कारण होते हैं। पार्थिव द्रव्यों में प्रकृति स्वरूपात्मक पदार्थ गन्धक हुआ करता है। अलंकारिक भाषा में पारद को शिव का बीज तथा गन्धक को उमा का रज कहा गया है। पारद उन तत्वों में ही होता है जो या तो सम्पूर्ण रज तत्वात्मक हैं अथवा जिनमें रज तत्व की अधिकता हो। यहाँ यह स्पष्ट रूप में हृदयङ्गम कर लेना चाहिये कि पार्थिव तत्वों में इनकी उपस्थिति का अनुपात विभिन्न मानों में होता है। वस्तु में व्यापक तत्व का ही प्राकट्य संभव होता है। असत् से कभी सत् नहीं बन सकता। जो तत्व जिसमें हो ही नहीं उसका प्राकट्य उसमें कभी संभव नहीं हो सकता। इन दो तत्वों की व्यापकता का प्रत्यक्षीकरण विशिष्ट उपायों द्वारा संभव होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निस्वरूप पारद--

स्वर्ण की सुन्दरता का रहस्य पारद के संयोग की सापेक्षिता में छुपा हुआ है। पारद आग्नेय तत्व है और अग्नि तत्व सर्व व्यापक और स्वरूपकता सम्पादक होता है। अग्नि की परिभाषा होती है—'अंगति गच्छति सर्व व्यापकत्वं प्राप्नोतीति अग्निः'। अर्थ है जो सर्व व्यापक होने के साथ गति शील हो। अग्नि का ऊर्ध्व गमन सर्व प्रत्यक्ष है। पारद भी गतिशील पदार्थ है। जिस तरह काष्ट में व्याप्त अग्नि का प्राकट्य अग्नि के स्पर्श से होकर उसमें गतिशीलता आजाती है उसी तरह पारद के भी अग्निस्पर्श होने से उसमें भी गतिशीलता आजाती है। अग्नि की गति अपने मूल उद्गम स्थान की ओर होती है। वायुओं में घर्षण से अग्नि की उत्पत्ति होने पर भी उन आग्नेय वायुओं का मूल स्थान आकाश हुआ करता है। आकाश के अभाव में वायु के ठहरने की कोई जगह नहीं हो सकती। संघर्षण का तो प्रश्न ही नहीं उठ सकता। जिस तरह अग्नि अपने उद्गम स्थान की तरफ बढ़ती है, आग्नेय तत्व भी अग्नि के उद्गम स्थान की ओर बढ़ते हैं।

पुरुषतत्व तथा रजतत्व का संयोग--

पुरुषतत्व पारद के साथ जब रजतत्व गन्धक का संयोग होता है तो उसका प्रारम्भिक रूप कृष्ण होता है। उसे यदि अग्नि पर चढ़ाकर आंच दी जाय तो गन्धक का असात्म्य अंश निकल जाता है और जितने अंश को पारद ग्रहण कर लेता है अथवा यों कहिये कि रज तत्व गन्धक अपने जितने अंश में पुरुषतत्व पारद को ग्रहण कर लेता है उससे एक नव निर्माण संभव होता है, जिसे रससिन्दूर कहते हैं। रसपर्पटी में गन्धक निकलता नहीं है अतः उससे बननेवाली पर्पटी कृष्ण रंग की होती है। पारद की प्रधानता वाला रससिन्दूर अपनी सूक्ष्म गति के कारण शरीरस्थ स्नायु मण्डलों पर शीघ्र प्रभावशाली सिद्ध होता है। रज तत्व पार्थिव हुआ करता है। अपने वजन के कारण यह निम्नस्थलों पर अपनी क्रिया अधिक कर पाता है। संग्रहणी आदि आन्त्रिक बीमारियों पर पर्पटी की सफलता का यही रहस्य है। आधुनिक औषधि परीक्षण केन्द्रों में रससिन्दूर तथा पर्पटी का परीक्षण कराने पर दोनों में एक ही तरह के तत्वों की सूचना प्राप्त होगी। दोनों के गुणों में यह महदन्तर क्यों है इसका कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता।

प्रकृति में स्वर्ण-निर्माण---

इस तरह यह भी प्रकट रहस्य है कि यदि पारद के अणुओं का रंजन संभव हो तो उनसे निश्चित रूप से स्वर्ण संभव हो जाता है। भूगर्भ से प्राप्त होनेवाला स्वर्ण भी इसी क्रिया का प्रतिफल है। यह भी एक बड़ा रहस्य है कि गन्धक के साथ पारद का योग होकर लम्बे समय तक पड़ा रहने से पारद की चञ्चलता और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊर्ध्वगति दोनों का अवरोध हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि पारद तथा गन्धक की कज्जली करके उसे बीस-तीस वर्षों तक पड़ा रहने दिया जाय तो उससे रस सिन्दूर नहीं बन सकेगा। जो भी थोड़ा पारद ऊपर लगेगा वह इतना ही होगा जितना कि गन्धक में सात्म्य न हुआ होगा। जो ऊपर लगेगा उसमें स्वाभाविक रक्तिमा का अभाव होगा। भूगर्भीय अग्नि से पिघलकर गन्धक जब पारद के साथ मेल कर लेता है और उसी अवस्था में वह लाखों वर्षों तक पड़ा रहता है तब गन्धक का रंजक रंग पारद पर अपना स्थायी असर कर देता है और वह गर्भ की जठराग्नि से पक्व होता हुआ स्वर्ण का स्वरूप धारण कर लेता है।

धातुओं में पुंबीज स्वर्ण--

पारद के अणु अधिक होने से स्वर्ण भी धातुओं में पुंबीज माना जाता है। इसी तरह चाँदी को स्त्री-बीज की संज्ञा दी जाती है। प्रकृति के रज गन्धक का अंश अधिक रहने पर भी उसका रंजक रंग इसमें नहीं होता। पारद के क्रमशः कम होते जाने से धातुओं में उत्तमता का ह्रास क्रमिक रूप से होता जाता है। यदि स्वर्ण की उत्तमता अथवा शक्ति २०० अंक की मानी जाए तो चाँदी की १००, वंग की ५०, नाग की ४०, लोहे की २० और यशद की १० अंक मानी जायगी। इन्हें क्रमशः रवि, सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति एवं शनि कहा जाता है। प्रकृति जगत् के ये सप्तमण्डल तथा सप्त समुद्र हैं। वर्त्तमान समय में धातुओं की संख्या लगभग ९० मानी जाती है और उनके परमाणुओं की स्वतन्त्र सत्ता मानी जाती है। किन्तु भारतीय दार्शनिकों की मान्यता में यह सृष्टि पंचीकृत तत्वों से बनी है। अतः इसके प्रत्येक पदार्थ में अन्य पदार्थ का समावेश स्थूल, लघु या अल्प-बृहत् रूप में अवश्य रहता है। इसी तरह इन नूतन धातुओं का मूल भी उपरोक्त नवधातु मण्डल को माने जाने में कोई असंगति नहीं होगी।

पारद स्पर्श से धातु परिवर्त्तन--

पारद का अन्तः स्पर्श होने से धातुओं का रूप बदल जाता है। यह क्रिया भूगर्भ तथा बाहर दोनों जगहों में समान रूप से होती है। इसीलिए कहा गया है--

रसी भवन्ति लोहानि देहा अपि सुसेवनात्।
रसेन्द्रस्तेन विख्यातो द्रवत्वाच्च रसः स्मृतः॥

जिन भूगर्भीय द्रव्यों तथा उद्भिद् औषधियों में गन्धकांश होगा उनसे पारद का अवरोध होता है और उसकी चञ्चलता नष्ट होती है। इसी तरह पारद गन्धक तथा सोमल के अन्य योगिकों की चञ्चलता उनके प्रत्पनीक रसवर्ग अथवा औषधि वर्ग से नष्ट होती है। भल्लातक से हिंगुल का अवरोध होता है। पारद गन्धक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के योगिकों को बनाने में लगनेवाला औषधि वर्ग एक तरफ जहाँ वातादि दोषों के शामक के रूप में प्रयुक्त होता है, अन्य दृष्टिकोण में वह उस धातु का रूपान्तर-कारी भी होता है। यही कारण है कि अभ्रक आदि की भस्मों में बहुसंख्यक औषधियों के स्वरस की पुट देने का विधान है। 'संस्कारोहि गुणानाराधान मुच्यते' के सिद्धान्त के अनुकूल उन भस्मों में इस विधि से नूतन गुणों का आविर्भाव होता है। और 'पुटादेव गुणोदयः' का रहस्य परिस्फुटित होता है। आयुर्वेद की यह पद्धति अन्य चिकित्सा-विज्ञानों में आज भी देखने में नहीं आती। एक ही मूल तत्व की भस्म विभिन्न प्रकार के गुणोंवाली आयुर्वेद की प्रक्रिया से ही बनायी जा सकती है। इतना सूक्ष्म विवेचन स्वल्प समय में और अनायास प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए सुदीर्घ समय की साधना परमावश्यक है। आज के सुसभ्य देश जब चाँदी को श्वेत जहर मानते थे उसके बहुत पहिले से उसका आमयिक प्रयोग भारत में आम तौर पर प्रचलित हो चुका था।

अष्टाङ्ग आयुर्वेद—

नूतन चिकित्सा विज्ञान में औषधि चिकित्सा तथा शल्यचिकित्सा का जो श्रेणि-भेद प्रचलित है, वह भी मूलतः आयुर्वेद की ही देन है। प्रारम्भ में एक लाख श्लोकवाली 'ब्रह्मसंहिता' के नाम से आयुर्वेद प्रचलित था। इसके प्रवर्त्तक स्वयं ब्रह्मा माने गये हैं। उन्होंने आनेवाली पीढ़ियों के मनुष्यों की धारणा शक्ति दुर्बलता का अनुभव कर उसे आठ अंगों में विभक्त कर दिया। ये आठ अङ्ग थे शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायन-तन्त्र एवं वाजीकरण तन्त्र। इन आठों में प्रथम के दो शस्त्र चिकित्सा प्रधान हैं, अवशिष्ट औषधि चिकित्सा प्रधान।

रस स्वरूप औषधि—

'ओष' शब्द रस का वाचक है। रस को धारण करनेवाली औषधि कही जाती है। रस शब्द किन-किन का वाचक होता है यह बतलाते हुए कहा गया है—

रसो जलं रसो हर्षो रस शृङ्गार पूर्वकः।
स्वादादिषु च निर्यासे पारदेऽपि रसो विषे॥

एतावता यह स्पष्ट हुआ कि रस की विद्यमानता ही औषधि की परिचायक है। पृथ्वी का भेदन करनेवाले उद्भिदों में षड् रस की विद्यमानता होती है, अतः उनको औषधि कहा जाता है। इसी तरह भूगर्भीय द्रव्यों में रस-पारद की विद्यमानता होने से उन्हें भी औषधि श्रेणी का माना जाता है। जिस तरह उद्भिदों में षड् रसों में से किसी को या किन्हीं की व्यापकता अनिवार्य है उसी तरह भूगर्भीय द्रव्यों में रस-पारद का अस्तित्व अनिवार्य है। अनुपान की न्यूनाधिक्यता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अवश्यम्भावी है। प्रकृति का यह नियम है कि पैदा होनेवाला तत्व अपनी योनि के गुणों के अनुकूल ही होता है। भूगर्भ अग्नि तत्व से परिव्याप्त होता है। उससे पैदा होनेवाला पारद भी आग्नेय होता है। पृथ्वी की जितनी गहराई पर जो तत्व पैदा होता है उस पर उसी अनुपात से आग्नेय स्वरूप का सिद्धान्त लागू होता है। पारद पृथ्वी की गहरी गोद से निकलता है अतः वह आग्नेय स्वरूपता के अति सन्निकट होता है।

संहिताओं की पद्धति--

ऊपर कहा जा चुका है कि आयुर्वेद के आठ अंगों में दो शल्य कर्म प्रधान हैं, बाकी के औषधि चिकित्सा प्रधान। इन दोनों की दो सम्प्रदाय आयुर्वेद में चली आई हैं। पहली भारद्वाज तथा पुनर्वसु आत्रेयकी है और दूसरी धन्वन्तरि तथा सुश्रुत की है। इन दोनों ही सम्प्रदायों में अपने अपने विषयों का प्रतिपादन प्रमुखता से किया गया है। दूसरी चिकित्सा के सिद्धान्तों का उल्लेख संक्षेपतः किया गया है और 'पराधिकारेषु न विस्तरोक्तिः' के सिद्धान्त को माना गया है। भारद्वाज सम्प्रदाय का प्रधान ग्रन्थ अग्निवेश तन्त्र है, जो वर्त्तमान में आचार्य चरक द्वारा प्रतिसंस्कृत और आचार्य दृढ़बल द्वारा परिपूरित है। धन्वन्तरि सम्प्रदाय का प्रधानग्रन्थ सुश्रुत संहिता है जो आचार्य सुश्रुत द्वारा विरचित और नागार्जुन द्वारा प्रतिसंस्कृत है। आचार्य डल्हण, जो सुश्रुत के प्रसिद्ध टीकाकार है, ने 'प्रतिसंस्कर्त्तापीह नागार्जुन एव' ऐसा कहकर इस सिद्धान्त को स्वीकृत किया है।

चरक और रस-चिकित्सा--

चरक प्रतिसंस्कृत अग्निवेश तन्त्र में उद्‌भिद् औषधियों द्वारा चिकित्सा करने की प्रधानता परिलक्षित है। भूगर्भीय औषधियों का व्यवहार अनिवार्य आवश्यकता पर ही उनके द्वारा स्वीकृत हुआ है। कुष्ठ जैसी कठिन व्याधि में उन्होंने पारद प्रयोग की स्वीकृति दी है। इसी तरह लौह आदि की भी। कुछ लोग इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उस समय तक पारद तथा धातु चिकित्सा सार्वजनिक रूप से प्रचलित नहीं हुई थी। विषय की गहराई में उतरने से यह स्पष्ट होगा कि इस सिद्धान्त का निर्माण भ्रान्तिपूर्ण तथ्यों पर किया गया है। महामहोपाध्याय स्वर्गत कविराज गणनाथ सेन ने अपने सिद्धान्त को परिस्फुट करते हुए लिखा है—आयुर्वेद के रसायन तन्त्र के आविष्कारक सिद्ध सम्प्रदाय के लोग या रस वैद्य थे। इन लोगों ने कई सौ वर्ष यह पहले पारदादि धातु घटित चिकित्सा का प्रवर्त्तन किया था। आर्यकाल में लौह और शिलाजतु प्रभृति धातुओं का थोड़ा-बहुत व्यवहार अवश्य था किन्तु पारदादि का आभ्यन्तर प्रयोग नहीं था। रसवैद्य सम्प्रदाय ने पहले पहल पारद के सर्व रोग निवारण के गुण का आविष्कार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किया। यहाँ तक ही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि इससे चतुर्वर्ग की प्राप्ति भी संभव है। माधवाचार्य ने इस दर्शन को सर्वदर्शन संग्रह में स्थान दिया है आदि-आदि।

कविराज सेनजी की तरह कुछ अन्य लोग भी हैं जो इस सिद्धान्त के अनुयायी हैं। यहाँ यह विचारणीय तथ्य है कि पारदीय चिकित्सा को चरक संहिता में सार्वजनिक स्थान नहीं दिया गया। इसका कारण प्रचलन का अभाव है अथवा अपना कोई निजी सिद्धान्त। मुझे लगता है, इस तथ्य की तरफ दृष्टिपात करने से विषय स्पष्टता के साथ सामने आ जायगा।

चरकीय चिकित्सा--

आचार्य चरक उद्भिद् जातीय औषधियों द्वारा ही चिकित्सा किये जाने के सिद्धान्त को माननेवाले थे। उनके सिद्धान्त से औषधि का कार्य रोगग्रस्त प्रकृति को उठाने में केवल सहारा देना माना गया है। उनके मत से अत्यन्त आवश्यक स्थिति में ही औषधि प्रयोग वाञ्छनीय होता है। जिस जगह औषधि प्रयोग की आवश्यकता नहीं वहाँ प्रकृति को अपने आप उठने देना चाहिये। यह उनकी मान्यता थी। यही कारण है कि उन्होंने ज्वर में सात दिन तक औषधि प्रयोग को निषिद्ध बतलाया है। यहाँ तक कि कषाय का भी निषेध कर दिया है। इसका स्पष्ट आशय यही है कि औषधियों का बहुत ही हल्का उपयोग करने का उनका सिद्धान्त था। इसी सिद्धान्त के कारण उन्होंने भूगर्भीय औषधियों को अपनी संहिता में अधिक स्थान नहीं दिया।

चरक संहिताके निर्माता--

महर्षि पतञ्जलि ही चरक संहिता के निर्माता थे। इसी मत का समादर प्राचीन मनीषियों ने भी किया है। योगवार्त्तिक के प्रारम्भ में पतञ्जलि को प्रणाम करते हुए विज्ञान भिक्षु लिखते हैं--

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां मलं शरीरस्यतु वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिराननतोऽस्मि।

पतञ्जलि चरितकार रामभद्र दीक्षित कहते हैं--

सूत्राणियोगशास्त्रे वैधकशास्त्रे च संहितामतुलाम्।
कृत्वापतञ्जलिः मुनिः प्रचारयासजगदिदं त्रातुम्॥

श्लोक के संहिता मतुलाम् शब्द की जगह 'वार्तिकानि ततः शब्द भी कहीं-कहीं पाया जाता है। आशय में विशेष अन्तर नहीं है। आचार्य चक्रपाणि ने लिखा है--

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पातञ्जल महाभाष्य चरक प्रतिसंस्कृतैः।
मनोवाक्काय दोषाणां हर्तेऽहिपतयेनमः।।

चरक संहिता के प्रसिद्ध टीकाकार स्वामी कुमार ने चरकपञ्जिका टीका में कहा है—

वाचो व्याकरणेन शुद्धिमकरोद् योगेन चित्तस्य यः।
तं वन्दे चरकं हिताय जगतां व्याख्यात वैद्यागमम्।।

महामति भावमिश्र ने अपने भाव प्रकाश में लिखा है—

यतश्चर इवायातो न ज्ञातः केनचिद् यतः।
तस्माच्चरक नाम्नाऽसौ विख्यातः क्षितिमण्डले।।
सभाति चरकाचार्यो देवाचार्यो यथादिवि।
सहस्र वदनस्यांशो येनध्वंशोरुजांकृतः।।
आत्रेयस्य मुनेः शिष्या अग्निवेशादयोभवन्।
मुनयो वहवहुचैव कृतं तन्त्रं स्वकंस्वकम्।।
तेषा तन्त्राणि संस्कृत्य समाहृत्य विपश्चिता।
चरकेणात्मनो नाम्ना ग्रन्थोऽयं चरकः कृतः।।

नागेश भट्ट ने व्याकरण मञ्जूषा में आप्त लक्षण प्रसङ्ग में कहा है—रजस्तमोभ्यां-निर्मुक्ताः इति चरके पतञ्जलिः।

पतञ्जलि की ऐतिहासिकता—

इन वचनों से यह स्पष्ट प्रतिभासित होता है कि महर्षि पतञ्जलि ही चरक थे और उन्होंने व्याकरण महाभाष्य, योगसूत्र तथा चरक संहिता का संकलन किया था। इतिहासकारों के मत से महर्षि पतञ्जलि पुष्यमित्र के समकालीन थे और उन्होंने उनसे अश्वमेध-यज्ञ भी करवाया था। पुष्यमित्र ने अपने स्वामी बृहद्रथ मौर्यका वधकर स्वयं शासनभार ग्रहण किया था। कहा जाता है कि बृहद्रथ स्वैराचारी शासक हो गया था। उसके शासन में प्रजा का उत्पीड़न बढ़ गया था। कुछ लोगों की कल्पना या मान्यता है कि कल्की अवतार का आधार यही पुष्यमित्र रहा है। किन्तु पूर्ण सफलता प्राप्त न होने से इसे भविष्य की कल्पना के साथ जोड़ दिया गया। अस्तु, यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि का समय मौर्यकाल के अन्तिम समय का ठहरता है। एतावता यह प्रतिपादित होता है कि महर्षि पतञ्जलि प्रागैतिहासिक नहीं हैं।

इनके पूर्व भी रसशास्त्र का प्रचलन—

इस समय के अनेक शताब्दी पूर्व से भारत में ज्ञान-विज्ञान का पूर्ण विकाश हो गया था जिनमें रस चिकित्सा भी एक थी। स्वयं महर्षि पतञ्जलि रसायन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तन्त्र के बृहत् ग्रन्थ पातञ्जल तन्त्र के प्रणेता माने जाते हैं। रस चिकित्सा में देवताओं की कृति के रूप में बहुत से लोगों का प्रचलन है। विष्णु द्वारा प्रवर्त्तित नित्योदर रस, सर्वाङ्ग सुन्दर रस एवं महेश्वर कृत चिन्तामणि रस, वसन्तलितक रस एवं पूर्णचन्द्र रस, भास्कर कृत उदर्क रस, अश्विनी कुमार ग्रथित अयः पति रस, मार्त्तण्ड रस, इन्द्रकृत सर्वतोभद्र रस आदि-आदि।

चरक सम्बन्धी दूसरा मत—

चरक के बारे में दूसरा मत यह है कि वे महाराज कनिष्क की राजसभा को शोभित करनेवाले राजवैद्य थे। इन्होंने ही अग्निवेश तन्त्र का प्रतिसंस्कार किया था। इस मत का प्रतिपादन चीन देशीय बौद्ध ग्रन्थ त्रिपिटक के आधार पर पाश्चात्य ऐतिहासिक डा० सिल्वरलेमि ने किया है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेदीय भेलसंहिता में जिस नग्नजित् राजा का उल्लेख मिलता है कुछ लोगों का मत है कि वह कनिष्क का ही है।

कनिष्क और उसका समय—

तुर्की खानाबदोश जाति युह्ची के पाँच शाखाओं में कुएई-युओंग—कुषाण—की एक शाखा थी। इसने काबुल घाटी के ग्रीकों का राज्य जीत लिया था। इस जाति के राजा ओमो कडफाइसिस ने सिन्धुनद के पूर्व के भारतीय प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था। विजित भारतीय स्थलों पर वह अपने प्रतिनिधि के द्वारा शासन करता था। इस राजा के सिक्कों पर उसे माहेश्वर विरुद से विभूषित किया गया है। उन सिक्कों पर शिव तथा नन्दी की मूर्त्ति उत्खचित हुई है। इस परम्परा में ही महाराजा कनिष्क हुआ है। इसके राज्यारोहण के बारे में कई मत सामने आते हैं। ऐतिहासिक प्लीट ने इस समय को ५८ ईसवी पूर्व माना है। डा० आर० सी० मजूमदार ने २४८ ईसवी, आर० जी० भण्डारकर ने २७८ ईसवी और डा० रमाशंकर त्रिपाठी ने ७८ ईसवी अथवा १२५ ईसवी बतलाया है। कनिष्क ने काश्मीर को जीत कर कुषाण राज्य में मिला लिया था। उसने चीन के साथ दो बार युद्ध किये। पहिले युद्ध में वह पराजित हुआ और स्वर्ण देने की शर्त्त पर सन्धि की। दूसरी बार के युद्ध में वह विजयी हुआ और उसने जमानत पर चीन के एक सामन्त राज्य का अधिग्रहण किया। कनिष्क के शासन काल के लेख पेशावर, रावलपिण्डी, बहावलपुर, जैदा, मथुरा, श्रावस्ती, कौशाम्बी एवं सारनाथ में पाये गये हैं। कनिष्क द्वारा शासित भारतीय प्रान्तों में पंजाब, कश्मीर, सिन्ध, संयुक्त प्रान्त का हिस्सा तथा कुछ दक्षिणवर्ती भूमि थी। उसकी राजधानी पुरुषपुर—पेशावर थी। यह बौद्ध मतावलम्बी बन गया था। किन्तु हिन्दू देवी देवताओं के प्रति उसका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आदर कम नहीं था। उसके सिक्कों पर ग्रीक अक्षरों में खुदे देवताओं के नामों से यह स्पष्ट प्रतिपादित होता है। इस उद्धरण से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि महाराजा कनिष्क का समय ५८ ईसवी पूर्व से २७८ ईसवी तक माना जाता है। अब मैं पुष्यमित्र तथा पतञ्जलि के ऐतिहासिक तथ्यों का विहंगावलोकन पुनः कर एक निष्कर्ष निकालने की कोशिश करूंगा।

पुष्यमित्र और उसका समय--

मौर्यवंश के अन्तिम राजा बृहद्रथ शासन में अयोग्य तथा प्रज्ञा दुर्बल था। उसको उसके सेनापति पुष्यमित्र ने सेना की परेड् दिखाने के बहाने खुले स्थान पर लाकर मार डाला। यह घटना १८४ ईसवी पूर्व की मानी जाती है। हर्षचरित में आया है—'प्रज्ञादुर्बलं च बलदर्शन व्ययदेशादशेष सैन्यःसेनानी मौर्यम् बृहद्रथं पिपेष पुष्यमित्रः स्वामिनम्।' पुष्यमित्र के राज्याधिग्रहण के बाद कुछ तो आन्तरिक विद्रोह हुआ और कुछ यवनों के आक्रमणों ने अशान्ति पैदा की। पुष्यमित्र के समकालीन पतञ्जलि ने अपने वैयाकरण महाभाष्य में व्याकरण के प्रयोग देते हुए कहा है--अरुणद् यवनः साकेतं, अरुणद् यवनो मध्यमिकां आदि। अनद्यतन भूतक्रिया के उदाहरणों में पतञ्जलि ने इनका प्रयोग दिया है। फिर पतञ्जलि ने अपूर्ण वर्त्तमान का उदाहरण देते हुए कहा है, 'इह पुष्यमित्रं याजयामः। अयोध्या से प्राप्त शिलालेख से भी पुष्यमित्र द्वारा यज्ञ करने का वृत्त प्राप्त होता है। छत्तीस वर्ष राज्य करने के बाद लगभग १४८ई० पूर्व पुष्यमित्र का निधन हुआ था। इस शुङ्ग कुल में पैदा हुए १० राजाओं ने पुष्यमित्र की गद्दी पर शासन किया था।

पुष्यमित्र द्वारा पतञ्जलि का समादर--

इस तरह स्पष्ट है कि व्याकरण महाभाष्यकार पतञ्जलि पुष्यमित्र द्वारा समादृत व्यक्ति थे। इन महानुभाव के लिए गोनर्दीय शब्द आता है। अर्थात् गोनर्द देश में पैदा होने वाले। गोनर्द की व्युत्पत्ति होती है, गावोनर्दन्ति यस्मिन् देशे असौ गोनर्दीयोदेशः। अर्थ है जिस देश में गायें गम्भीर नाद करती हों अर्थात् सांडों की तरह आवाज करती हों वह गोनर्दीय देश है। निश्चित ही यह शब्द उत्तर भारत पंजाब आदि के लिए है। महर्षि पतञ्जलि ने इस भाग को ही अपने जन्म से धन्य किया था इसमें सन्देह का अवकाश नहीं है। उस समय में कश्मीर और तक्षशिला प्रदेश विद्याओं के उत्तर भारतीय प्रधान केन्द्र माने जाते थे। पुष्यमित्र प्रकरण बतलाता है कि गोनर्दीय होते हुए भी पतञ्जलि का समादर उसके यहाँ था।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्यमित्र और कनिष्क समकालीन--

महाराजा कनिष्क का समय ५८ ईसवी पूर्व से २४८ ईसवी पूर्व तक माना जाता है। अब विचारणीय तथ्य यह है कि पुष्यमित्र तथा कनिष्क का समय जब प्रायः एक ही है तब पतञ्जलि जैसे महान् विद्वान् का समादर इन दोनों ही भारतीय राजाओं द्वारा किया जाना नितान्त संभव है। पेशावर, पंजाब आदि प्रदेश उनकी जन्म तथा कर्म भूमि रहे हैं और विहार सहित अन्य प्रदेश उनकी यशोभूमि। तथ्य तो यह है कि पूर्वी भारत का प्रधान शासक पुष्यमित्र था और उत्तरी भारत का कनिष्क। इन दोनों के ही यहाँ समानरूप से महर्षि पतञ्जलिका समादर था।

महर्षि द्वारा ग्रन्थ रचना--

इन महर्षि के द्वारा ही योग दर्शन, व्याकरण महाभाष्य और चरक संहिता की रचना की गई थी। इन तीनों ही ग्रन्थों में अद्भुत भाषासाम्य प्राप्त है। योगदर्शन तथा चरक संहिता के कुछ स्थल विषय साम्य से अति निकट आ जाते कतिधा पुरुषीय अध्याय में 'चतुर्विंशतिरित्येष राशिपुरुष संज्ञकः' इस सांख्यमत का उपक्रम करके आचार्य चरक योग को ही प्रधान मोक्षद्वार प्रतिपादित करते हुए कहते हैं--

योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्।
मोक्षेनिर्वृत्तिर्निशेषाः योगो मोक्ष प्रवर्त्तकः।। (च० शा० अ० १)

इस तरह स्पष्ट है कि गोनर्दीय महर्षि पतञ्जलि ही चरक संहिता के प्रतिसंस्कर्ता थे और इनका आविर्भाव बौद्ध धर्म के प्रचलन के काफी समय बाद हुआ था। इनके विशिष्ट आश्रयदाता कनिष्क बौद्ध थे ही। पुष्यमित्र के राज्याधीन भूभाग में बौद्ध धर्म का विस्तृत प्रभाव था।

सुश्रुत प्रतिसंस्कर्ता--नागार्ज्जुन--

सुश्रुत संहिता के समादृत विशिष्ट टीकाकार आचार्य डल्हण संहिता के प्रतिसंस्कार को स्वीकृत करते हुए कहते हैं--'यत्र यत्र परोक्षे नियोगस्तत्र तत्रैव प्रतिसंस्कर्तृ सूत्रं ज्ञातव्यं प्रतिसंस्कर्तापीह नागार्जुन एव'। ये नागार्जुन बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक, भारत तथा विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रचारक और महान् रासायनिक थे। बौद्ध युग में हुए रस शास्त्र अन्वेषणों के ये प्रधान आचार्य थे। इन्होंने लोहशास्त्र, रसरत्नाकर, कक्षपुट तन्त्र, आरोग्य-मञ्जरी, योगसार आदि पुस्तकों का प्रणयन किया था। इनकी पुस्तकों के से श्री कण्ठदत्त, डल्हण, विजय रक्षित एवं शिवदास सेन आदि आयुर्वेदीय साहित्य-कारों ने उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। नागार्जुन ने अपने पूर्वकालीन जिन आयुर्वेदीय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

साहित्यकारों का समुल्लेख अपनी पुस्तकों में स्थान स्थान पर किया है, वे हैं: भवानी सुत, सोम, चर्पटी, धन्वन्तरि, गोविन्द, काक चण्डीश्वर आदि आदि। नागार्ज्जुन द्वारा आविष्कृत औषधियों में नागार्ज्जुन वटी, नागार्ज्जुन योग, विश्वेश्वर रस, अभ्र वटिका, रसाभ्र वटी, नागार्ज्जुनाभ्र, बृहत् पानीयभक्त वटिका, मूलिका बन्धन, मृतसंजीवनी गुटिका, सिद्ध रस, लघुसिद्धाभ्रक आदि हैं। इन्होंने पारद के अष्टादश संस्कारों का प्रवर्तन किया था और पारद द्वारा अन्य धातुओं का ग्रास कराने की विधि का आविष्कार भी किया था। वे पूर्ण सफल रसायनिक थे और लोह सिद्धि विधान में पूर्ण पारङ्गत थे।

विचारणीय तथ्य--

अब विचारणीय तथ्य यह प्रस्तुत होता है कि चरक संहिता तथा सुश्रुत संहिता के प्रतिसंस्कारक ऐसे समय के हैं जब रसशास्त्र का प्रचलन पूर्ण रूप से हो चुका था, तब उन्होंने इस पद्धति का विस्तृत विवेचन तथा योगों का समावेश अपनो संहिताओं में क्यों नहीं किया। जबकि प्रति संस्कर्ता का स्वरूप बतलाते हुए कहा गया है—

विस्तारयति लेशोक्तं संक्षिपत्यति विस्तरम्।
संस्कर्ता कुरुतेतन्त्रं पुराणञ्च पुनर्नवम्॥

इस प्रश्न का सीधा और सही उत्तर यही है कि मूल सिद्धान्त का अवलम्बन ही इसका प्रधान कारण है। इन दोनों संहितओं में काय चिकित्सा की प्रधान-संहिता चरकसंहिता है और उसमें काष्ठौषधि चिकित्सा को भी आवश्यकता पर ही उपयोग का सिद्धान्त गृहीत हुआ चला आया था। नागार्ज्जुन तो स्वतः सिद्ध वैद्य थे उन्होंने भी रस चिकित्सा का प्रधानतया समावेश सुश्रुत संहिता में नहीं किया। जो लोग यह कहते हैं कि इन संहिताओं के समय में रस शास्त्र का प्रचलन नहीं हुआ था और इसका आविष्कार सिद्ध सम्प्रदाय द्वारा बाद में हुआ यह मत असत्य तथा भ्रान्त सिद्धान्तों पर आधारित है। वस्तुतः रस-शास्त्र का प्रचलन इससे बहुत पहले के समय से चला आया है। इन संहिता ग्रन्थों में इसका बहुलता से उल्लेख 'पराधिकारे न विस्तरोक्ति' के सिद्धान्त की रक्षा के लिए नहीं किया गया। यह अवश्य है कि रस चिकित्सा के प्रचार में सिद्ध चिकित्सकों तथा नाथ सम्प्रदाय का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

एक और भ्रम—

कुछ लोग सिद्ध चिकित्सकों तथा नाथ सम्प्रदाय को एक ही मानते हैं और दोनों शब्दों को पर्यायवाची। यह भी भ्रमपूर्ण सिद्धान्त है। सिद्ध चिकित्सक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तथा रससिद्ध ये पृथक् पृथक् दो शब्द हैं जिन का अर्थ भी अलग अलग है। सिद्ध चिकित्सक वे कहे गये हैं जो पारद घटित औषधियों से चिकित्सा करते आये हैं और चिकित्सा में सिद्ध हो चुके हैं। यह शब्द भारत के दक्षिणाञ्चल में अधिक प्रचलित है। वहां के आयुर्वेदीय चिकित्सक अधिकता से अपने को सिद्ध चिकित्सक ही कहते हैं और रस चिकित्सा के साथ अपूर्ण पंचकर्म चिकित्सा करते हैं। यहां यह भी ध्यान देने का तथ्य है कि पारद शिव वीर्य माना जाता है और पारद चिकित्सा के प्रवर्त्तक स्वयं महादेव माने जाते हैं। रावण भगवान् का प्रिय शिष्य रहा है। रावण पारद विद्या का विद्वान था। इसने अर्क निर्माण-विधि, पारद का ऊर्ध्वपातन, तिर्यक पातन, दोलायन्त्र एवं गर्भ यन्त्र विधि का निर्माण किया था। संभव है कि जिस उत्तर भारत में काष्टौषधि चिकित्सा की प्रमुखता चली आई थी, उसीं तरह दक्षिणाञ्चल में पारद चिकित्सा की प्रधानता चली आई हो और वहां के चिकित्सक आज भी उसी परम्परा से अपने को सिद्ध चिकित्सक कहते हों। रस सिद्धों के लक्षण बतलाते हुए आचार्य गोविन्द भगवतपाद ने कहा है—

ये चात्यक्तशरीरा हरगौरी सृष्टिजां तनुं प्राप्ताः।
मुक्तास्ते रससिद्धाः मंत्रगणः किंकरी येषाम्। रसहृदय १।७।

इस स्थिति को प्राप्त साधक ही रस सिद्ध कहे गये हैं। यह स्थिति बद्ध पारद द्वारा संभव होती है। कहा गया है—'मूर्छित्वा हरतिरुजं बन्धनमनुभूय मुक्तिदो भवति'। पारद की यह बद्धता पार्वती बीज अभ्रक के अन्तर्मिलन से संभव होती है। उक्ति है—

अभ्रकस्तववीर्यंतु ममबीजंतु पारदः।
अनयोर्मेलनंदेवि मृत्युदारिद्र्य नाशनम्।।

अभ्र का यह अन्तर्मिलन उसकी द्रुति के द्वारा ही संभव होता है। रसार्णवकार की उक्ति है—

अभ्रकादीनि लोहानि द्रवन्ति ह्यविचारतः।
तैर्द्रुतैः स्पर्श मात्रेण क्षणात् बध्येत् सूतकः।।

पारद की यह बन्धन-प्रक्रिया देह सिद्धि तथा लोह सिद्धि का मूल आधार है। आयुर्वेद के इन रससिद्ध आचार्यों ने पारद के अष्टादश संस्कारों में अन्तर्द्रुति बाह्यद्रुति, जारणा, चारणा, ग्रास, सारण का जो उल्लेख किया है वह पारद के इस महनीय गुण को प्रत्येक आयुर्वेदज्ञ तक पहुँचाने के लिए किया है। किन्तु अत्यन्त खेद है कि ये प्रक्रियायें आयुर्वेदज्ञों की दृष्टि से ओझल हो गईं। उन्होंने कह दिया—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रुतयो नैव निर्दिष्टा शास्त्रेदृष्टा अपि दृढ़म्।
विना शम्भोर्प्रसादेन न सिध्यन्ति कदाचन ।।

यह सही है कि निराशा का यह स्वर आयुर्वेद सार्वजनीन स्वर नहीं है, लेखक की अपनी दुर्बलता है। रसेन्द्र चिन्तामणिकार साधिकार कहते हैं—'अध्यापयन्ति यदि दर्शयतुं क्षमन्ते सूतेन्द्र कर्म गुरवो गुरवस्त एव'। इस तरह के उद्घोष करने वाले अन्य आचार्य भी हुए हैं। संभवतः इन प्रक्रियाओं को जानने वाला कोई व्यक्ति भारत में आज भी विद्यमान होगा। किन्तु बड़े खेद की बात है कि स्वतन्त्र भारत में भी आयुर्वेद के इस महान् वरदान पर शासकों की दृष्टि सर्वथा शून्यता युक्त है।

रसेश्वर दर्शन—

नाथ सम्प्रदाय की अन्य महत्वपूर्ण देन है रसेश्वर दर्शन। माधवाचार्य कृत सर्वदर्शन संग्रह में इस मत को भी स्थान प्राप्त हुआ है। इसके अनुसार हठयोग का प्रधान आधार प्राणायाम है। प्राण, मन, और विन्दु इन तत्वों में से एक की विजय से भी हठयोग की सिद्धि होती है। विन्दु का अर्थ शुक्र से है, पारद शिव शुक्र है। शुक्र की ऊर्ध्व गति से मन तथा प्राण की चञ्चलता नष्ट हो जाती है। स्त्री के रज के साथ अपने शुक्र को ऊर्ध्व में खींच लेने से शरीर स्थिरता प्राप्त होती है। इसे हठ योगियों ने वज्रोलिका मुद्रा कहा है। इसका भौतिक रूप है शिव बीज पारद तथा पार्वती बीज अभ्रक का संयोग करके दोनों को बद्धावस्था प्राप्त करा कर उसका सेवन करना। परमेश्वर शिव ने एक बार देवी से कहा है—

कर्मयोगेन देवेशि प्राप्यते पिण्डधारणम्।
रसश्च पवनश्चेति कर्मयोगो द्विधास्मृतः ।।
मूर्छितो हरति व्याधीन् मृतोजीवयतिस्वयम्।
बद्धः खेचरतां कुर्यात् रसोवायुश्च भैरवि ।।

स० द० सं० पृ०–२०४

इस तरह स्पष्ट है कि नाथ सम्प्रदाय द्वारा पारद प्रक्रियाओं में अपनी क्षमता का बहुत बड़ा योग अवश्य किया गया। किन्तु मूलतः सिद्ध चिकित्सक एवं रससिद्ध भिन्न भिन्न हैं। यह अवश्य है कि रस शास्त्र की श्रीवृद्धि में दोनों का ही अपूर्व योग रहा है। रस सम्प्रदाय के प्रधान आचार्य महेश्वर नाथों के भी प्रधान इष्टदेव रहे हैं। महेश्वर कृत रसग्रन्थ का नाम रुद्रयामल है। यह रस चिकित्सा का सबसे बड़ा ग्रन्थ माना गया है। इसमें छ कल्प अथवा भाग हैं। पारद कल्प, धातु कल्प, हरिताल कल्प, अभ्रक कल्प, हरितकी कल्प एवं धातु क्रिया। अगस्त्य, सुषेण, ऋत्स्य, शृङ्ग, मत्तमाण्डव्य, चन्द्र सेन आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुप्राचीन रस वैद्य भारत के विभिन्न प्रान्तों में हुए हैं। चन्द्रसेन ने दिल्ली के लोहस्तम्भ का निर्माण किया था, जो हजारों वर्षों के बाद भी अविकृत रूप से वैसे ही खड़ा है। मकरध्वज, रस चन्द्रोदय, चन्द्रोदय, मकरध्वज जैसी चमत्कारिक रसौषधियों का आविष्कार किया था। इस के बाद के समय में भी भास्कर, सूरसेन, रत्नकोष, शम्भु, सात्विक, गोमुख, नरवाहन, कम्बली, व्याडि, वाग्भट्ट, सुरानन्द, नागबोधि, यशोधर, अनन्तदेव आदि रस चिकित्सक समय समय पर होते आये हैं। इनके द्वारा रस चिकित्सा के भण्डार की अभिवृद्धि हुई है।

इस तरह स्पष्ट है कि रस चिकित्सा भारतवर्ष की अपनी देन है और वह काय चिकित्सा का ही एक विशिष्ट भेद है। महाभारत काल के पहिले से चिकित्सा का इतना विस्तार हो चुका था कि गजायुर्वेद, अश्वायुर्वेद प्रभृति का प्रणयन पशुभेद के आधार पर हो चुका था। द्रव्य परिज्ञान कितना आगे वढ़ गया था इस बात को बतलाने में एक उद्धरण पर्याप्त होगा। पाण्डवों के अज्ञातवास के समय सहदेव पशु पालक का वेष बनाकर राजा विराट को अपना परिचय देते हुए कहते हैं—

वृषभानभि जानामि राजन् पूजित लक्षणान्।
येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि बन्ध्या प्रसूयते ।।

राजन् ! मैं बैलों की ऐसी श्रेणि को जानता हूँ जिनके मूत्र को सूंघने से वन्ध्या स्त्री का वांझपन मिट जाता है। पदार्थ विज्ञान की यह पराकाष्ठा थी जो अन्यत्र सुदुर्लभ है। भारतीय चिकित्सक देहसिद्धि—रोग निवारण—और रससिद्धि—धातु परिवर्त्तन दोनों में पूर्ण पारङ्गत थे। ह्वेनसांग ने अपने यात्रा-वर्णन में लिखा है कि यहां के चिकित्सक रोग निर्मुक्त हुए अपने रोगियों से कुछ नहीं लेते हैं। कुमार जीवक द्वारा आयुर्वेद पढ़ने की प्रेरणा में किसी से कुछ नहीं लेने का यह उच्चादर्श ही रहा है। प्रारम्भ के युग में ब्राह्मणों की सांसारिक विषयों के प्रति अवश्य ही आस्था नहीं थी। किन्तु मध्य युग में संभवतः कुछ न लेने का आधार यह पारद सेवा ही थी। आचार्य गोविन्द भगवत्पाद ने कहा है—

अमृतत्वंहि भजन्ते हरमूर्तौ योगितो यथालीनाः।
सद्वत्कवलित गगने रसराजे हेम लोहाद्याः ।।

भारतवर्ष की यह रस विद्या पुनरुज्जीवित होकर समस्त विश्व का कल्याण साधन करे इस कामना के साथ विषय विस्तृति के अवरोधार्थ लेखनी का संवरण किया जाता है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
संवत् २०३१ वि०

केशवदेव शास्त्री

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूची

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
१	अग्निजीवन पर्पटी	१	जीर्ण संग्रह ग्रहणी, दूषित रक्त-विकार
२	अग्निसंदीपन रस	३	अग्निमान्द्य
३	अतिसार राज रस	४	अतिसार, ग्रहणी विकार
४	अपतन्त्रकारि रस (लघु)	४	अपतन्त्रक (योषापस्मार)
५	अपतन्त्रकारि रस (बृहत्)	५	अपतन्त्रक (योषापस्मार)
६	अभ्ररसायन रस	६	रसायन-वाजीकरण
७	अमर रस	६	सर्वरोग, वातपित्तविकार
८	अरुणोदय रस (लघु)	७	हृदय, स्नायुमण्डल, रक्त को शक्तिप्रद
९	अरुणोदय रस (बृहत्)	८	,, ,, ,,
१०	अष्टादशाङ्ग लौह	८	यकृत, प्लीहा विकार
११	आमवातेश्वर रस	९	आमवात
१२	आरोग्य रक्षक रस	१०	रोगप्रतिबन्धक, शक्तिवर्धक
१३	उत्फुल्लिका विद्रावण रस	१०	उत्फुल्लिका-डब्बा रोग
१४	उन्मादभञ्जन रस (लघु)	११	उन्माद, अपस्मार, योषा
१५	उन्मादभञ्जन रस (बृहत्)	१२	,, ,, ,,
१६	उपदंशकुठार रस	१२	उपदंश
१७	उपदंशवज्र रस	१३	उपदंश
१८	उष्णवातारि रस	१३	उष्णवात
१९	कर्पूरेश्वर रस	१४	जीर्ण आम तथा रक्तातिसार
२०	कम्बू कल्प रस	१५	ग्रहणीकल्प दूध से (अन्न भी)
२१	कृष्ण भैरव रस	१५	वातव्याधि
२२	कास कासानल रस	१६	हुपिङ्ग कफ
२३	काल विजय रस	१६	सन्निपात शीताङ्ग (सर्पविष)
२४	कास कल्याण रस	१७	कास
२५	केशरादि रस	१८	बालरोग—अतिसार छर्दि आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
२६	केशव कल्प	१८	दधिकल्प, अन्न भी—संग्रहणी विकार पर
२७	क्लैव्यविनाशन रस	२०	क्लीवता
२८	क्लैव्यारि रस	२०	,,
२९	ग्रन्थिवातान्तक रस	२१	ग्रन्थिवात
३०	ग्रहणीगजकेशरी रस	२१	संग्रहग्रहणी क० चि०
३१	ग्रहणी मार्त्तण्ड रस	२२	,, ,, ,,
३२	ग्रहणीरसायन रस	२३	,, ,, ,,
३३	ग्रहणीरसायन लौह	२४	संग्रहग्रहणी रक्तहीनता
३४	गोरोचनादि रस	२४	वालरोग
३५	चन्द्रहास रस	२४	सन्निपात
३६	जलोदरारि रस	२६	जलोदर
३७	ज्वर कल्पतरु रस	२६	नवज्वर
३८	ज्वर जूड़ामणि रस	२७	तीव्रज्वर
३९	ज्वरारि रस	२७	विषम ज्वर
४०	ज्वर सूदन रस	२८	सन्निपातज्वरजअतिसार
४१	जीरकादि लौह	२८	यकृतविकार संग्रहणी
४२	जीर्ण ज्वरारि रस	२९	जीर्णज्वर
४३	जीर्णोष्णवातारि रस	२९	जीर्ण उष्णवात तद्भवरोग
४४	तृणकान्तमणि	३०	रक्तस्राव
४५	ताप्यादि लौह (बृहत्)	३०	दौर्बल्य, स्नायुविकार, मधुमेह
४६	तालेश्वर रस	३१	रक्तविकार वातश्लेष्म रोग
४७	तिलक रस (लघु)	३१	वातश्लेष्मविकार, हृदय दौ०
४८	तिलक रस (बृहत्)	३२	,, ,,
४९	दरदामृत रस	३३	संग्रहणी वि०
५०	दरदमुष्टि रस	३४	अग्नि वि०, विशूचिका
५१	दरद कल्प	३५	खरबूजा अनुपान से ग्र० वि०
५२	दरद रसायन	३५	ग्र० वि० दौ०
५३	धन्वन्तरि रसायन	३६	प्रमेह शुक्र वि० शा० दौ०
५४	नवकस्तूरी भैरव रस	३६	सन्निपात अतिसार
५५	नव प्राणेश्वर रस	३७	आमातिसार सज्वर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
५६	नव भैरव रस	३८	ज्वर
५७	नव मृगाङ्क रस	३८	क्षयज्वर दौ०
५८	नवरत्न रस	३९	हृदय वि० दौ०
५९	नव वल्लभ रस	४०	ग्रहणी वि०
६०	नाग रस	४०	रक्तार्श
६१	नाग रसायन	४१	वाजीकरण
६२	निद्राकर रस	४१	अनिद्रा
६३	पक्षाघातारि रस (लघु)	४२	पक्षाघात
६४	पक्षाघातारि रस (बृहत्)	४२	,,
६५	पंचभद्र रस	४३	सन्निपात
६६	प्रदर दावानल रस (लघु)	४३	प्रदर
६७	प्रदर दावानल रस (वृहत्)	४४	,,
६८	प्रदरान्तक लौह	४५	,,
६९	प्रभाकर रस	४५	हृदय वि० दौ०
७०	प्रलापान्तक रस (लघु)	४६	प्रलाप
७१	प्रलापान्तक रस (बृहत्)	४६	,,
७२	प्रवाल नवामृत रस	४७	हृदय, मस्तिष्क दौ०
७३	प्रवाल सप्तामृत रस	४८	तीव्रज्वर, पित्त वि० दौ०
७४	पार्श्वशूलारि रस	४८	श्लेष्मज पार्श्व पीड़ा
७५	बलादि मण्डूर	४९	पाण्डु
७६	बलार्जुन रस	५०	दौ० हृ० वि०
७७	बहुमूत्रान्तक रस	५०	बहुमूत्र
७८	बृहत् नवायस लौह	५१	यकृत वि० दौ०
७९	बृहत् पिप्पल्यादि रस	५१	श्वास वि०
८०	बृहत् रसमण्डूर	५२	पित्त वि०, यक्ष्मा वि०
८१	बृहत् वरुणादि लौह	५३	वृक्क वि०
८२	बाल कल्याण रस	५३	बालरोग
८३	बालामृत रस	५४	,,
८४	बाल शोषान्तक रस	५४	,, बालशोष
८५	मकरचिन्तामणि रस (लघु)	५५	वात वि०, हृ० चञ्चलता, स्नायु दौ०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
८६	मकरचिन्तामणि रस (बृहत्)	५५	वातवि. हृ. चंचलता, स्ना. दौ.
८७	मकरध्वज पर्पटी	५६	तीव्र ज्वर
८८	मकरध्वज रस वटी (लघु)	५६	दौर्बल्य
८९	मकरध्वज रस वटी (बृहत्)	५७	,,
९०	मकरध्वज रसायन	५८	,,
९१	मण्डूराष्टक	५८	यकृत विकार
९२	मधुमेहारि रस	५९	मधुमेह
९३	मन्मथ रस	६०	रसायन वाजीकरण
९४	महाग्रन्थिवातान्तक रस	६०	ग्रन्थिवात
९५	महावातगजांकुश रस	६१	वात विकार
९६	महावातराज रस	६१	,,
९७	मुक्ता गर्भ रस	६२	स्फोटक ज्वर
९८	मुक्तादि बाल रस	६३	बालरोग, अस्थि दौ०
९९	यष्ट्यादि लौह	६३	श्वास रोग
१००	रत्नगर्भ पोटली रस	६४	सन्निपात
१०१	रविक्रान्ति रस (लघु)	६४	पित्तावृत्त वात वि०
१०२	रविक्रान्ति रस (बृहत्)	६५	,, ,,
१०३	रस गुग्गुलु:	६६	वात व्याधि
१०४	रस भल्लातक	६६	उपदंश, मज्जा विकार
१०५	रसेश्वर रस	६७	अति० विशूचिका
१०६	लीलाविलास रस	६८	उदर वि० संग्र०
१०७	वमनकुठार रस	६८	वमन
१०८	वङ्गाष्टक रस	६९	प्रमेह दौ०
१०९	व्रणराक्षस रस	७०	व्रण
११०	वातचिन्तामणि रस	७०	वातविकृति
१११	वातभैरव रस	७०	वातरोग
११२	वातरक्तारि रस	७१	वातरक्त
११३	वातराज रस	७२	वातरोग
११४	वातश्लेष्मचिन्तामणि रस	७२	वातश्लेष्मविकार
११५	वाताशनि रस	७३	वातरोग
११६	विद्रूमादि रस	७४	पित्तविकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
११७	विशूचिका भंजन रस	७४	विशूचिका
११८	विशूचिका विध्वंसन रस	७५	,,
११९	विश्वेश्वर रस	७५	विषम ज्वर
१२०	विषम ज्वरारि रस	७६	,,
१२१	वेदनाहर रस	७६	वेदना
१२२	शतभल्लादि रस	७७	उष्णवात की पुरातनावस्था
१२३	श्वासगजेन्द्रकेशरी रस	७७	श्वास
१२४	श्वासारिशंख रस	७८	,,
१२५	श्वासारि रस	७९	,,
१२६	श्वासारि लौह	७९	,,
१२७	शीतज्वरारि रस	८०	शीतज्वर
१२८	शीतांशु रस	८०	पित्तविकार
१२९	शूलामृत रस	८१	शूल
१३०	श्लेष्मकुठार रस	८१	श्लेष्मविकार
१३१	श्लेष्मचिन्तामणि रस (लघु)	८२	श्लेष्मज्वर
१३२	श्लेष्मचिन्तामणि रस (बृहत्)	८२	,,
१३३	श्लेष्मज्वरारि रस	८३	,,
१३४	श्लेष्मार्क रस	८३	श्लेष्म विकार
१३५	श्लेष्मान्तक मण्डूर	८४	श्लेष्मज्वर
१३६	शोणित कपाट रस	८४	रक्तस्राव
१३७	सन्निपात भैरव रस	८५	सन्निपात
१३८	स्मृतिरंजन रस	८६	मस्तिष्क विकार
१३९	स्वर्णाय कान्त सिन्दूरम्	८६	दोष निर्हरण, शक्ति निर्माण
१४०	स्वर्णगर्भ रस	८७	स्फोटक ज्वर
१४१	स्वर्णवंग पंचक	८८	प्रमेह
१४२	स्वर्ण वंगाष्टक	८८	,,
१४३	सर्वज्वरहरताल	८९	ज्वर
१४४	सिन्दूरादि रस	८९	,,
१४५	सुधांशु रस	९०	पित्तज विकृति
१४६	हृद् बलोदय रस	९१	हृदय रोग
१४७	हिक्कान्तक लौह	९१	हिक्कारोग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संख्या	नाम	पृष्ठ	अधिकार
१४८	हुताशन रस	९२	अग्निमान्द्य
१४९	हमगर्भ रस (लघु)	९२	सन्निपात
१५०	हेमगर्भ रस (बृहत्)	९३	,,
१५१	क्षयकेशरी रस	९३	क्षयज्वर
१५२	क्षुद्रबोधक रस	९४	अग्निमान्द्य
१५३	क्षुधावर्द्धन रस	९५	,,
१५४	त्रिमूर्त्ति रसायन	९६	रसायन वाजीकरण
१५५	ज्ञानोदय रस	९६	प्रवृद्ध सन्निपात

भस्म प्रकरण

१	हरताल तपकी भस्म योग–१	९७
२	हरताल भस्म योग–२	९८
३	हरताल भस्म योग–३	९८
४	हरताल भस्म योग–४	९९
५	हरताल भस्म योग–५	९९
६	सोमल भस्म योग–१	१००
७	सोमल भस्म योग–२	१००
८	सोमल भस्म योग–३	१०१
९	सोमल भस्म योग–४	१०२
१०	सोमल भस्म योग–५	१०२
११	दरद भस्म योग–१	१०२
१२	दरद भस्म योग–२	१०२
१३	रस कपूर भस्म योग–१	१०३
१४	रस कपूर भस्म योग–२	१०३
१५	दाल चिकना भस्म योग–१	१०४
१६	दाल चिकना भस्म योग–२	१०४
१७	मुर्दा शंख भस्म	१०४
१८	तुत्थ भस्म	१०५
१९	जंगाल भस्म	१०६
२०	वैक्रान्त भस्म	१०६
२१	पन्ना भस्म	१०७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२२	माणिक्य भस्म	१०७
२३	स्वर्ण पंचक भस्म	१०८
२४	स्वर्ण भस्म योग–१	१०९
२५	स्वर्ण भस्म योग–२	१०९
२६	रौप्य भस्म योग–१	११०
२८	ताम्र भस्म योग–१	१११
२९	ताम्र भस्म योग–२	१११
३०	अभ्रक भस्म योग–१	११२
३१	श्वेत अभ्रक भस्म योग–२	११२
३२	लौह भस्म योग–१	११३
३३	लौह भस्म योग–२	११३
३४	लौह भस्म योग–३	११३
३५	लौह भस्म सूर्यपाकी योग–१	११४
३६	लौह भस्म सूर्यपाकी योग–२	११४
३७	शीत मण्डूर भस्म	११५
३८	वंग भस्म योग–१	११५
३९	वंग भस्म योग–२	११६
४०	नाग भस्म योग–१	११७
४१	नाग भस्म योग–२	११७
४२	यशद भस्म	११८

गन्धक तैल

१	गन्धक तैल योग–१	११८
२	गन्धक तैल योग–२	११९
३	गन्धक तैल योग–३	११९
४	गन्धक तैल योग–४	१२०
५	गन्धक तैल योग–५	१२०

—०—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

An appreciation

I have a very great pleasure in introducing Siddhousadhi Manjusa, written by Kaviraj Keshabdeo Shastri Tirthatraya Ayurvedacharya, Vishakchuramani, Sanchalak Lokenath Ayurveda Bhawan and Pradhan Chikitsak Digamber Jain Databya Aushdhalaya, Prastisthata-Adhyakshya Charak Gavesana Pith, Vice-President of the Bengal Branch of All India Ayurvedic Congress. I have been overwhelmed with the vastness of his marvellously efficacious collections of so many medicines in very simple and deeply penetrating Hindi Language for the benefit of the Kavirajas of India who have at present fallen on evil days due to the step-motherly behaviour of both the Central and State Govts. Of India. The book when published will surely remove a long felt want and create a stir in the Ayurvedic world for the sensational enhancement of its timehonoured curative values as healing science of supreme importance. I earnestly pray for the Author's long life, good health and material prosperity in life I wish the book all success it so richly deserves. I have heard from the author that this is the first volume of the book. The second volume will be soon published which will be even more important than the first volume from the point of view of healing so many the socalled incurable diseases. I earnestly pray to God that the 2 volumes should be very quickly published for the benefit of the Ayurvedic World.

Rajvaidya Prabhakar Chatterjee,

26.7.74. M.A.D.SC.F.R.A.S. (LONDON)

Member : Central Council of Indian Medicines
Govt. of India.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सम्मतियाँ

(१)

कविराज केशवदेव शास्त्री तीर्थत्रय, आयुवदाचार्य, भिषक् चूड़ामणि, संचालक श्री लोकनाथ आयुर्वेद भवन, प्रधान चिकित्सक श्री 'दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय, प्रतिष्ठाता-अध्यक्ष चरक गवेषणा पीठ तथा उपाध्यक्ष अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन पश्चिम बंगीय शाखा द्वारा लिखित सिद्धौषधि मञ्जूषा' के अवलोकन कर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। भारतीय कविराजों के हितार्थ सरल एवं सहज सुबोध हिंदी भाषा में लिखित इतनी अधिक औधियों के चमत्कारिक योगों के इस वृहत् संकलन का अवलोकन कर मैं आश्चर्यचकित रह गया— एक ऐसे समय में जब कि भारत की केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के वांछित व्यवहार न करने के कारण आयुर्वेद दुर्दिन का सामना कर रहा है। ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर अवश्य ही एक महान अभाव की सम्पूर्त्ति हो जायेगी तथा इस सर्वोच्च महत्व के चिकित्साविज्ञान के अनन्तकाल से प्रतिष्ठित आरोग्यवर्द्धक तथ्यों के प्रकाशन से आयुर्वेद जगत् में तहलका मच जायेगा।

मैं लेखक के दीर्घायु, स्वथजीवन तथा सुख-समृद्धि की हृदय से कामना करता हूँ। मैं इस ग्रन्थ की पूर्ण सफलता चाहता हूँ जिसके लिये वह पूर्णतया उपयुक्त है। लेखक ने मुझे बताया कि ग्रंथ का यह पूर्वार्द्ध है। उत्तरार्द्ध भी यथासमय प्रकाशित होगा जिससे ये अधिक मूल्यवान प्रमाणित होंगें। इसके द्वारा तथा-कथित असाध्य रोगों का भी शमन किया जा सकेगा।

मैं परमात्मा से सविनय प्रार्थना करता हूँ कि आयुर्वेद जगत् के कल्याणार्थ इनका शीघ्र प्रकाशन हो।

प्रभाकर चटर्जी

२६-७-७४ राजवैद्य एम० ए०, डी० एससी०

एफ० आर० ए० एस० (लन्दन)

सदस्य : भारतीय औषधियों की केन्द्रीय परिषद, भारत सरकार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कविराज केशवदेव शास्त्री, तीर्थत्रय आयुर्वेदाचार्य द्वारा लिखित 'सिद्धौषधि मंजूषा' को देख कर मुझे अति हर्ष का अनुभव हुआ। पुस्तक का प्रथम खण्ड रस वर्ग तथा भस्म प्रकरण के रूप में लिखा गया है। इसके योग बहुत ही विशिष्टता रखनेवाले एवं प्रायः नूतन हैं। रसवर्ग के योगों में हरताल, संखिया, भल्लातक आदि के योग आयुर्वेदीय चिकित्सा में क्रान्ति लानेवाले हैं। प्रायः समस्त योग ही उच्च कोटि के और पूर्णफल प्रदान करने वाले हैं। निर्माण करने की क्षमता सम्पन्न वैद्य इनसे अच्छा लाभ उठा सकेंगे इसमें कोई सन्देह नहीं है। जो लोग आयुर्वेद में नूतन अनुसन्धान की बातें करते हैं उन्हें इस महान् प्रयास की तरफ दृष्टिपात करना चाहिये। एक-एक काष्टौषधियों में अनुसन्धान के नाम पर लम्बा समय और लम्बी अर्थराशि का व्यय करनेवाली सरकार का भी कर्तव्य है कि एक साथ इतनें बड़े अनुसन्धान को संम्पूर्ण समादर प्रदान कर चिकित्सा जगत् को लाभान्वित करे। लेखक के समस्त जीवन की संग्रह-प्रवृत्ति और अनुसन्धान-प्रियता से आयुर्वेद क्षेत्र को एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पुस्तक की उपलब्धि हुई है। लेखक के दीर्घ जीवन की कामना करता हुआ यह आशा करता हूँ कि पुस्तक का उत्तरार्द्ध भी वैद्य समाज की कल्याण कामना से भविष्य में ही उनके द्वारा संकलित होगा। इन दोनों भागों का प्रकाशन जितना शीघ्र हो सके उतना हीं आयुर्वेद तथा चिकित्सा वर्ग का अधिक हित साधन होगा।

कविराज बगलाकुमार मजुमदार, एम० ए०
राजवैद्य आयुर्वेदाचार्य,
सम्पादक—'आयुर्वेद-भारती'

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राणाचार्य कविराज केशवदेव शास्त्री तीर्थत्रय आयुर्वेदाचार्य भिषक् चूड़ामणि द्वारा लिखित 'सिद्धौषधि मञ्जूषा' का अवलोकन कर मुझे अति हर्ष हुआ है। इस पुस्तक का यह प्रथमखण्ड है, जो रस वर्ग और भस्म प्रकरण के रूप में संग्रहीत हुआ है। रसवर्ग अकारादि क्रम से संकलित हुआ है। भस्म प्रकरण को हरताल भस्म से प्रारम्भ किया गया है।

पुस्तक के योग सर्वथा नवीनता लिये हुए हैं। इस तरह के अप्रकाशित सफल योगों का इतना बड़ा संकलन अन्यत्र नहीं देखा जाता। पुस्तक को जहाँ से भी खोला जाय नवीनता परिदृष्ट होती है। अधिकांश योग तो ऐसे हैं जिनका प्रतिरूप कहीं देखने को नहीं मिलता। बहुत से कठिन रोगों की चिकित्सा इस पुस्तक के योगों से पूर्ण सफलता के साथ की जा सकती है। बीमारियों की चिकित्सा आज की नवीन चिकित्सा प्रणालियों द्वारा सफलता के साथ नहीं कर पा रहे हैं ऐसे रोगों के पूर्ण सफल योगों का उल्लेख शास्त्रीजी के इस नवीन संकलन में हुआ है। योगों की क्रियाशक्ति का परिज्ञान इस योग में पड़नेवाले द्रव्यों के द्वारा आसानी से किया जा सकता है। इस संग्रह के पीछे शास्त्री जी की लम्बी साधना रही है। इन्होंने अपने अध्ययनकाल से ही सफल चिकित्सकों के योगों का संग्रह प्रारम्भ कर दिया था। सुदीर्घ ४५ वर्षों की अपनी साधना के फलस्वरूप इन्होंने जिस कृति का समर्पण आयुर्वेद को किया है, वह इनकी एक अभूतपूर्व महान् देन है। शास्त्री जी आयुर्वेद शास्त्र के प्रौढ़ विद्वान् हैं उतने ही सफल चिकित्सक भी। इन्होंने बंगाल के मूर्धन्य चिकित्सक स्वर्गत कविराज ज्योतिर्मय सेन के सन्निधि में चिकित्सा कौशल में पारङ्गता प्राप्त की है। आप आयुर्वेद तलस्पर्शी विद्वान् और प्रौढ़ वक्ता हैं।

पुस्तक के भस्म प्रकरण में आपने जिन महान् योगों का उल्लेख किया है उन को देखकर ऐसा अनुभव होता है कि आयुर्वेदीय चिकित्सकों के लिए कल्पवक्ष प्रकट हुआ है। हिंगुल, हरताल, सोमल आदि की भस्में जिस वैद्य के पास हों भला उसकी चिकित्सा की सफलता में क्या सन्देह किया जा सकता है। स्वतन्त्रता के बाद से सरकार की बहुत बड़ी अर्थराशि के व्यय से होनेवाले अनुसन्धानों से आज तक किसी आयुर्वेदीय चिकित्सकों को कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई। जो लोग आयुर्वेद में अनुसन्धान न होने की बातें करते हैं उन को इस ओर दृष्टिपात करना चाहिये। शास्त्रीजी को किन शब्दों में बधाई दी जावे। उनसे हमारा साग्रह अनुरोध होगा कि वे पुस्तक के अन्य खण्डों के प्रकाशन की भी अविलम्ब व्यवस्था करें। इससे आयुर्वेद जगत् का अशेष हित साधन होगा।

वैद्य श्रीराम शर्मा

प्र० चि० मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, आयुर्वेद-विभाग, कलकत्ता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समर्पण

आजीवन लोकाराधन साधना के पथिक
भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण समाराधक
स्वर्गीय सेठ मुरलीधरजी सराफ कलकत्ता
की आयुर्वेद - निष्ठा की स्मृति में
लेखक द्वारा सादर समर्पित।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिद्धौषधि-मंजूषा

प्रथम खण्ड

अग्निजीवन पर्पटी

द्रव्य और निर्माण-विधि--

रसकर्पूर बाजारू १० तोला, खुरासानी अजवायन १० तोला, अजमोद १० तोला। तीनों औषधियों को अलग-अलग खरल करके एक जगह मिला कर खरल करें। फिर ऊर्ध्वपातन यन्त्र विधि से पारद का ऊर्ध्वपातन कर लें। यन्त्र से पारद को निकाल कर डाब जल के साथ मर्दन करे। जब तक स्वच्छ जल न हो जावे डाव जल से ही प्रक्षालित करें। फिर श्वेत स्वच्छ वस्त्र से दश बार छान कर पारद को रख लें।

सुपुष्ट भल्लातक आधा सेर लेकर उनको दो सेर डाब जल में चौबीस घंटा भिगोकर उस बचे जल को निकाल लें। अनन्तर ताजा डाब जल दो सेर हंडी में डालकर अत्यन्त मन्दी आंच पर रख कर औटावें। आधा सेर जल रहने पर नीचे उतार कर रख दें। शीतल होने पर अवशिष्ट जल को निकाल लें। भिलावों को छाया शुष्क करके उनके मुख को सरौता से काट लें। काटते समय नारियल तैल हाथों पर लगा लें। अनन्तर कटे भल्लातकों को कपड़-मिट्टी की हुई बड़ी काँच की शीशी या हंडी में भरती करके विधि पूर्वक अधः पातन यन्त्र से तैल निकाल लें। नीचे चीनी मिट्टी का प्याला रखें ताकि तैल का शोषण न होने पाये। इस तैल को सुरक्षित रख लें।

आमलासार गन्धक दश तोला लेकर खरल में महीन पीस लें। लोहे की कुलछी में दो तोला भल्लातक तैल डालकर उसमें उक्त गन्धक को डालें और अत्यन्त मृदु ताप पर उसे गरम करें। धूँआ न उठने पाये। गन्धक के अच्छी तरह पिघल जाने पर उसे गाय के एक सेर दूध में डाल दें। इस तरह तीन दफे बुझाव दें। अनन्तर नये एक सेर गाय के दूध में गन्धक को डालकर मन्दी आंच पर औटावें और ऊपर आये तैल सहित दूध को गिरा दें। फिर गन्धक को छाया शुष्क कर लें। गन्धक को सुरक्षित रखें।

तदनन्तर अच्छी चिकनी खरल में उक्त पारद में से १ तोला डालें और इसी तरह उपरोक्त गन्धक में से ६ तोला गन्धक डालकर तीन दिन तक घोटें। प्रति-दिन ६ घण्टा अवश्य घोटना चाहियें। वाद में श्वेत अच्छा कत्था जनकपुरी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६ तोला मिलाकर दो दिन घोटकर पर्पटी बनाने की विधि से पर्पटी बना लें। पर्पटी मृदुपाक की बनानी चाहिये। पर्पटी को सुरक्षित रख लें।

अधिकार और गुण--

यह औषधि दुर्जय ग्रहणी, उपदंश, भृशोष्णवात, कष्टप्रद दूषित रक्तविकार, वातरक्त, गलित कुष्ठ रोग की अमोघ औषधि है और आन्त्र संश्रित आम को नष्ट करने में इसकी अप्रतिहत क्रिया है। दूषित अजीर्ण के कारण अतिसार के साथ उदर में बढ़ते विषवेग को यह तत्काल शिथिल कर देती है। इससे उपद्रव शमन के साथ-साथ मूल कारण की निवृत्ति होजाती है।

उपयोग विधि और मात्रा--

विभिन्न रोगों में इसका प्रयोग विविध तरीकों और मात्रा में किया जाता है। ग्रहणी विकारज आमदोष और अतिसार पर इसका प्रयोग पर्पटी कल्पों की तरह कल्प पद्धति एवं खुला रूप में किया जाता है। परन्तु पहली विधि का प्रयोग अधिक फलप्रद सिद्ध होता है। कल्प प्रयोग में भी इसकी मात्रा अन्य पर्पटियों की अपेक्षा कम दी जाती है। साधारणतः इसका प्रयोग एक रत्ती से प्रारम्भ कर चार रत्ती तक सुबह-शाम किया जाता है। यह योग दूध के अनुपान से ही दिया जाता है और इसमें नमक की चीजें अपथ्य होती हैं। इसके साथ नमक मिश्रित औषधि का भी प्रयोग नहीं किया जाता। खुले प्रयोग में तथा आवश्यक होने पर कल्प प्रयोग में भी दूध के साथ पुरातन चावलों को पूर्ण सिद्ध करके दिया जा सकता है। एक रत्ती से मात्रा प्रारम्भ करके प्रति तीसरे दिन एक-एक रत्ती बढ़ाकर चार रत्ती की मात्रा हो जाने पर उस मात्रा में दवा को दो या तीन सप्ताह चलाना चाहिये। रोग निवृत्ति परिदृष्ट होने पर पूर्णवत् दवा का ह्रास करना होगा। एक-एक घण्टा से दूध देना चाहिये। आवश्यक होने पर दिनों की अवधि और दूध की मात्रा में परिवर्त्तन किया जा सकता है।

रक्त विकार, वातरक्त एवं गलित कुष्ठ में इसका प्रयोग नमक विहीन पथ्य के साथ निश्चित मात्रा में किया जाता है। दूध की अधिकता आहार में अवश्य रखनी चाहिये। नमक विहीनता हर स्थिति में आवश्यक है। रक्त शुद्धि कारक अन्य दवाओं का प्रयोग इसके साथ किया जा सकता है। अनुपान में क्वाथ आदि का प्रयोग अधिक हितावह होता है।

उदर में पैदा हुए दूषी विष के कारण पैदा होनेवाले अजीर्ण रोग जिसमें अतिसरण क्रिया की अधिकता हो—में इसका सामयिक प्रयोग शीघ्र फलप्रद सिद्ध होता है। इस स्थिति में इसका प्रयोग एक रत्ती की मात्रा में स्वतन्त्र रूप में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथवा एतद् रोगोक्त अन्य दवाओं के साथ किया जाता है। इस स्थिति में नमक विहीनता आवश्यक नहीं होती। आशय यह है कि कुछ समय के प्रयोग में नमक छोड़ना आवश्यक नहीं होता। किन्तु जिन रोगों में लगातार दवा चलना जरूरी होता है, उनमें नमक बन्द करना आवश्यक हो जाता है।

वक्तव्य—

इस दवा के चलते समय किये गये अपचार के कारण प्रतिक्रिया होकर यदि दाँतों के मसूढ़ों में सूजन आजावे तो उस विपरीत पदार्थ को शीघ्र बन्द कर बेर की जड़ की छाल को जल में औटाकर गण्डूष करना चाहिये। उतने समय तक दवा का प्रयोग भी बन्द कर देना चाहिये।

अग्निसन्दीपन रस

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद ४ तोला, शुद्ध गन्धक ८ तोला, लौह भस्म, सुहागा फूल, काली मरीच प्रत्येक ४-४ तोला, छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य चित्रक, अकरकरा, सोंठ, लौंग, अम्लवेत, अनारदाना, इमली क्षार, सज्जी क्षार, अपामार्ग क्षार, यव-क्षार, शंखभस्म प्रत्येक २-२ तोला, हर्रेछाल, बहेड़ा छाल, आमला, श्वेतजीरा, स्याह जीरा, समुद्र नमक, संचर नमक, सांभर नमक, नवसादर एवं शुद्ध हींग प्रत्येक १-१ तोला, कूठ, दालचीनी, लौंग, जावित्री प्रत्येक $^{1}/_{2}$–$^{1}/_{2}$ तोला,, सैन्धव नमक ४ तोला, एवं शुद्ध भांग ८ तोला।

निर्माणविधि—

नमक और क्षार द्रव्यों के अतिरिक्त काष्टौषधियों का वस्त्र छन चूर्ण कर लें। पारद गन्धक की कज्जली के साथ भस्मों को मिला कर घोटें। फिर उपरोक्त चूर्ण और नमक तथा क्षारों को मिलाकर अम्ल बेल का काढ़ा, आर्द्रक स्वरस, अजवायन का काढ़ा एवं निम्बू रस की ३-३ भावना देकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनाकर पूर्ण शुष्क कर लें।

अधिकार, अनुपान और मात्रा—

अग्नि के दीपन तथा पाचन गुण को बढ़ाने में यह योग अपूर्व क्षमताशाली है। अग्निमान्द्य, आमाजीर्ण, सामग्रहणी आदि उदर के विकारों में इसका अच्छा उपयोग होता है। पाचक रसों के निस्सरण तथा आन्तों की पुरः सरण क्रिया को इससे बल प्राप्त होता है और लम्बे समय से रहनेवाली कब्ज मिटती है। यकृत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की क्रिया हीनता में अन्य दवा के साथ तथा स्वतन्त्र रूप से इसका प्रयोग किया जाता है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में रोगानुसार विविध अनुपानों से प्रयोग में लेना चाहिये।

अतिसार राज रस

योगद्रव्य--

समगन्धक की रस पर्पटी २ तोला, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, शङ्खभस्म प्रत्येक १-१ तोला, सोंठ, मरीच, अजवायन, बेलगिरी, आमगिरी, कैथगिरी, अतीस, इन्द्रजौ, मोचरस, मस्तकी, धायफूल, मांजूफल, जायफल, नागरमोथा, छोटी माई, लोध, कुड़ाछाल, अनारपुष्प, अपामार्ग बीज, कीकर के बीज, भांग के बीज, छोटी पीपल, श्वेतकत्था एवं सफेद राल प्रत्येक ½-½ तोला, शुद्ध अहिफेन ४ तोला।

निर्माणविधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। अहिफेन को आदी के रस से घोटकर सुखा लें। खरल में पर्पटी सहित भस्मों को अच्छी तरह घोटकर औषधियों का चूर्ण मिलाकर अहिफेन सहित समस्त द्रव्यों को पोस्तड़ोड़ा क्वाथ की तीन भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, मात्रा और अनुपान :--

निराम पक्वातिसार में संग्रहणीय दवा के रूप में यह सद्यः फलप्रद औषधि है। इसके अतिरिक्त क्षीण रोगी के अधिक संख्या में लगनेवाले दस्तों को कम करने में इसका प्रयोग शीघ्र लाभदायक होता है और आध्मान नहीं होता। संग्रहणी की चिकित्सा में अन्य औषधियों के साथ मल को बांधने के लिए इसका प्रयोग अच्छा फल देता है। रक्तातिसार में मोच रसादि क्वाथ आदि रक्तस्राव को रोकनेवाले एवं अतिसारघ्न अनुपानों से इसको देने से रक्तस्राव के अवरोध के साथ अतिसार की भीषणता का शीघ्रता से प्रशमन होता है। एक से दो गोली की मात्रा में इसे प्रयोग करना चाहिये। दन्तोद्भेद के समय बालकों के होनेवाले अतिसार में इसे आधी से एक गोली की मात्रा में प्रयुक्त करना चाहिये।

अपतन्त्रकारि रस—लघु

योगद्रव्य--

कस्तूरी १॥ माशा, जुन्दवेदस्तर ३ माशा, अम्बर ३ माशा, कपूर पुष्प ६ माशा, शुद्ध गांजा, हीरा हींग अशुद्ध, जटामांसी, खुरासानी अजवायन, तगर एवं उदसलीव प्रत्येक १-१ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण विधि--

औषधियों का वस्त्रछन पूर्ण कर लें। खरल में डालकर लौंगमिश्रित दशमूल क्वाथ की भावना दें और अच्छी तरह मर्दन करें। फिर अवशिष्ट औषधियों को डालकर ६ घण्टा घुटाई कर २-२ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया में शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

अपतन्त्रक--योषापस्मार--की यह महौषधि है। असम्बद्ध बोलना, बेहोश होना, रोना, चिल्लाना अथवा अर्धज्ञान की स्थिति में पड़ा रहना आदि लक्षणों में इसका प्रयोग होता है। अकस्मात् पेट में इतना तेज दर्द का अनुभव होना कि मानों प्राणान्त हो जायगा। दौरे के समय ऐसा कहना कि उस पर कोई भूत या प्रेत बैठ गया है अथवा इससे मिलनेवाली बातों का कहना। ये सारे लक्षण स्त्रियों, बच्चों तथा युवावर्ग के होने पर यह औषधि पूर्ण सफलता के साथ काम करती है। जटामांसी ९ माशा, आसगन्ध ३ माशा, खुरासानी अजवायन ३ माशा को ३ छटांक पानी में औटाकर ४ तोला रखकर छानकर इसके अनुपान में देना चाहिये।

अपतन्त्रकारि रस--बृहत्

योगद्रव्य--

मकरध्वज ६ माशा, मुक्तापिष्टी ६ माशा, केशर ६ माशा, स्वर्ण भस्म ३ माशा, जुन्द वेदस्तर ३ माशा, अम्बर ३ माशा, कस्तूरी १।। माशा, दरुनज अक्रवी, खुरासानी अजवायन, शुद्ध गांजा, नरकचूर प्रत्येक ६-६ माशा, वहमनसुर्ख, बहमन सुफेद, जटामांसी, लौंग, जायफल प्रत्येक ३-३ माशा, जावित्री, छोटी इलायची, छोटी पीपल, सोंठ बेतरा, तालीश पत्र प्रत्येक १।।-१।। माशा।

निर्माणविधि--

वस्त्रछन औषधि चूर्ण के साथ सूक्ष्म मर्दन की हुई मकरध्वज, स्वर्ण भस्म आदि दवाओं को पूर्वोक्त विधि से दशमूल लौंग के क्वाथ की भावना देकर अच्छी तरह मर्दन करें। घुटाई अच्छी तरह हो जाने पर केशर कस्तूरी, जुन्दवेदस्तर और अम्बर को डालकर आवश्यक क्वाथ देकर ६ घण्टा घोटकर १।।-१।। रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

अपतन्त्रक रोग के समस्त लक्षणों पर यह पूर्ण सफल महौषधि है। मानसिक अस्थिरता, बेचैनी, हृदय दौर्बल्य, अवसाद आदि बीमारियों में भी इससे अच्छा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाभ होता है। जिन स्त्री-पुरुषों के साधारण से कारण से स्नायविक विकार परिदृष्ट होते हैं ऐसे क्षेत्र में इससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। इसे पूर्वोक्त योग में उल्लिखित अनुपान से प्रयुक्त करना चाहिये। लक्षण सामान्य रहने पर इसकी १-१ वटी दूध के साथ देनी चाहिये।

अभ्र रसायन

योगद्रव्य--

अन्यून शतपुटी अभ्रक भस्म	१	तोला
श्वेत मल्ल	१	तोला

निर्माणविधि--

दोनों औषधियों को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर पलाण्डु स्वरस देकर घोटकर टिकिया बना कर सुखा लें। इसे एक लोहे के तवे पर रखकर नीचे मन्दी-मन्दी आंच दें और टिकिया पर ब्राण्डी शराब का बूँद-बूँद चोबा दें। इस तरह एक बोतल ब्राण्डी शराब का चोबा दें। अनन्तर नीचे उतार कर शीतल कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

वाजीकर औषधियों में इसका विशिष्ट स्थान है। चौथाई रत्ती से आधी रत्ती की मात्रा में दूध की मलाई के साथ इसे प्रयोग करना चाहिये। इसके प्रयोग की अवधि तीन से चार सप्ताह होती है। इसका प्रयोग शीतकाल में करना अधिक हितावह होता है। अत्यन्त आवश्यक होने पर अन्य ऋतुओं में भी शीतोपचार के साथ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

अमर रस

योगद्रव्य--

ब्राह्मी, लौंग, जायफल, जटामांसी, जावित्री, शतावर, आसगन्ध, मस्तकी-रूमी, शंखपुष्पी, बलामूल, खुरासानी अजवायन प्रत्येक २-२ तोला, नागकेशर, पीपलामूल, तालीशपत्र, दालचीनी, अकरकरा, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, खैरसार, संभालु बीज, तेजबल प्रत्येक १-१ तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्रे छाल, बहेड़ा छाल, आमला, अजवायन, कुलिञ्जन, मोथा, कूठ, चव्य, चित्रक, धनियाँ, विडंग प्रत्येक ½-½ तोला, समगन्धकी कज्जली ४ तोला, लौह भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा १ तोला, प्रवालपिष्टी, १ तोला, मुक्तापिष्टी ½ तोला केशर ½ तोला, अम्बर ३ माशा कस्तूरी १।। माशा, स्वर्ण वर्क १० अदद,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चाँदी वर्क २० अदद, बीजरहित मुनक्का १० तोला, ईंख का गुड़ १० तोला एवं मधु आवश्यकतानुकूल।

निर्माणविधि—

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। मुनक्काओं के बीज निकाल कर महीन पीस लें। भस्मों को खरल में डालकर घोटें और उनके साथ एक-एक वर्क डालते हुए उनको अच्छी तरह खरल करें। केशर, अम्बर, कस्तूरी को गुलाबजल में घोट कर भस्मों में मिलावें। फिर इनके साथ औषधि चूर्ण और मुनक्काओं को मिलाकर मर्दन करें। अनन्तर गुड़ मिलाकर दृढ़ मर्दन कर तीन-तीन रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

यह योग आयुर्वेद की उन दवाओं में से है जिन्हें अमृतोपम औषधि कहा जाता है। शरीर का ऐसा कोई अवयव नहीं जिस पर इसकी लाभप्रद क्रिया न होती हो। अपस्मार, उन्माद, अनिद्रा, शिरःशूल, शिरोधूर्णन, तिमिर, कर्णनाद, रक्तचाप अनियमितता, हृच्चञ्चलता, वातज हृच्छूल, पक्षाघात, मन्यास्तम्भ, प्रलाप, उर्ध्व-वात, योषापस्मार, अपतन्त्रक, विवमिषा, पित्तावृत वातविकार, करपाद तल प्रदाह, आक्षेप आदि वात तथा पित्तज विकारों में यह शीघ्र फल देनेवाली महौषधि है। इसके प्रयोग से बढ़े हुए विकारों पर जहां शामक प्रभाव होता है वहां शरीरस्थ स्नायुमण्डल तथा अन्य मूल धातुओं को शक्ति प्राप्त होती है। जिन व्यक्तियों के स्थायी रूप से वात विकार बने रहते हैं, उनके लिए यह औषधि ईश्वरीय वरदान है। इसके अनुपान में शतावरी स्वरस मधु, जटामांसी फाण्ट मधु, लौंग इलायची, मिश्री का घासा आदि दिये जाते हैं।

अरुणोदय रस—लघु

योगद्रव्य—

रससिन्दूर, स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, अकीक भस्म, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक १-१ तोला, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म, विषाण भस्म, आबरेशम, वंशलोचन, सालम पंजा प्रत्येक ६-६ माशा, गिलोय सत्व, रूमीमस्तकी, छोटी इलायची के बीज, छोटी पीपल, दालचीनी एवं केशर प्रत्येक ३-३ माशा।

निर्माण-विधि—

आबरेशम को कैंची से महीन काट लें तथा काष्टौषधिषों का वस्त्र छन चूर्ण तैयार करके अच्छी तरह खरल में घुटी भस्मों के साथ मिलाकर खूब मर्दन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फिर शिलाजीत मिलाकर दशमूल क्वाथ १ तोला, शतावरी $^1/_2$ तोला एवं अर्जुन-छाल $^1/_2$ तोला का क्वाथ देकर दो दिन तक घुटाई करे। अनन्तर केशर को अलग से गुलाब अर्क से घोटकर इसमें मिलावें और चार घण्टा घोटकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग शरीरस्थ शक्ति के मूलस्तम्भ हृदय को बल प्रदान करने और रक्त के लाल कणों को विकसित करने में वस्तुतः अरुणोदय है, जिसके सेवन के बाद इस तरह के रोगों का अन्धकार कभी ठहर नहीं सकता। इससे रक्त कणों को बल प्राप्त होकर अरुणिमा का उदय हो जाता है। और शरीर के सभी प्रमुख अवयवों को स्वस्थता प्राप्त होती है। इसको १ से २ वटी की मात्रा में रोगानुसार अनुपान भेदों से प्रयुक्त करना चाहिये।

अरुणोदय रस—बृहत्

योगद्रव्य--

मकरध्वज, अभ्रकभस्म, लौह भस्म, वंगभस्म अकीक भस्म, शुद्ध शिलाजीत, प्रवाल भस्म, चाँदी वर्क प्रत्येक १-१ तोला, मुक्तापिष्टी, स्वर्ण वर्क, विषाण भस्म, केशर, आबरेशम, वंशलोचन, रूमीमस्तकी, गुलञ्चसत्व, छोटी पीपल, छोटी इलायची के बीज, सालम पंजा, दालचीनी प्रत्येक ६-६ माशा।

निर्माण और और उपयोग विधि--

पूर्व योग के समान ही इसका निर्माण किया जाता है और इसका उपयोग भी उसी प्रक्रिया से किया जाता है। किन्तु स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी जैसी उच्च दवाओं के अधिक होने तथा विशिष्ट औषधियों के अधिक वजन में होने से इसकी क्रिया-शीलता और क्षेत्र दोनों ही विस्तृत हैं। हृदय, मस्तिष्क, यकृत, प्लीहा, पाचक संस्थान, शुक्रसंस्थान, मूत्राशय आदि शरीर के प्रमुख अवयवों को इससे बल प्राप्त होता है और रक्त का नूतनीकरण होकर रोगी के मुख पर अरुणिमा का उदय हो जाता है। इसे रोगानुसार उचित अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

अष्टादशाङ्ग लौह

योगद्रव्य--

सोंठ १ तोला, मरीच १ तोला, पीपल छोटी १ तोला, लाल चित्रक की जड़ की छाल १ तोला, विडंग १ तोला, नागरमोथा १ तोला, वहेड़ा छाल १ तोला, आमला १ तोला, हर्रछाल २ तोला, रोहितक छाल २ तोला, कुटकी २ तोला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कालमेघ ४ तोला, कसीस भस्म ३ तोला, मण्डूर भस्म ६ तोला एवं लौह भस्म ९ तोला।

निर्माण विधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रपूत चूर्ण करलें। भस्मों को खरल में डालकर अच्छी तरह घोटकर उपरोक्त चूर्ण मिलाकर कुलेखड़ा, पुनर्नवा एवं कालमेघ की तीन-तीन भावनाएं देकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह शुष्क कर लें।

उपयोग, मात्रा और अनुपान--

यकृत् वृद्धि रोग की यह विशिष्टतम महौषधि है। इससे बढ़ा हुआ यकृत क्रमश: अपनी स्वाभाविक स्थिति में आजाता है। साथ-साथ यकृत् वृद्धि के कारण पैदा हुए विकारों का भी इससे शमन होता है। रक्तात्पता, हस्त पादादिकों पर शोथ, जलोदर में अच्छा लाभ करता है। यकृत क्रिया हीनता, प्लीहा वृद्धि में पूर्ण फलप्रद है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में कुलेखड़ा रस मधु, पुनर्नवा स्वरसमधु, बेलपत्ता रस, मरीच चूर्ण, पुनर्नवाष्टक क्वाथ, मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

आमवातेश्वर रस

योगद्रव्य--

हिंगूल २ तोला, श्वेत सोमल ½ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा, जायफल, जावित्री, लौंग, दालचीनी, सोंठ, मिर्च, पीपल, अजवायन, अकरकरा, चित्रक मूल, हर्रे छाल, बहेड़ा छाल एवं आमला प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माणविधि--

हिंगुल को तीन घण्टे तक गोदुग्ध में दोलायन्त्र द्वारा स्वेदित करें। फिर खरल में डालकर आर्द्रक, बंगलापान, पलाण्डु एवं रसोन स्वरस की सात-सात भावना दें। प्रति दिन ६ घण्टा अवश्य घोटना चाहिये। सोमल को दोला यन्त्र द्वारा गोदुग्ध में ६ घण्टा तक स्वेदित कर लें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करे। फिर सोमल को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर हिंगुल को डाले तथा मर्दन करें। अनन्तर औषधियों का चूर्ण डालकर आर्द्रक स्वरस की तीन भावनाएं देकर १ -१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग आमवात की विशिष्टतम औषधि है। इसके प्रयोग से आम रस तथा वायु दोनों का पाचन होकर इस महाव्याधि में अच्छा उपकार होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घुटनों तथा जानुओं में रहनेवाला शोथ इसके सेवन से क्रमशः ठीक हो जाता है। इसे १ से २ गोली की मात्रा में महारास्नादि, रास्ना दशमूल, रास्ना सप्तक गूँड़ामलकी आदि क्वाथों से आर्द्रक स्वरस मधु, बेलपत्ता रस, मरीच चूर्ण आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिये।

आरोग्य रक्षक रस

योगद्रव्य--

शुद्ध शिलाजतु २० तोला, शुद्ध गुग्गुलु २० तोला, नीमगिलोय १० तोला, हर्रेछाल १० तोला, बहेड़ाछाल ५ तोला, आमला ५ तोला, सोंठ, मरीच, पीपल छोटी, निशोथ छाल, छोटी हर्रे, मीठा चिरायता, सैन्धव नमक, संचर नमक, कलमी शोरा, चित्रक मूल छाल, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक प्रत्येक २।।-२।। तोला, लौहभस्म अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, प्रवालपिष्टी, अकीक भस्म या पिष्टी, शुक्ति भस्म या पिष्टी, रौप्य भस्म या वर्क, वंगभस्म, अमृता सत्व प्रत्येक १।-१। तोला।

निर्माणविधि--

शिलाजतु और गुग्गुलु की शुद्धि प्रचलित विधि से कर लें। काष्टौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। पारद गन्धक की कज्जली बनावें। गुग्गुलु एवं शिलाजतु को त्रिफला जल से सिक्त कर कूटें। फिर भस्मों तथा औषधि चूर्ण को मिलाकर गुग्गुलु योग की तरह चोट दें। तैयार होने पर ४-४ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सुखा लें।

उपयोग और तद्विधि--

शरीर की रोग प्रतिबन्धक शक्ति को सुरक्षित रखना और उसकी अल्पता न होने देना इस योग का प्रधान कार्य है। यकृत सहित उदर की क्रिया को सुव्यवस्थित रखना, रस प्रक्रिया को बल देना, मलपुरः सरण क्रिया की वृद्धि करना आदि इसके प्रधान कार्य हैं। सतत सेवन द्वारा वृद्धावस्था में पैदा होने वाले विकारों का अवरोध तथा शमन करता है। १ से २ वटी की मात्रा में गोदुग्ध से इसका सेवन करना चाहिये।

उत्फुल्लिका विद्रावण रस

योगद्रव्य--

गोरोचन ६ माशा, मुसब्बरसफा ६ माशा, रेवत सत्व ६ माशा, हीराहींग अशुद्ध ६ माशा, सुहागा फुलाया ६ माशा, पीपल छोटी ६ माशा, काली मरीच ६ माशा, काला नमक ६ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माणविधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करके अन्य दवाओं के साथ खरल में डालकर थूहर के पत्तों के रस से अच्छी तरह घोटकर आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, मात्रा और अनुपान--

वालकों के पसली चलने के रोग में यह योग चमत्कार पूर्ण लाभ प्रदान करता है। छोटे वच्चे सर्दी से पैदा हुए श्लेष्मा को खाँसी के सहारे निकाल नहीं सकते। फेफड़ों में उसकी उपस्थिति से श्वास मार्ग में टान पैदा होकर श्वास लेने के आयाम की वृद्धि होकर वक्षस्थल में गड्ढे पड़ने लग जाते हैं, आधुनिक रोग विज्ञान में इसे ब्राङ्कोन्यूमोनिया कहा जाता है।

रोग की कठिनावस्था में इसे ३-३ घंटे बाद थूहर के पतों के रस मधु के साथ प्रयोग करना चाहिये। इससे बच्चे के वमन होकर सारा श्लेष्मा बाहर निकल जाता है और बच्चा एक दिन में रोगमुक्त हो जाता है। रोग का उतना कड़ापन न रहे या थूहर पत्ता न मिले तो इसे पान रस मधु से दिया जाता है। इससे भी पूर्वोक्त तरीके से कफ निकलता है। वमन कराने की ज्यादा आवश्यकता रहे तो दवा के साथ रेवत सत्व $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में और मिलाना चाहिये। इससे वमन के साथ १-२ विरेचन भी हो जाते हैं। आवश्यक रहने पर ज्वर कास आदि की दवाओं का प्रयोग भी करना होता है।

उन्माद भञ्जन रस--लघु

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, स्वर्णमाक्षिक भस्म १ तोला, शुद्ध शिलाजीत १ तोला, माल कांगनी १ तोला, जटामांसी २ तोला, खुरासानी अजवायन २ तोला, कपूर कचरी २ तोला, उदसलीव छोटा २ तोला एवं सर्पगन्धा मूल २ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। पारद गन्धक की कज्जली के साथ खरल में डालकर रास्ना, वच, बलामूल, ब्राह्मी, शतावरी एवं शंखपुष्पी की ३-३ भावनाएँ देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना कर सुखा लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

उन्माद रोग की प्रत्येक अवस्था में यह हितकर महौषधि है। उत्तेजना की अवस्था में तो रामबाण का सा काम करता है। असन्तुलित स्नायुओं को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वस्थता प्रदान कर मस्तिष्क की क्रिया को स्वाभाविक स्थिति पर ले आता है। अधिक उष्मा के कारण पैदा होनेवाले मियादी ज्वर के प्रलाप पर भी यह अच्छा फल दर्शाता है। इसके प्रयोग से प्रलाप ही कम नहीं होता साथ-साथ रोगी संज्ञा हीनता की स्थिति से बाहर आजाता है। उन्माद रोग में इसका प्रयोग १ से ४ गोलियों तक तथा प्रलाप में १ से २ गोलियों तक शैव रसायन शर्बत अथवा अर्क, तगरादि क्वाथ, ब्राह्मी स्वरस, मण्डूक पर्णी स्वरस, शंखपुष्पी क्वाथ आदि के साथ करना चाहिये।

उन्माद भञ्जन रस--बृहत्

योगद्रव्य--

मकरध्वज, प्रवाल पिष्टी, संग यशव पिष्टी शुद्ध शिलाजीत १-१ तोला, स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी, शंख पुष्पी, ब्राह्मी, कपूर कचरी, उदसलीव छोटा, जटामांसी, खुरासानी अजवायन, आसगन्ध प्रत्येक ६-६ माशा, श्वेत वच, कूठ, तगर, छोटी इलायची, जायफल, निर्विषी प्रत्येक ३-३ माशा एवं सर्पगन्धा २ तोला।

निर्माणविधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। अच्छी खरल में मकरध्वज को डालकर घोटें। क्रमश: स्वर्ण, मुक्ता, प्रवाल तथा यशव की भस्म एवं पिष्टियों को डाल कर घोटें। फिर शिलाजीत सहित औषधि चूर्ण को डालें और तगरादि क्वाथ की ३ भावनाएं देकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

उन्माद रोग के समस्त भेदों पर इसका अप्रतिहत प्रभाव है। उत्तेजना तथा अवसाद दोनों स्थितियों में इसका समान लाभ मिलता है। असन्तुलित स्नायुमण्डल पर शामक प्रभाव के कारण उनकी स्थिति को स्वाभाविकता प्राप्त हो जाती है। असम्वद्ध प्रलाप, धीधृति स्मृति का विपर्यास इसके प्रयोग से ठीक होते हैं।

उपदंश कुठार रस

योगद्रव्य--

शुद्ध रसकपूर, श्वेत कत्था, छोटी इलायची के बीज, लौंग प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माणविधि--

रसकपूर को १४ बैंगुन में १-१ करके पकावें। फिर पोटली बद्ध कर घृत में स्वेदित करे। फिर खरल में डालकर मर्दन कर सूक्ष्म औषधि चूर्ण मिला कर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घोंटें। अनन्तर इन्द्रायण फल स्वरस की १० भावनाएं देकर २-२ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

यह योग उपदंश रोग और तज्जनित रक्त दोषों की पूर्ण फलप्रद औषधि है। यह योग रस कपूर घटित होने पर भी मुँह नहीं आता है। इसे मुनक्का में रखकर, हलवा मलाई में लपेट कर १ से १॥ सप्ताह तक दिया जाता है। पथ्य में नमक वर्जित है। दूध-भात, दूध-फुल्का, हलवा आदि देने चाहिये।

उपदंश वज्र रस

योगद्रव्य—

रस कपूर बाजारू २ तोला, लौंग चूर्ण २ तोला, बड़ी इलायची के बीज २ तोला, स्वच्छ श्वेत कत्था ४ तोला, छालिया सुपारी ५ तोला, गुलाबजल ३० तोला एवं इन्द्रायण फल स्वरस यथावश्यक।

निर्माणविधि—

सुपारी को मोटी २ कतर लें, फिर इसके बीच में रस कपूर को रख कर पोटली बनावें। अनन्तर दोलायन्त्र द्वारा चार सेर दूध में पकावें। पात्र मिट्टी का होना चाहिये। दूध गाढ़ा पड़ने पर स्वाङ्ग शीतल कर रस कपूर को निकाल लें। बाद में खरल में डालकर मर्दन कर गुलाब जल डालकर घोंटें। इस तरह सारा गुलाब जल लग जाने पर शुष्क कर लें। फिर लौंग तथा कत्था चूर्ण डालकर इन्द्रायण फल स्वरस की पाँच भावनाएँ देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सुखा लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

यह योग उपदंश और उष्णवात में अमोघ फल देनेवाला है। सुबह-शाम एक से दो गोली बीज निकाली हुई मुनक्का में रख कर शीतल जलसे निगला देना चाहिये। इसका प्रयोग सात दिन किया जाता है। आवश्यक होने पर तीन या सात दिन और दिया जा सकता है। नमक विहीन पथ्य देना चाहिये। दूध-भात, दूध-रोटी, मीठा दलिया, हलवा आदि देने चाहिये। बहुधा रस कपूर के योगों से मुँह आ जाता है, किन्तु इससे ऐसा नहीं होता।

उष्ण वातारि रस

योगद्रव्य—

रसकपूर, केशर, लौंग, छोटी इलायची के बीज, श्वेतमिर्च, जावित्री, श्वेत-चन्दन प्रत्येक १-१ तोला, बंगला पानों की डण्डी ताजा ४ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माणविधि—

रसकपूर को पतले कपड़े में बाँध कर नीले रंग के बड़े बैंगन में गड्ढा बनाकर पोटली को उसमें रखकर बैंगन के कटे हिस्से को ऊपर देकर कपड़ मिट्टी कर मन्दाग्नि से पकावें। बैंगन का पाक भरता बनने की तरह का हो जाय तब शीतल कर रस कपूर को निकाल लें। उसी तरह दूसरे बैंगन में भी पकावें। इसी क्रम से चौदह बैंगनों में पकावें। इक्कीस बार पाक करना और भी उत्तम रहता है। फिर त्रिफला के काढ़े में रस कपूर का दोलायन्त्र से ३ प्रहर तक स्वेदन करें। अनन्तर २० तोला घृत में भी उपरोक्त विधि से स्वेदन करना चाहिये। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। बाद में रस कपूर को खरल में डाल कर महीन करके १-१ पान की डण्डियों को डालते हुए घोंटें। अनन्तर केशर डालकर मर्दन करें। सर्व शेष में औषधि चूर्ण डालकर आवश्यक गुलाब जल देकर घोंटकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग-अनुपान और मात्रा—

उष्णवात-गनोरिया—तथा उष्णवातज रोगों में अमोघ काम करने वाली यह औषधि है। रोग नूतन हो या पुरातन इसके सात दिन के प्रयोग से निर्मूल हो जाता है। आवश्यक समझने पर एक सप्ताह तक इसका अधिक प्रयोग किया जा सकता है। सुबह-शाम १-१ गोली को बीज निकाली हुई मुनक्का में रखकर जल के साथ निगलवा देना चाहिये। नमक विहीन आहार देना चाहिये। दूध-भात, दूध-रोटी, हलवा, छेना की चीजें पथ्य हैं। उष्णवात से पैदा होने-वाली गठिया, रक्त विकारों का भी इससे शमन होता है और रोग स्थायी रूप में ठीक हो जाता है।

कर्पूरेश्वर रस

योगद्रव्य—

शुद्ध हिंगुल १ तोला, नागरमोथा १ तोला, इन्द्रजौ १ तोला, जायफल १ तोला, श्वेत फिटकरी फूल $^{१}/_{२}$ तोला, सुहागा फूल $^{१}/_{२}$ तोला, अतीस मीठा $^{१}/_{२}$ तोला, धायफूल $^{१}/_{२}$ तोला, शुद्ध अहिफेन २ तोला एवं कपूर १ तोला।

निर्माणविधि—

औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करके खरल में डाल कर अन्य वस्तुएं मिलाकर अनन्त-मूल स्वरस अथवा अनन्त मूल के क्वाथ की भावना देकर कपूर मिलाकर चार घंटा घोंटकर १।।-१।। रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अधिकार, अनुपान और मात्रा—

यह योग अतिसार की पक्वावस्था में प्रयुक्त होता है। आमातिसार में जब मल के साथ या बिना मल के मवाद और रक्त आने लगता है तब इसके प्रयोग से अच्छा लाभ मिलता है। इससे आन्त्र में हुए क्षतों की आपूर्त्ति होकर खून बन्द होता है और साथ-साथ अतिसार का भी शमन होता है। बार-बार पैदा होनेवाली ऐंठन की उग्रता इसके प्रयोग से शीघ्र कम होती है।

कम्बू कल्प

योगद्रव्य—

शंख सम्पूर्ण १ नग, शुद्ध हरताल तपकी १ तोला, शुद्ध अफीम १ तोला, अजवायन ४ तोला।

निर्माण-विधि—

शंख को बाहर और अन्दर से साफ करके उपरोक्त अजवायन में से आधी अजवायन को उसमें रखें। हरताल और अफीम के टुकड़े उसके ऊपर रखें। बची अजवायन डालकर शंख को भर दें एवं अच्छी तरह कपड़ मिट्टी कर दें। सूखने पर फिर कपड़मिट्टी करें और शुष्क होने पर गजपुट में फूंक लें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल कर शंख सहित समस्त दवा को पीसकर सुरक्षित रख लें।

उपयोग और तद्विधि—

पाचक यन्त्रों की विकृति के कारण प्रतिदिन होनेवाले अपच के दस्त, भूख न लगना, उदर में वायु बनना, रस प्रक्रिया के बिगड़ जाने से शरीर का दुर्बल होता जाना, अतिसार लगने के दौरे होना आदि लक्षणों में इस योग का पर्पटी कल्प के समान प्रयोग किया जाता है। विशेषता यह है कि इसमें अन्न तथा जल छोड़ने नहीं पड़ते। दोनों समय सुपाच्य अन्न लेते हुए भी ३-४ सेर दूध का सेवन रोगी आसानी से कर लेता है। इसे २ से ४ रत्ती की मात्रा में २ माशा सितोपलादि चूर्ण मधु से सुबह-शाम देना चाहिये। दवा सात्म्य हो जाने पर दुपहर के समय में भी दी जा सकती है। किन्तु ऐसी स्थिति में अधिक दूध लेने की आवश्यकता होगी।

कृष्ण भैरव रस

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, कृष्ण धतूरबीज, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अकरकरा, जायफल, जावित्री, तेजबल, दालचीनी, शुद्ध हींग एवं शुद्ध अहिफेन प्रत्येक १-१ तोला, केशर ६ माशा कस्तूरी ३ माशा।

निर्माणविधि--

पारद गन्धक की कज्जली करके अन्य औषधियों के सूक्ष्म चूर्ण के साथ मिलाकर ६ भावनाएँ आदीरस की दें। फिर केशर कस्तूरी मिला कर एक भावना आदीरस की देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

वात श्लेष्मज वेदना में यह चमत्कारिक औषधि है। शरीर के किसी भी अङ्ग में होनेवाली वेदना इसकी कुछ मात्राओं से ही शमन हो जाती है। प्रतिश्याय जनित अङ्ग मर्द में यह चमत्कारपूर्ण लाभ करता है। ग्रन्थिवात में इसका अच्छा उपयोग होता है। इसे १ वटी की मात्रा में आदीरस मधु, दशमूल क्वाथ मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

कालकासानल रस

योगद्रव्य--

कस्तूरी ३ रत्ती, केशर, गोरोचन, जायफल, जावित्री, लौंग, दालचीनी, सोंठ, मिर्च, पीपल, खैरसार, शोवा हर्रे १।। माशा, अगरसरी हर्रे की छाल १।। माशा, कंटकारीफल ३ माशा, भिस्की शराब ५ तोला।

निर्माणविधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। कस्तूरी, केशर तथा गोरोचन को खरल में डालकर भिस्की के साथ घोंटें। फिर औषधि चूर्ण को मिलाकर अच्छी तरह मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

बच्चों की बड़ी खाँसी पर यह योग अच्छा काम करता है। सेहुण्ड पत्ता रस मधुपान रस मधु से दिन में तीन दफे इसका प्रयोग करना चाहिये। दिन में ४-५ बार १-१ गोली चुसाने से भी लाभ होता है।

कालविजय रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद ६ माशा, शुद्ध गन्धक ६ माशा, सहस्रपुटित अभ्रक भस्म ६ माशा, सुहागा पुष्प ६ माशा, कृष्णसर्प विष १।। माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि—

सर्वप्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें। फिर आदी के रस के साथ सर्प विष को डालकर अच्छी तरह मर्दन करें। यह ध्यान रखें कि दवा से किसी अंग का स्पर्श न हो। सर्प विष अच्छी तरह घुट जाने पर अभ्रक भस्म तथा सुहागा को क्रमशः डालते हुए अच्छी तरह घोंटें। फिर दो भावनाएं आदी के रस की और दें। अनन्तर तीन भावनाएं दशमूल क्वाथ की देकर चौथाई रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिये कि हाथों को पूर्णतया साफ करके बनावें और बाद में भी अच्छी तरह सोडा, साबुन आदि से सफा कर लेवें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

आसन्न मृत्यु रोगी को मृत्यु मुख से निकालने का यह चमत्कारी योग है। शीताङ्ग सन्निपात, विशूचिका की अन्तिम अवस्था, धनुर्वात जैसी भयंकर बीमारियों में इसका प्रयोग होता है। इनके अलावा जिन रोगों में सर्प विष प्रयोग आवश्यक होता है, उनमें इसका प्रयोग निःसंकोच किया जा सकता है। इसे १ से २ गोलियों की मात्रा में रोगानुसार विविध अनुपानों से प्रयोग किया जाता है। शीताङ्ग सन्निपात तथा विशूचिका की कठिनावस्था—हिमाङ्गता में इसकी कुछ मात्रायें ही उष्मा को पैदा कर देती हैं। इसके प्रयोग से उष्मा की अधिकता हो जाने पर शीतोपचार विधेय होता है। धनुस्तम्भ में धनुर्वातारि क्वाथ के साथ इसका प्रयोग ३-३ घण्टा से करना चाहिये। इससे व्याधि का शमन होकर रोगी आरोग्योन्मुख होता है। ऐसे रोगी को वृ० विष्णुतैल, दशमूल तैल, महाशतावरी तैल एवं महानारायण तैल आदि को पिलाना चाहिये और सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करनी चाहिये।

कासकल्याण रस

योगद्रव्य—

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध टंकण, लवंग, पीपल, अकरकरा, मुलैठी, हल्दी कूठ, कपूर कचरी प्रत्येक १-१ तोला, केशर १ तोला एवं गोरोचन $^1/_2$ तोला।

निर्माण-विधि—

औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण के साथ अन्य दवाओं को खरल में डालकर आर्द्रक रस तथा अजाक्षीर की ३-३ भावनाएँ देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

श्वास संस्थान के विकारों पर यह पूर्ण सफल औषधि है। दूषित श्लेष्मा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के कारण पैदा होनेवाले कास पर यह शीघ्र क्रिया करता है। विकृत कफ का निष्कासन करके रोग को स्थायी रूप से ठीक करता है। बालकों के होनेवाली बड़ी खाँसी में इससे बहुत अच्छा लाभ होता है। इसके अतिरिक्त प्रायः स्थायी रूप से रहनेवाले प्रतिश्याय एवं श्लेष्म विकारों पर इसका सफल प्रयोग होता है। बालकों को आधी से एक वटी की मात्रा में मुक्तावर्षी रस मधु, स्नूही पत्र स्वरस मधु, पान रस मधु से इसे देना चाहिये। वयस्कों को स्वतन्त्र रूप में अथवा अन्य दवाओं के साथ उचित अनुपानों के साथ देना चाहिये।

केशरादि रस

योगद्रव्य--

केशर १ तोला, शुद्ध हींग १/२ तोला, शुद्ध अहिफेन १/२ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला, लौंग १ तोला, जायफल १ तोला एवं छोटी इलायची १ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करके अन्य दवाओं के साथ खरल में डालकर पोस्त-ड़ोड़ा क्वाथ की ३ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग नूतन अतिसार से प्रारम्भ कर संग्रहणी तक आवश्यकतानुसार प्रयुक्त होता है। इसकी स्वल्प मात्राएँ ही मल को बाँधती हैं और आध्मान नहीं हो पाता। मियादी ज्वरों में अतिसार होने पर यह चमत्कारी काम करता है। साथ ही ज्वर में कोई विकृति नहीं आती। ज्वरावस्था के प्रलाप पर भी इसकी सम्यक् क्रिया होती है। आमातिसार में आम रेचन कराके इसका प्रयोग करने से ऐंठन सहित अतिसार का शमन होता है। ज्वरातिसार में भूना जीरा का चूर्ण मधु, मुस्तक स्वरस मधु आदि अनुपानों से १ से २ वटी की मात्रा में इसका उपयोग होता है।

उदर शूल में तत्काल शान्ति के लिए भी यह प्रयुक्त होता है। इस स्थिति में सोंठ तथा काला नमक के घासा से अथवा दशमूल, एरण्डमूल एवं सोंठ के काढ़े से इसका प्रयोग करना चाहिये।

केशव कल्प

योगद्रव्य--

शुद्ध भल्लातक ८तोला, रस पर्पटी—समान गन्धक की ४तोला, सोंठ ४तोला, जायफल २ तोला, अजवायन २ तोला, छोटी हर्रे २ तोला; छोटी पीपल २ तोला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेतजीरा १ तोला, सैन्धव नमक १ तोला, शुद्ध हींग १ तोला, विड़नमक १ तोला, चव्य $^{1}/_{2}$ तोला, चित्रक $^{1}/_{2}$ तोला, पीपलामूल $^{1}/_{2}$ तोला, लौंग $^{1}/_{2}$ तोला, जावित्री $^{1}/_{4}$ तोला, श्वेत सरसों $^{1}/_{4}$ तोला, विडंग $^{1}/_{4}$ तोला एवं दाना मेथी $^{1}/_{4}$ तोला।

निर्माण-विधि--

समान भाग शुद्ध पारद गन्धक की कज्जली करके पर्पटी वना लें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। भल्लातक को पोटली वद्ध करके गोदुग्ध में स्वेदित करें। फिर गरम जल से धोकर सुखा कर सरौते से उनके वृन्त काट लें। लोहे के हिमाम दस्ता में उपरोक्त वजन के भल्लातकों को डालकर कूटें। गाय का ४ तोला घृत डाल लें। भल्लातक सूक्ष्म हो जाने पर थोड़ा-थोड़ा औषधि चूर्ण डालें और कूटते रहें। इस तरह चूर्ण शेष हो जाने पर अति सूक्ष्म मर्दन की हुई पर्पटी को डालें तथा उसी तरह कूटें। सव दवाएँ एक रस हो जाने पर निकाल कर शीशी में रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

साम ग्रहणी रोग की यह विशिष्टतम औषधि है। प्रति दिन कई बार आम के दस्त होना, बीच-बीच में बीमारी का दौरा हो जाना, शरीर का कृश होता जाना, तलपेट में मीठा-मीठा शूल बना रहना, क्रमशः अग्निमान्द्य की स्थिति बनते जाना, खाना खाने पर पेट का भारी होना और शाम तक आध्मान हो जाना आदि तकलीफों में इसका प्रयोग दही के साथ किया जाता है। इसे ४ रत्ती से ८ रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम एक पाव दही के साथ दिया जाता है। अरुचि अधिक रहने पर प्रारम्भ में दही कम भी दिया जा सकता है। दही में चतुर्थांश जल देकर अधभूना जीरा, अधभूनी सोंठ और सैन्धव नमक मात्रा से डालना चाहिये। दही देने का यह क्रम रात तक चलाया जाता है। भोजन के समय रुक्ष अन्न के फुलके दही के ही साथ दिये जाते हैं। अति आवश्यक होने पर जल दिया जा सकता है। रोगी को अधिकांश समय विश्राम करना चाहिये। इससे रोग निवृत्ति के साथ गया हुआ वजन वापिस बढ़ जाता है। रोग स्थायी रूप से ठीक हो जाता है। इस कल्प को साधारण तौर पर १॥ से २ महीनों तक कराना चाहिये। आवश्यक मालूम होने पर और अधिक समय तक भी कराया जा सकता है। कल्प सेवन के बाद भी रोगी को दही की तरफ अपनी प्रवृत्ति बनाये रखना हितावह होता है। इससे आंतों के विकार स्थायी रूप से मिट जाते हैं और अखण्ड स्वास्थ्य प्राप्त हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्लैव्य विनाशन रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

श्वेत मल्ल २ तोला को २० कागजी निम्बुओं के रस से मर्दन कर गोल टिकड़ी बनाकर शुष्क कर लें। कुमड़ा करीब १ सेर का लेकर उसमें छिद्र बनाकर उक्त टिकिया को उसके अन्दर रखकर छिद्र को कटे हुए टुकड़े से बन्दकर ऊपर कपड़ मिट्टी कर छाणों की भूमल में दबाकर रखें। जब भर्ता हो जावे तब बाहर निकाल कर सोमल की टीकड़ी को बाहर कर खरल में डाल कर घृतकुमारी रस से घोंट कर टिकिया बनाकर सुखा लें। फिर एक बड़े शराव में रखकर मन्द अग्नि पर चढ़ावें और उस पर उत्तम् शराब की १ बोतल का चोवा बूंद-बूंद करके दें। अग्नि बराबर मन्द ही रखें। चोवा शेष होने पर नीचे उतार कर शीतल कर पीस कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

पुरुष शक्ति हीनता की यह अमोघ औषधि है। इसे १ चावल से १/८ रत्ती की मात्रा में मलाई अथवा मक्खन के साथ ७ से १० दिन तक प्रातः काल देना चाहिये। घी दूध का सेवन पूर्ण मात्रा में कराना आवश्यक है। शरीर की निर्बलता का नाश होकर शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है और अखण्ड पुरुष शक्ति प्राप्त होती है। श्लेष्मज विकारों में भी यह बहुत ही फल प्रदान करता है।

क्लैव्यारि रस

योगद्रव्य--

सिंगरफ रूमी ४ तोला, बच्छनाग ४ तोला, भल्लातक २ तोला, मालकांगनी २ तोला, सरसों तैल ३ सेर।

निर्माण-विधि--

भल्लातक तथा मालकांगनी को कूट कर लुगदी बनावें। बच्छनाग को कूट कर सूरण के रस में पीस कर गोला बनावें। सिंगरफ को बच्छनाग के गोला में रखें। ऊपर से भल्लातक मालकांगनी की लुगदी को लपेट कर ऊपर से मोटा कपड़ा खूब मजबूती के साथ लपेट दें। एक बड़ी ताम्बे की देग में इसको रख कर उसमें ३ सेर कड़वा तैल डाल कर देग के ऊपर ढक्कन देकर उसपर बड़ा-सा पत्थर रख दें। नीचे ३ घण्टे तक मन्दी और ६ घण्टे तक तेज आँच दें। देगचे में से जोर से आवाज आने लगे तब खयाल रखें कि मुँह खुले नहीं। फिर आँच बन्द करके शीतल होने दें। अनन्तर गोला को निकाल कर सिंगरफ को अलग कर पोंछ लें और पीसकर रख लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि--

यह योग पुरुष शक्ति के पुनरुज्जीवन के लिए प्रयुक्त होता है। $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में मलाई अथवा मक्खन के साथ देना चाहिये। घी-दूध का उचित मात्रा में सेवन करना चाहिये। २० से ३० दिन तक इसका प्रयोग किया जाता है।

ग्रन्थिवातान्तक रस

योगद्रव्य--

शुद्ध रस कपूर १ तोला, केशर १ तोला, लौंग १ तोला, छोटी इलायची के बीज १ तोला, श्वेत मरीच १ तोला, जावित्री $^1/_2$ एवं बंगला पानों की डंडी ४ तोला।

निर्माण-विधि--

रस कपूर को खूब पतले कपड़े में बाँध कर एक एक करके चौदह बैंगुनों में पकावें। फिर गो-दुग्ध में दोलायन्त्र द्वारा स्वेदित करें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण कर लें। बंगला पानों की ताजी डंडियों को खरल में डाल कर घोटें। इनके साथ रस कपूर को भी डाल लें। फिर केशर मिलावें और घोटें। अनन्तर औषधि चूर्ण को डाल कर घोंटें। आवश्यक हो तो जल के छींटे देवें। अच्छी तरह घुट जाने पर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

उष्णवात और उपदंश के दूषित विषसे पैदा होनेवाले गठिया रोग की महौषधि है। इसके सेवन से रोग का समूल विनाश होता है। इसे दूध की मलाई, हलवा आदि के साथ प्रयोग करना चाहिये और दाँतों से चबाना नहीं चाहिये। मात्रा १ से २ वटी है। इसका प्रयोग एक से दो सप्ताह तक करना चाहिये और नमक न खाना चाहिये।

ग्रहणी गजकेशरी रस

योगद्रव्य--

हिंगुल संस्कारित ४ तोला, लौह भस्म २ तोला, कम्बू भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, वंग भस्म १ तोला, लौंग १ तोला, जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, सोंठ १ तोला, पीपलामूल १ तोला, चित्रक $^1/_2$ तोला, जीरा श्वेत $^1/_2$ तोला, जीरास्याह $^1/_2$ तोला, नागरमोथा $^1/_2$ तोला, छोटी इलायची $^1/_2$ तोला, अजवायन $^1/_2$ तोला, चव्य $^1/_2$ तोला, पीपल छोटी $^1/_2$ तोला, यवक्षार १ तोला, सज्जी क्षार १ तोला, सुहागा फूल १ तोला एवं सैन्धव नमक ४ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

सर्व प्रथम हिंगुल को वृन्तहीन भल्लातक २० तोला, खुरासानी अजवायन २० तोला, मालकांगनी २० तोला, गोघृत २० तोला, मधु २० तोला एवं एरण्ड-तैल २० तोला में पकावें। विधि यह है कि भल्लातक अजवायन एवं मालकांगनी को लोहे के हिमामदस्ता में कूटें। जब लुगदी हो जावे तब निकाल कर एक लोहे की कड़ाही में आधी बिछावें। उस पर हिंगुल को रखें और अवशिष्ट लुगदी उस पर बिछाकर उसके ऊपर घृत, तैल एवं मधु को क्रमशः डालें। नीचे आग जलावें। अग्नि को क्रमशः बढ़ावें। जब ऊपर में आग पकड़ ले तब युक्ति से उसे नीचे उतार दें। जब स्नेहांश जला हुआ मालूम दे तब किसी वस्तु से ढककर निर्वापित कर दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर हिंगुल को निकाल लें। यह संस्कारित हिंगुल कहा गया है। इसे खरल में डालकर मर्दन करें और इसके साथ भस्मों को डाल कर घोंटें। फिर वस्त्रछन औषधि चूर्ण को डालकर निम्बूस्वरस, आर्द्रक स्वरस की भावना देकर ३-३ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर आतप शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

संग्रहणी रोग की यह विशिष्टतम औषधि है। ग्रहणी विकार जनित अतिसार, आध्मान, अग्निमान्द्य, अरुचि, रस प्रक्रिया व्याघात, दौर्बल्य, रक्तहीनता आदि लक्षणों पर इससे विशिष्ट लाभ होता है। इसे स्वतन्त्र रूप में अथवा सहयोगी अन्य दवाओं के साथ मिश्रित करके प्रयुक्त किया है। मात्रा १ से २ वटी दी जाती है।

ग्रहणी मार्तण्ड रस

योगद्रव्य--

शुद्ध हींग १ तोला, स्वच्छ अहिफेन १ तोला, परिस्रुत स्वर्ण गैरिक ६ माशा।

निर्माण-विधि--

सर्व प्रथम हींग को खरल में डाल कर घोंटें। फिर अफीम मिला कर मर्दन करें। अनन्तर गैरिक डालकर घुटाई करें। अच्छी तरह घुट जाने पर जल के छींटे देकर चौथाई रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और औषधि--

संग्रहणी रोग तथा साम या निराम ग्रहणी विकारों की यह चमत्कारी औषधि है। पित्तानुबन्धी लक्षणों में तो और भी विशिष्ट लाभ करती है। इस योग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को देने की पद्धति यह है कि धनिया १० तोला को महीन कूटकर गोघृत २।। तोला के साथ मन्द अग्नि पर भूनें। स्वाङ्ग शीतल करके ५ तोला मिश्री का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर रख लें। सुबह एक गोली हल्के गरम जल से लें और उसके आधा घण्टा बाद १। तोला उपरोक्त धनिया मिश्री की पञ्जीरी लेवें। इस तरह प्रति २।।-२।। घंटों से पञ्जीरी लेते रहें। दवा केवल सुबह ही ली जायेगी। जब तक मल बँध न जावे तब तक सुबह-शाम दूध लेना चाहिये। इसके बाद इच्छानुकूल दही का प्रयोग करना चाहिये। भोजन में बिना घी की पतली रोटी, भात और हल्के शाकों का प्रयोग करना चाहिये।

जैसा कि ऊपर कहा गया है इससे पित्तज संग्रहणी में अच्छा लाभ होता है। पेट में गर्मी मालूम होना, बार-बार फूला हुआ मल आना, जी मिचलाना आदि लक्षणों में यह शीघ्र लाभ करता है। रोग की कठिन अवस्था में दवा का प्रयोग दोनों समय करना चाहिये। साधारण स्थितियों में दवा का प्रयोग बीस दिन और कठिनावस्था में चालीस दिन करना चाहिये।

ग्रहणी रसायन कल्प

औषधिद्रव्य और निर्माण--

अच्छा यशद आधा सेर लेकर कुलछी में डाल आग पर पिघलावें और अर्क दुग्ध में बुझाव दें। इस तरह सात बुझाव अर्क दुग्ध में तथा सात बुझाव घीकुमार रस में दें। अनन्तर छोटी कड़ाही में डालकर आग पर जलावें और पुनर्नवा का चूर्ण डालते हुए लोहे की कलछी से चलाते जावें। यशद की भस्म हो जाने पर नीचे उतार लें और पंखा से हवा देकर पुनर्नवा की राख को उड़ा दें। फिर यशद भस्म को निम्बू स्वरस से छोटकर टिकिया बनाकर फूँकें। इस तरह निम्बू स्वरस देकर सात पुट दें। बाद में तक्र की भावना देते हुए इक्कीस पुट दें। अनन्तर पीसकर रख लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

इसे एक रत्ती की मात्रा में जायफल, जावित्री लौंग के तीन रत्ती चूर्ण के साथ धारोष्ण दूध के अनुपान से दें। यह प्रयोग प्रातः काल ७ बजे करना चाहिये। इसके २ घंटा बाद तीन हिस्सा दही और १ हिस्सा जल को आलोड़ित करके उसमें सैन्धव नमक, भूना श्वेत जीरा और अधभूनी सोंठ का चूर्ण डालकर देना चाहिये। यह क्रम २-२ घण्टा बाद चलना चाहिये। दही की मात्रा रोगी की पाचन शक्ति के अनुसार प्रारम्भ में शुरू करनी चाहिये। फिर क्रमशः बढ़ाना चाहिये। इससे ग्रहणी रोग के समस्त विकारों का उपशम होकर वजन बढ़ता है और रोग स्थायी रूप से ठीक हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्रहणी रसायन लौह

योगद्रव्य--

कान्त लौह चूर्ण १० तोला, शुद्ध पारद १० तोला, शुद्ध ताल तपकी २० तोला एवं शुद्ध गन्धक २० तोला।

निर्माण-विधि--

गन्धक को भांगरे के रस में ३ बुझाव दें। फिर सुखा लें। लौह को छोड़कर तीन चीजों को खरल में डाल कर मर्दन दो दिन तक करें। फिर उसमें लौह चूर्ण डालकर पलाश के रस में खरल करें। यहाँ यह अवधान रखना चाहिये कि खरल सूखने न पाये नहीं तो अग्नि पकड़ लेगी। १ बोतल पलाश का रस लग जाने पर सुखाकर मिट्टी के मजबूत शराव में बन्दकर कपड़ मिट्टी करके बालुका यन्त्र में ४ दिन ४ रात मृदु, मध्य तथा तीव्र आँच दें। ठण्डा होने पर उसी तरह रस देकर पुनः उतनी ही अग्नि दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर लौह भस्म को निकाल कर सुरक्षित रख लें। पलाश का रस पुरानी जड़ की छाल से पाताल यन्त्र से निकालें।

उपयोग और तद्विधि--

यह योग शरीर के प्रत्येक अवयव को नव शक्ति प्रदान करने में विशिष्टतम कार्यकर औषधि है। विशेषतः रक्त निर्माण सम्पादक प्रणाली से सम्बन्धित घटकों को इससे पूर्ण बल प्राप्त होता है। रक्त के लाल कणों की गिरती हुई संख्या का शीघ्र अवरोध हो जाता है और उनका अनुपात त्वरित गति से बढ़ने लगता है। पाचक यन्त्रों की क्रिया वृद्धि के हेतु अग्नि विकृति के रोगों में इससे बहुत अच्छा फल प्राप्त होता है। यही कारण है कि ग्रहणी विकारों में इसके प्रयोग से अति सुन्दर फल प्राप्त होता है। पर्पटी कल्पों के साथ संमिश्रित करके इसका प्रयोग किया जाता है। इन कल्पों के निर्माण में पड़नेवाली लौह भस्म के स्थान पर अथवा लौह भस्म से बनने वाले इस रोग के योगों में उक्त भस्म के स्थान पर इसका प्रयोग अति वीर्यवान सिद्ध होता है। शारीरिक दुर्बलता, धातु दौर्बल्य, प्रमेह आदि रोगों में इसके प्रयोग से अतिशय फल प्राप्त होता है। इसे $^1/_2$ रत्ती से २ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार उचित अनुपानों से प्रयोग किया जाता है।

गोरोचनादि रस

योगद्रव्य--

गोरोचन ६ माशा, केशर ६ माशा, जुन्दवेदस्तर ६ माशा, कंडाई के फूलों की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

केशर ३ माशा, उदसलीव ३ माशा, कालीमिर्च ३ माशा, एलवा १।। माशा, मकरध्वज १।। माशा एवं कस्तूरी १।। माशा।

निर्माण-विधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करलें। फिर अच्छी खरल में डालकर दशमूल काढ़े की भावना देकर सम्यक् रूप में मर्दन करें। अनन्तर कस्तूरी, केशर, मकरध्वज एवं गोरोचन को मिलाकर उक्त काढ़े की १ भावना और देकर सम्यक् मर्दन कर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करके रखलें।

उपयोग और तद्विधि--

वालकों के आक्षेप रोग की यह विशिष्टतम महौषधि है। ज्वरावस्था अथवा बिना ज्वर के भी बच्चों के हाथ-पैरों के खिंचाव में इससे शीघ्र लाभ होता है। बार-बार आनेवाले इस तरह के आक्षेप इसके उपयोग से स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। जटामांसी क्वाथ मधु, जटामांसी, आसगन्ध, खुरासानी अजवायन का क्वाथ मधु, शैव रसायन अर्क मधु आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

चन्द्रहास रस

योगद्रव्य--

श्वेत संखिया, पीत हरताल, सिंगरफ, खर्पर भस्म प्रत्येक १–१–तोला।

निर्माण-विधि--

अच्छी खरल में दवाओं को डालकर ब्राण्डी शराब के साथ मर्दन करें। एक अद्धा बोतल शराब की देनेतक घोटें। फिर एक टिकिया गोल बनाकर सुखा लें। अनन्तर प्याज १० तोला की लुगदी के बीचमें इसे रखकर उसे गोलेके रूपमें बनावें। पश्चात् एक हंडी में पीपल की छाल की भस्म तथा ओंगे की छाल की भस्म १।२–१।२ सेर लेकर अच्छी तरह मिलाकर आधी भस्म उसी हंडी में डालें। फिर उपरोक्त गोले को रखकर अवशिष्ट भस्म ऊपर रखकर नीचे चौबीस घंटा अग्नि दें। बाद में पुटमें से निकाल कर पचीस निम्बुओं के स्वरस से मर्दन कर उन्हीं की लुगदी में रख पूर्वोक्त विधि से गोला बनाकर दोनों भस्मों के बीच में रख कर पूर्वोक्त विधि से अग्नि दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकालकर ब्राण्डी शराब से घोंटकर १।२–१।२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग वातश्लेष्मज्वर, वातश्लेष्म प्रधान सन्निपात ज्वर एवं शीताङ्ग सन्निपात की विशिष्टतम महौषधि है। मृत्युके समीप पहुँचा रोगी वापिस लौटकर जीवन प्राप्त कर लेता है। जीवनी शक्ति के होते हुए ह्रास को रोककर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृदय तथा रक्त संचालन प्रक्रिया को यह बल प्रदान करता है। फलतः गिरती हुई शारीरिक उष्मा को शक्ति मिलती है और बढ़ते हुए श्लेष्मा के विकारों का प्रशमन होता है। इसे १ वटी से २ वटी की मात्रा में आदीरस मधु, तालपत्र स्वरस मधु, वृ० भार्ग्यादि क्वाथ मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त किया जाता है।

जलोदरारि रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, काली मिर्च १ तोला, पीपल छोटी १ तोला, इलायची छोटी १ तोला, शुद्ध सिंगीमोहरा १ तोला, इन्द्रायणमूल २ तोला, बादाम भिंगी २ तोला, चिरौंजी दाना २ तोला एवं शुद्ध जमाल गोटा २ तोला।

निर्माण-विधि--

गन्धक, सिंगी मोहरा एवं जमाल गोटा की शुद्धि प्रचलित विधि से करलें। पारद गन्धक की कज्जली बनावें। औषधियों का वस्त्र छन चूर्ण प्रस्तुत करलें। समस्त औषधियों को खरल में डाल कर इन्द्रायण फल स्वरस की भावना देकर १।।-१।। रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह शुष्क करलें।

उपयोग और तद्विधि--

जलोदर रोग में मल तथा मूत्र प्रवृत्ति को बढ़ाना रोग निवृत्ति के लिए परमावश्यक होता है। प्रस्तुत योग विरेचन कराने में बड़ा प्रभावशाली है। प्रतिदिन प्रातःकाल उचित अनुपान के साथ इसका प्रयोग करने से विरेचन आकर रोगोपशमन होता है। अनुभवी चिकित्सक ऐसे योगों की मात्रा आवश्यकता के अनुसार बढ़ाकर उसकी क्रिया वृद्धि किया करते हैं। इस योग में पड़नेवाली औषधियाँ विरेचन गुणके अतिरिक्त यकृत क्रिया वृद्धि को अग्रसर करके मूल रोग का स्थायी निवारण करती हैं।

ज्वरकल्पतरु रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध धतूरा बीज, अभ्रक भस्म, भीमसेनी कपूर प्रत्येक १-१ तोला, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध सुहागा, सोंठ, मरीच, पीपल, पीपलामूल, अकरकरा, जायफल, जावित्री, तुलसीपत्र, भांग के बीज एवं शुद्ध कुचिला १-१ तोला।

निर्माण-विधि--

धतूराबीज, वत्सनाभ तथा कुचिला की प्रचलित विधि से शुद्धि करें। पारद गन्धक की कज्जली तथा औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करलें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आदी के रस की ३ भावनाएँ देकर १–१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह शुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान तथा मात्रा—

प्रतिश्याय, नूतन ज्वर, वातश्लेष्मज्वर, कास, शरीरवेदना, शिरःशूल आदि श्लेष्मिक रोगों में यह शीघ्र फलप्रदान करनेवाली महौषधि है। इससे श्लेष्मा का संशोधन होकर तज्जनित उपद्रवोंकी निवृत्ति होती है। इसे १ से १॥ वटी की मात्रा में पान, आर्द्रक एवं तुलसी स्वरस में से अन्यतम तथा मधुके साथ प्रयोग करना चाहिये।

ज्वर चूड़ामणि रस

योगद्रव्य—

मकरध्वज या रससिन्दूर १ तोला, हिंगुलेश्वर रस २ तोला, कपूर ऊर्ध्व-पातित ६ माशा एवं श्वेत पत्रक्षार ४ तोला।

निर्माण-विधि—

सर्वप्रथम मकरध्वज को खरल में डालकर घोटें। फिर क्रमशः कपूर, हिंगुलेश्वर एवं वज्रक्षार को डालते हुए अच्छी तरह मर्दन करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

बढ़े हुए ज्वर के उत्ताप का शमन कर ज्वर को विसर्ग को ओर ले जानेवाली अति महत्त्वपूर्ण औषधि है। इससे ज्वर के पाचन और शमन दोनों क्रियायें सम्यक्तया सम्पन्न होती हैं। ३ से ६ रत्ती की मात्रा में आवश्यक अनुपान से इसका प्रयोग करना चाहिये।

ज्वरारि रस

योगद्रव्य—

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला, पपड़िया कत्था १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, लाल फिटकरी फूल १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, करंजमज्जा १ तोला गोदन्ती ताल भस्म ६ तोला।

निर्माण-विधि—

सोमल को एक-एक करके चौदह बैगुनों में पकावें। औषधियों का वस्त्र छन चूर्ण करलें। सोमल को खरल में डाल कर घोटें फिर ताल भस्म मिलावें। अनन्तर औषधि चूर्ण मिलाकर क्रमशः गिलोय, चिरायता, पित्तपापड़ा एवं सप्तपर्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१-१ तोला के काढ़े से मर्दन कर एक रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

विषम ज्वर के समस्त भेदों में इसका सफल प्रयोग होता है। ज्वर विसर्ग के समय से ही २-२ घंटा बाद १-१ गोली जल के साथ देनी चाहिये। ज्वर आना बन्द होने पर भी आधी मात्रा में इस प्रयोग को दो दिनतक करना चाहिये। रोगी को फल और दूध का सेवन अधिक कराना चाहिये।

ज्वर सूदन रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तपकी हरताल, शुद्ध सिंगीमोहरा, शुद्ध धतूरा बीज एवं स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक ६-६ माशा।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली कर अन्य दवाओं को मिश्रित करके आदी के रस की ३ भावनाएँ देकर सरसों प्रमाण गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग विभिन्न ज्वरों में अच्छा फलप्रद है। वातश्लेष्म ज्वर में इसको ३-४ मात्रायें ज्वरका विसर्ग करा देती हैं। सन्निपातज्वर, द्विदोषी मियादीज्वर, सन्तत या सततज्वरों में पैदा होनेवाले विकार जैसे टट्टियां लगना, बेचैनी बढ़ना, ज्वरज फुन्सियों का अन्दर बैठना आदि पर अच्छा लाभ करता है। राजस्थान में इसके अनुपान में फ़ोगला को औटाकर उसका पानी दिया जाता है। इससे दबी हुई फुन्सियां बाहर आ जाती हैं और अतिसार का शमन हो जाता है। ज्वरके पाचन के लिये इसका तुलसी का मधु, आदीरस मधु आदि से १-१ वटी की मात्रामें प्रयोग करना चाहिये।

जीरकादि लौह

योगद्रव्य--

श्वेत जीरा, मोचरस, कूड़ा छाल, बेलगिरी, अतीस, इन्द्रजौ, नागरमोथा प्रत्येक १॥-१॥ तोला, सोंठ, मिर्च, पीपल, चित्रक, पीपलामूल, चव्य, लौंग प्रत्येक १-१ तोला, जायफल, जावित्री, दालचीनी, छोटी इलायची, धनिया, पोदीना एवं सौंफ प्रत्येक १।२ १।२ तोला, लौह भस्म २० तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्र छन चूर्ण करके लौह भस्म मिलकर अच्छी तरह मर्दनकर रखलें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

ग्रहणीसंस्थान की विकृति, यकृत की निष्क्रियता, पतला पाखाना आना, दस्तों का अधिक होना, आँव बनना, भूख की कमी, रक्ताल्पता आदि में अच्छा लाभकारी योग है। इसे २ से ४ रत्ती की मात्रामें स्वतन्त्र रूप से अथवा सहयोगी अन्य दवाओं के साथ भूना जीरा मधु, भूनी हींग भूना जीरा मधु, भूनी भांग, भूना जीरा मधु एवं धान्यपंचक क्वाथ आदि से प्रयोग करना चाहिये।

जीर्ण ज्वरारि रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तपकी हरताल, शुद्ध सिंगी मोहरा एवं ताम्र भस्म प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण-विधि--

प्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें। हरताल को कुष्माण्ड स्वरस में ३ घण्टे तक स्वेदित करें। सिंगी मोहरा को प्रचलित विधि से शुद्ध करलें। अनन्तर सब को खरल में डाल कर मर्दन करें। संभालू स्वरस तथा निम्बपत्र स्वरस की २१-२१ भावनाएँ देकर १।२–१।२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

जीर्णज्वर में अच्छा फलप्रद योग है। सन्तत, सतत, विषमज्वर जब विकृत होकर ठहर जाते हैं और हल्का ज्वर बराबर बना रहने लगता है तब इसका उपयोग पूर्ण सफल काम करता है। यकृत विकृति और वृद्धि तथा प्लीहा की इसी तरह की स्थिति से पैदा होनेवाले जीर्ण ज्वर में भी स्वतन्त्ररूप से अथवा सहायक अन्य दवाओं के साथ इसका उपयोग अच्छा फलदायी होता है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में संभालू पत्रस्वरस मधु, तुलसी पत्र स्वरस मधु, दास्यादि आदि क्वाथों के अनुपान से प्रयोग करना चाहिये।

जीर्णोष्णवातारि रस

योगद्रव्य--

श्वेत सोमल २ तोला, सिंगरफ २ तोला, मुरदाशंख २ तोला, रसकपूर १ तोला।

निर्माण-विधि---

समस्त औषधियों को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर २५ निम्बुओं के स्वरस में खरल कर टिकिया बना कर डमरु यन्त्र से मन्दी आंच से यथोचित विधि द्वारा पुष्प उड़ावें। इस तरह ४ बार पुष्प उड़ालें और नीचे बची दवा को फेंकते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जावें। ५ वीं बार नीम के पत्तों का रस देकर घुटाई करें और टिकिया बनाकर पुष्प उड़ावें। छठी बार केले के डण्डे के रस से घोटकर टिकिया बनाकर पुष्प उड़ावें। सातवीं बार मेंहदी के पत्तों का स्वरस देकर घोटें और यथा विधि पुष्प उड़ा लें।

उपयोग और तद्विधि--

सुजाक चाहे कितना ही पुराना हो और उसके कितने ही विभिन्न लक्षण पैदा हो गये हों, इसके नो दिन के प्रयोग से ही ठीक हो जाता है। १।४ रत्ती से १।२ रत्ती की मात्रा में मक्खन अथवा मलाई से इसका प्रयोग किया जाता है। पथ्य में दूध, चावल, बेसन मिली रोटी, घी दिया जाता है। नमक इस दवा में अपथ्य है।

तृण कान्तमणि रस

योगद्रव्य--

कहरवा पिष्टी २ तोला, माणिक्य पिष्टी, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल शाखा पिष्टी, जहरमोहरा पिष्टी, संगयशव पिष्टी, खून खरावा, अंजवार की जड़, पीपल की लाख प्रत्येक १-१ तोला, संगजराहत भस्म, शुद्ध मधुरा, श्वेत चन्दन, नाग केशर, अनार-पुष्प प्रत्येक ६-६ माशा, गुलाब पुष्प, वंशलोचन, मुलैठी सत्व, छोटी इलायची के बीज, रूमीमस्तकी एवं मुलैठी सत्व, नील कमल, कुल्फा बीज, प्रत्येक ३-३ माशा।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करलें। पिष्टियों के साथ उस चूर्ण को खरल में डालकर चांगेरी रस की ३ भावनाएं आमलकी स्वरस की ३ भावनाएं, अर्क-गुलाब, अर्क के केवड़ा, अर्क वेदमुश्क प्रत्येक की १-१ भावनाएं देकर ३-३ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग पित्त विकार, रक्त पित्त, रक्त मूत्र, रक्तार्श, रक्त प्रदर आदि बीमा-रियों की अमोघ महौषधि है। यह कुछ ही मात्रा में शरीर के किसी भी अवयव से निकलने वाले रक्तस्राव को रोक देता है। रक्त में आई हुई गरमी का शमन होकर उसकी अस्वाभाविक स्राव प्रवृत्ति का शमन होता है। इसे शर्बत अंजवार, लाक्षाजल, आयापान स्वरस मिश्री आदि अनुपानों से १ से २ वटी की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

ताप्यादि लौह—बृहत्

योगद्रव्य--

सोंठ, मरीच, पीपल, हर्रेछाल, बहेड़ा छाल, आमला, लाल चित्रकमूल, बिडंग, नागर मोथा प्रत्येक १-१ तोला, पिपलामूल, देवदारु, दारुहल्दी, चव्य, वंशलोचन,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दालचीनी, छोटी इलायची प्रत्येक $^{1}/_{2}$–$^{1}/_{2}$ तोला, रौप्य भस्म १ तोला, स्वर्ण-माक्षिक भस्म २ तोला, मण्डूर भस्म ४ तोला, लौह भस्म ८ तोला, शुद्ध शिलाजतु १६ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करके भस्मों तथा शिलाजतु के साथ अच्छी तरह मर्दन कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

यह योग ताप्यादि लौह का बृहत् रूप है। यकृत तथा वृक्क के विकारों की यह श्रेष्ठ औषधि है। रक्तहीनता, पाण्डु दुर्बलता, अग्निमान्द्य, शोथ, मूत्राल्पता, रक्त में यूरिया का बढ़ना, हृच्चञ्चलता, अवसाद, स्नायविक दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह, जराशोष आदि पर इसकी श्रेष्ठ क्रिया होती है। तत्तत् रोगों में उचित अनुपान ४ से ८ रत्ती की मात्रा में इसका सेवन कराना चाहिये।

तालेश्वर रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

पीतहर तालपत्री १ तोला लेकर पोटलीस्थ कर चूने के जल में दोला यन्त्र द्वारा स्वेदित करे ३ घंटा तक। आँच मृदु रहनी चाहिये। फिर इसी तरह कुष्माण्ड स्वरस में स्वेदित करे। अनन्तर इन्द्रायण फल जो वजन में करीब १ सेर का हो—में छिद्र करके उसमें ताल को रखे और छिद्र को वन्द कर कपड़-मिट्टी कर सुखा लें। फिर १। सेर गोठों की आँच में फूंकें। इस तरह २१ दफे अग्नि देकर ताल को तैयार कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

इस ताल में ताल भस्म के समस्त गुण होते हैं। समस्त प्रकार के वातश्लेष्म विकार, दूषित रक्त विकृति पर प्रशस्ततम गुण प्राप्त होता है। श्वास, पुरातन कास, श्लेष्मा की विकृति रहना, ग्रन्थिवात, आमवात, वातज शोध, वात रक्त, कुष्ठ आदि रोगों पर $^{1}/_{4}$ रत्ती से $^{1}/_{2}$ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार विविध अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

तिलक रस—लघु

योगद्रव्य--

कस्तूरी, अम्बर, गोरोचन, कपूर भीमसेनी प्रत्येक ३-३ माशा, केशर, स्वर्ण भस्म, मुक्ता भस्म, रौप्य भस्म प्रत्येक ६-६ माशा, षड्गुण वलिजारित मकरध्वज,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अन्यून शतपुटी, अभ्रक भस्म, शतपुटित लौह भस्म, अमृता सत्व, प्रवाल भस्म प्रत्येक १-१ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा, श्वेतवच, अकरकरा, पुष्करमूल प्रत्येक ६-६ माशा सोंठ, मिर्च, दालचीनी, खैरसार ९ माशा, लौंग, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची प्रत्येक १-१ तोला पीपल छोटी एवं पीपलामूल २-२ तोला।

निर्माण-विधि—

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। मकरध्वज को खरल में डालकर मर्दन करें। क्रमशः अन्य भस्मे डालें और मर्दन करें। फिर पान के स्वरस की भावना देकर अच्छी तरह घोटें। पूर्णतया मर्दन हो जाने पर केशर, कस्तूरी, अम्बर, गोरोचन एवं कपूर को डालकर आवश्यक पान का स्वरस देकर ६ घण्टा घोटकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करें।

उपयोग और तद्विधि—

वात श्लेष्म विकारों की यह वीर्यवान औषधि है। वातज्वर, श्लेष्म ज्वर, वात श्लेष्म प्रधान सन्निपात ज्वर, कास, श्वास, दुष्ट प्रतिश्याय, बच्चों के आक्षेप, उत्फुल्लिका आदि रोग, शारीरिक अशक्ति और तज्जनित लक्षणों में यह प्रशस्ततम क्रिया करती है। आन्त्रिक ज्वर के पाचन और उपद्रव निवारण में इसकी श्रेष्ठ क्रिया है। वात तथा श्लेष्मा के लक्षणों से ग्रसित व्यक्तियों के लिए यह वरदान स्वरूप है। श्वास रोग से ग्रसित व्यक्तियों को बहुत अच्छा लाभ प्रदान करती है। रोगानुसार विविध अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

तिलक रस—बृहत्

योगद्रव्य—

कस्तूरी, अम्बर, गोरोचन, कपूर भीमसेनी प्रत्येक ३-३ माशा, केशर, स्वर्ण भस्म, मुक्ता भस्म, रौप्य भस्म प्रत्येक ६-६ माशा षड्गुण वलिजारित मकरध्वज १ तोला, अभ्रक भस्म, अन्यून शतपुटित २ तोला, अमृता सत्व ३ तोला, लौह भस्म शतपुटित ४ तोला, प्रवाल शाखा भस्म ५ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा, वच, अकरकरा, पुष्कर मूल प्रत्येक १-१ तोला सोंठ, मिर्च, दालचीनी, खैरसार प्रत्येक २-२ तोला, लौंग, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक ३-३ तोला, पीपल छोटी ४ तोला एवं पीपला मूल ५ तोला।

निर्माण और उपयोग-विधि—

इसका निर्माण पूर्व योग की ही तरह करना चाहिये। यह योग उल्लिखित योग का बृहत् रूप है। उसमें उल्लिखित समस्त विकारों पर इसकी क्रिया और भी श्रेष्ठता के साथ होती है। वात तथा श्लेष्मा के समस्त विकार, हृदय, मस्तिष्क

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं यकृत् की दुर्वलता, स्नायुमण्डल की अयथा चञ्चलता, मानसिक अवसाद, शुक्र दौर्वल्य, क्रिया शक्ति का ह्रास, अपतन्त्रक आदि में इससे बहुत अच्छा लाभ होता है। रोगानुसार विविध अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

दरदामृत रस

योगद्रव्य--

वृन्तहीन भल्लातक २० तोला, खुरासानी अजवायन २० तोला, गोघृत २० तोला, निम्बू स्वरस १ सेर, कुमारी स्वरस १ सेर लहसुन स्वरस १ सेर, आर्द्रक स्वरस १ सेर, हिंगुल नरम ५ तोला, लौह भस्म २ तोला, अजवायन १ तोला, अजमोद १ तोला, श्वेतजीरा १ तोला, सोंठ १ तोला, मरीच १ तोला, पीपल छोटी १ तोला, लौंग १ तोला, पीपलामूल १ तोला, चव्य १ तोला, चित्रक १ तोला, सुहागा फूल १ तोला, यवक्षार १ तोला, सैन्धव नमक ५ तोला।

निर्माण-विधि--

लोहे की कड़ाही को मन्दी आँच पर रख कर उसके बीच में हिंगुल के १-१ तोले के पाँच टुकड़े रखें। फिर उसके ऊपर निम्बू स्वरस को बूँद-बूँद डाल कर जलावें। इसी तरह कुमारी स्वरस, लहसुन स्वरस एवं आदी स्वरस को जलावें। फिर नीचे उतार कर स्वाङ्ग शीतल करके हिंगुल को निकाल लें।

फिर भल्लातक तथा खुरासानी को एक साथ हिमामदस्ता में डालकर कूटें। महीन हो जाने पर इसमें से आधी दवा को कड़ाही में रखें। बीच में हिंगुल की डलियों को रखकर अवशिष्ट दवा को ऊपर जमा दें और घृत को उसके ऊपर डाल दें। नीचे, अग्नि जला दें। अग्नि को क्रमशः बढ़ावें, जब ऊपर अग्नि पकड़ कर स्नेहांश जल जाये तब नीचे उतार कर किसी ऐसे पात्र से ढक दें जिससे हवा बन्द होकर आग बुझ जावे। शीतल होने पर हिंगुल को निकाल लें।

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। फिर खरल में हिंगुल को डालकर मर्दन करें। अनन्तर समस्त दवाओं को डालकर निम्बू स्वरस तथा आर्द्रक स्वरस की १-१ भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

ग्रहणी विकारों में यह अमृत के समान महोषधि है। अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अतिसार, आमाजीर्ण, आमातिसार, संग्रहणी में इससे बहुत ही अच्छा लाभ होता है। रस बनने की प्रक्रिया का ह्रास होकर शरीर के दुर्बल हो जाने पर उत्पन्न रोगों की निवृत्ति होकर रस बनने लगता है और दुर्बलता ठीक हो

3

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाती है। क्रम वृद्धि कल्प के अनुसार इस दवा का प्रयोग करने पर दही का पाचन अच्छे परिणाम में हो जाता है। रुक्षान्नों के साथ दही लेने से सामान्य मात्रा में भी दो तीन सेर दही हजम हो जाता है। इसके अनुपान में निम्न क्वाथ अधिक उपयोगी होता है—जायफल ६ माशा, सोंठ, ६ माशा, बेलगिरी ६ माशा एवं पोस्त ड़ोड़ा ६ माशा। इनको १ पाव पानी में औटा कर १ छटांक अवशेष रखकर देना चाहिये। नूतन अतिसार अथवा अग्नि विकारों में धान्य पंचक क्वाथ, भूना जीरा मधु आदि अनुपान देने चाहियें।

दरदमुष्टि रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

हिंगुल नरम पांच तोला के दो टुकड़े लें। भल्लातक २० तोला एवं खुरासानी अजवायन १० तोला को कूटकर लुगदी बनावें। एक मिट्टी के पात्र में आधी लुगदी रख उस पर उपर्युक्त हिंगुल खण्डों को रखकर उसके ऊपर अवशिष्ट लुगदी फैलाकर हल्का सा दबा दें। फिर पात्र को आग पर रख कर नीचे अग्नि दें। दवा का स्नेहांश जलकर खरखरापन आ जाय तब नीचे उतार कर स्वाङ्ग शीतल होने पर हिंगुल खण्डों को निकाल लें।

कुचिला दश तोला को गीली मिट्टी में दबाकर फुला लें। फिर छीलकर दो दाल बनावें और अन्दर की जीभी निकाल दें। कुचिले की दालों को ताजा गोदुग्ध में भिगो दें। शाम को दूध वदल दिया करें। इस तरह चार रोज भिगोवें। बाद में गरम पानी से धोकर महीन कूट कर रखलें। अनन्तर हिंगुल के सम भाग कुचिला और चतुर्थांश मरीच चूर्ण मिलाकर आदी रस की ३ भावनाएं देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह सुखाकर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

सामान्य औषधियों से बना यह योग बड़ी वीर्यवान औषधि है। सामान्य अग्नि विकारों से लेकर विशूचिका पर्यन्त अच्छा काम करती है। अग्नि की दुर्बलता के कारण क्रमशः शरीर के शीर्ण होने पर इससे दोनों ही लक्षणों में प्रशस्त काम होता है। रसशेषाजीर्ण के कारण उदर में बननेवाले विकारों में इसके उपयोग से अच्छा लाभ मिलता है। सामान्य विकारों में सौंफ अर्क, अजवायन अर्क, ताम्बूलादि अर्क आदि और विशूचिका में चूना भिगोया जल का अनुपान देना चाहिये। ३-४ मात्राओं से ही विशूचिका के दूषीविष का असर निरस्त हो जाता है। इस स्थिति में अवान्तर दवा में विशूचिका भंजन रस दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दरद कल्प

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

हिंगुल ४ तोला के ४ टुकड़े लें। छिलका रहित एरण्ड बीज १ सेर लेकर पीस लें। एक लोहे की छोटी कड़ाही में आधी लुगदी को फैलावें। उस पर हिंगुल खण्डों को रख कर ऊपर से लुगदी जमा दें। अनन्तर गोघृत १ सेर तथा मधु $^1/_2$ सेर डाल कर कड़ाही को मन्दाग्नि पर रखें। तीन घण्टा तक अग्नि देते रहें। जब कड़ाही में अग्नि लगकर स्वयं शान्त हो जावे तब कड़ाही को नीचे उतार कर शीतल करें और हिंगुल खण्डों को निकाल कर पीस कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

ग्रहणी रोग पर की जानेवाली कल्प चिकित्सा का यह अन्यतम श्रेष्ठ योग है। रस प्रक्रिया की हीनता के कारण हुई शारीरिक दुर्बलता, रक्तन्यूनता, अग्निमान्द्य, अरुचि, निराम अतिसार, टट्टियों का दौरा होना, उदराध्मान आदि विकारों पर खरबूजा और दूध के साथ इसका कल्प किया जाता है। पर्पटी कल्प में जिस तरह दूध के साथ आम का प्रयोग होता है उसी तरह इसमें दूध के साथ खरबूजे का प्रयोग होता है। दवा की मात्रा १ रत्ती से प्रारम्भ कर $^1/_2$-$^1/_2$ रत्ती बढ़ाकर ३ रत्ती तक सुबह शाम दी जाती है। अन्न तथा जल का परित्याग कराना होता है। स्नानादि क्रिया प्रतिदिन की तरह ही करनी चाहिये। कल्प का प्रयोग १।। मास से २ मास तक किया जाता है।

पर्पटी कल्पों की ही तरह इसका खुला प्रयोग भी किया जाता है। एक-एक रत्ती मात्रा में सुबह-शाम शहद से दवा देनी चाहिये। सामान्य अन्न के साथ खरबूजा दूध का सेवन इस क्रम में चलता है।

दरद रसायन

योगद्रव्य--

नरम हिंगुल १० तोला, कुचिला चूर्ण ५ तोला, माल कांगनी २० तोला, गो-घृत २० तोला, मधु २० तोला।

निर्माण-विधि--

कुचिला तथा माल कांगनी को कूटकर तवे पर अथवा लोहे की कड़ाही में आधा रखें। उस पर हिंगुल खण्ड रखें। उन पर अवशिष्ट लुगदी देकर घृत तथा मधु डाल दें। ऊपर से मिट्टी का कप्पन देकर उस पर ईंट अथवा पत्थर रखकर पात्र में अटने जितना जल डाल कर नीचे अग्नि दें। जल कम हो जाने पर दूसरा जल डाल दें। इस तरह प्रातः काल से प्रारम्भ कर दूसरे दिन तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करें। अग्नि बराबर चालू रखें। फिर शीतल करके हिंगुल को निकाल कर पीस कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

सम्पूर्ण शारीरिक अवयवों, रक्त निर्माण तथा संचालन क्रिया, अन्तः स्रावी ग्रन्थियों के रसस्राव आदि को बल प्रदान करने में इस योग की बहुचर्चित उपयोगिता है। खोई हुई पुरुष-शक्ति इसके प्रयोग से पुनः जागृत होती है। $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में मलाई, मक्खन आदि के अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

धन्वन्तरि रसायन

योग द्रव्य--

नरम हिंगुल १० तोला, आमाहल्दी २० तोला, काले तिल २० तोला, मालकांगनी २० तोला, भिलावा १।। सेर, घी २० तोला, शहद २० तोला।

निर्माण-विधि--

एक छोटी कड़ाही में आधा मधु डालकर उसके बीच में हिंगुल की डली को रखें और बाकी शहद ऊपर से डालकर अत्यन्त मन्दी अग्नि पर रखकर आँच दें। शहदके जल जाने से उतार कर शीतल कर हिंगुल खण्ड को निकाल कर उस पर आई हुई कालिमा को कपड़ा से पोंछ दें। दूसरे दिन इसी तरह हिंगुल को घी में पकावें। शीतल कर १ दिन रखे रहें। तीसरे दिन एक हंडी में उपरोक्त तिलों में से आधे तिलों को पीस कर रखें। उनपर आधी माल कांगनी पीसी हुई और उस पर कुटे हुए आधे भल्लातकों को रख कर उन पर हिंगुल खण्ड को रखें। इस पर उल्लिखित विधि के विपरीत क्रम से औषधियों को रखें। हंडी को आगी पर रख कर नीचे अग्नि दें। सब का स्नेहांश जल कर कोयले हो जाने पर शीतल कर हिंगुल खण्ड को निकाल लें और पीस कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

यह हिंगुल भस्मतुल्य हो जाता है। ऊपर से यह काला होता है, किन्तु अन्दर से अच्छा रक्त रहता है। अंशांश में इसमें अग्निस्थायित्व आ जाता है। पुरुष शक्तिहीनता की यह श्रेष्ठ औषधि है। प्रमेह, धातुदौर्बल्य, शारीरिक शक्ति की कमी, अवसाद, अग्निविकार आदि पर इसकी सफल क्रिया होती है। $^1/_2$ रत्ती से १ रत्ती तक इसकी मात्रा होती है। मधु से चटाकर ऊपर से दूध देना चाहिये। सहयोगी अन्य दवाओं के साथ भी इसका उपयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नव कस्तूरी भैरव रस

योगद्रव्य--

कस्तूरी, अम्बर, केशर, स्वर्ण भस्म, मुक्ता भस्म, ताम्रभस्म, शुद्ध तपकी हरिताल प्रत्येक ३-३ माशा, प्रवाल भस्म, लौह भस्म, रौप्य भस्म, अभ्रक भस्म, कर्पूर पुष्प, शुद्ध हिंगुल, कौंचबीज छिलका रहित, आमला, पाठा, सुगन्धवाला, सोंठ, विडंग, नागर मोथा, धायफूल, जायफल एवं जावित्री प्रत्येक ६-६ माशा।

निर्माण-विधि--

काष्टौषधियों का वस्त्र छन चूर्ण करें। केशर, कस्तूरी, अम्बर के अतिरिक्त अन्य दवाओं के साथ खरल में डालकर एक दिन मर्दन करें। फिर अर्कपत्र स्वरस, आर्द्रक स्वरस की १–१ भावना देकर घोंटें। अनन्तर उपरोक्त तीनों दवायें मिलाकर लौंग के क्वाथ की भावना देकर अच्छी तरह घोंट कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करलें।

उपयोग और तद्विधि--

वृ० कस्तूरी भैरव आयुर्वेद की श्रेष्ठतम औषधियों में से है। प्रस्तुत योग उसीका परिर्वातित रूप है। सातिसार आन्त्रज्वर में इसकी विशेष उपयोगिता है। इस ज्वर का यह उपद्रव सर्वविदित-सा है। दोष पाचन के साथ अतिसार शमन उस योग की अपेक्षा इससे अधिक होता है। मसूरिका, तथा रोमान्तिका रोगों में अतिसार का उपद्रव आ जाने पर इससे उपद्रव शमन के साथ मूल रोगों की चिकित्सा सम्यक् रूप से संभव होती है। रोगानुकूल अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

नव प्राणेश्वर रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, सोयाबीज, अजवायन, श्वेतजीरा, प्रत्येक १-१ तोला, सुहागा फूल, इन्द्रजौ, श्वेतराल, विडंग, यवक्षार, लालचित्रक मूल छाल, हींग फुलाया प्रत्येक $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला एवं सैन्धव नमक २ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करके उसके साथ अभ्रक भस्म को घोंटें। फिर वस्त्र छन औषधि चूर्ण तथा अन्य वस्तुओं को मिलाकर अजवायन अर्क से घोंटकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह सुखा लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि--

इस योग में सिद्धप्राणेश्वर रस के सर्जिका क्षार, चतुर्लवण, त्रिफला, एवं त्रिकटु नहीं हैं और श्वेतराल अधिक है। पैत्तिक ज्वर में अतिसार होने की संभावना अधिकतया रहती है। फलतः ऐसे क्षेत्र में क्षार, लवण प्रधान औषधि पूर्णतया अनुकूल नहीं होती। त्रिकटु की तीव्रता, त्रिफला के विरेचन गुण इस परिस्थिति में अनुकूल नहीं बैठ पाते। अतः उपरोक्त नव प्राणेश्वर ऐसे क्षेत्र में अधिक लाभप्रद सिद्ध होता है। सर्ज रस का योग अतिसार शमन के लिए अधिक फलप्रद होता है। एतावता यह स्पष्ट है कि ज्वरातिसार के लिए नव प्राणेश्वर एवं आमाजीर्ण तथा आमातिसार में सिद्ध प्राणेश्वर की क्रिया अधिक होती हैं। ज्वरातिसार में इसका उपयोग १ से २ वटी की मात्रा में अजवायन अर्क से करना चाहियें।

नव भैरव रस

योगद्रव्य--

शुद्ध हिंगुल २ तोला, शुद्ध वत्सनाभ १ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, मरीच १ तोला, पीपल १ तोला, पीपलामूल १/२ तोला, सोंठ १/२ तोला, शुद्ध गन्धक १/२ तोला एवं जावित्री १/२ तोला।

निर्माण-विधि--

हिंगुल, वत्सनाभ तथा गन्धक को प्रचलित विधि से शुद्ध कर लें। सुहागा को आगी पर फुला लें। औषधियों का वस्त्र छन चूर्ण कर लें। समस्त द्रव्यों को विधि से खरल में डालकर पान स्वरस की १ भावना, तुलसी रस की २ भावनाएँ, आर्द्रक स्वरस की ३ भावनाएँ देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा---

वातश्लेष्मज्वर, श्लेष्मज्वर, प्रतिश्याय, सातिसार नूतनज्वर, शिरःशूल, सर्वाङ्ग वेदना, अङ्गमर्द आदि रोगों तथा लक्षणों में यह अच्छा फलप्रद योग है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में स्वतन्त्ररूप से अथवा अन्य औषधियों के साथ पान, तुलसी, आर्द्रक के स्वरस से एवं रोगोपयोगी क्वाथों अथवा गरम जल से प्रयोग करना चाहिये।

नवमृगाङ्क रस

योगद्रव्य---

अकीक भस्म ४ तोला, शंख भस्म ४ तोला, प्रवाल भस्म ४ तोला, वराटिका भस्म ४ तोला, संगजराहत भस्म ४ तोला, श्वेताभ्रक भस्म ४ तोला, कृष्णाभ्रक भस्म ४ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

अजवायन, गिलोय, वासा, निम्ब, करंज, घृतकुमारी, काशनी, जीरा, इनके क्वाथ तथा स्वरस एवं दूध बकरी और दूध गधी को भावना देने के लिए उचित मात्रा में लें और भावना देकर ३ पुट अग्नि दें।

उपयोग और तद्विधि--

पुरातन विषमज्वर, जीर्णज्वर, क्षय ज्वर, दौर्बल्य, कास, श्वास, हृदय दौर्बल्य, स्नायु दुर्बलता, अस्थि मृदुता आदि रोगों पर इससे अच्छा लाभ होता है। १ से २ रत्ती की मात्रा में मधु, दूध बकरी, गो दूध, वासा रस मधु आदि के अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

नवरत्न रस

योगद्रव्य--

पन्ना, माणिक्य, मुक्ता, प्रवाल, अकीक, जहर मोहरा खताई, मस्तकी, स्वर्ण वर्क एवं चांदी वर्क समस्त औषधियां समभाग।

निर्माण-विधि--

स्वर्ण तथा रौप्य पत्र और मस्तकी के अतिरिक्त अन्य औषधियों को विहित विधियों से शुद्ध करके शुष्क कर लें। फिर सफा हिमामदस्ता में एक-एक को कूटकर अत्यन्त सूक्ष्म कर लें। अनन्तर अच्छी खरल में डालकर स्वर्णपत्रों को १-१ मिलाकर घोंटें। इसी तरह रौप्य पत्रों को भी क्रमशः डालकर घोंटें। पश्चात् मस्तकी चूर्ण को इसके साथ मिलाकर गुलाब जल डालें और मर्दित्त करते रहें। औषधियाँ १-१ तोला होने पर दो बोतल गुलाबजल को थोड़ा-थोड़ा डालते हुए शुष्क करना चाहिये। फिर अर्क वेदमुश्क की एक बोतल को इसी तरह डालते हुए घोंटना चाहिये। प्रतिदिन आठ घण्टा तक औषधि को अवश्य घोंटना चाहिये। अनन्तर शुष्कप्राय करके १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लेनी चाहिये।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

हृदय को बलप्रदान करनेवाली दवाओं में इसका अन्यतम शीर्षस्थान है। हृदयदौर्बल्य के निराकरण के साथ तज्जनित रोगों का भी इससे शमन होता है। इसके अतिरिक्त मस्तिष्क, यकृत्, स्नायुकेन्द्र आदि शरीर के प्रधान अवयवों पर इसकी बलाधायक क्रिया के उत्कृष्टरूप का फल प्राप्त होता है। हृदय की अनियमित तथा बढ़ी हुई गति को स्वस्थता प्राप्त होती है। इसे १ वटी की मात्रा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में हृद्‌बलाधायक कोई अवलेह, शर्बत, अर्क आदि के साथ तथा सितोपलादि चूर्ण मधु, अर्जुनादि दुग्धपाक आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

नवबल्लभ रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, वंग भस्म, लालचित्रक के मूल की छाल, नागरमोथा, तेज पत्र, छोटी इलायची, जायफल, स्याहजीरा, अजवायन, सोंठ, सैन्धव नमक, कालीमिर्च, सुहागा फूल, भूनी हींग, गृह धूम प्रत्येक १-१ तोला एवं शंख भस्म २ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करें। हींग को घी में भून लें। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। फिर समस्त दवाओं को खरल में डालकर आदी तथा आमला स्वरस की भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

नूतन तथा पुरातन निराम और साम ग्रहणी रोग की यह पूर्ण फलप्रद महौषधि है। नृपतिवल्लभ रस का यह संशोधित रूप है। नृपतिवल्लभ में कालीमिर्च आठ तोला है, वह इसमें ४ तोला है। नृपतिवल्लभ में ताम्रभस्म है जो इसमें नहीं है। उसकी लौह भस्म की जगह इसमें अभ्रक है जो लौह से ज्यादा संग्राही होता है। वंग भस्म की क्रिया आँतों तथा पाचक यन्त्रों पर बलाधायक होती है। गृह धूम और कम्बू भस्म इसमें अधिक हैं जो पाचक, वायुनाशक और संग्राही गुण रखते हैं। एतावता यह योग उससे ज्यादा फलप्रसू होता है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में स्वतन्त्ररूप से अथवा अन्य सहायक दवाओं के साथ भूना जीरा मधु, मुस्तक स्वरस मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

नाग रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

शुद्ध नाग ५ तोला लेकर हिमामदस्ता में कूट कर सूक्ष्म चूर्ण कर लें। फिर खरल में डालकर चांगेरी रस की २१ भावना दें और प्रतिदिन छः घण्टा मर्दन करते रहें। भावनापूर्ण हो जाने पर अच्छी तरह घोंट कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

शरीर के किसी भी अवयव से होनेवाले रक्तस्राव को रोकने में यह अप्रतिहत औषधि है। विशेषतः रक्तार्श पर तो रामवाण क्रिया करता है। भयंकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्श भी ४-५ मात्रा में शान्त हो जाता है। रक्तार्श में इसके अनुपान में मक्खन दिया जाना चाहिये। अन्य रोगों में तदनुकूल अनुपान देना चाहिये। मात्रा १ रत्ती से १॥ रत्ती तक दी जाती है।

नाग रसायन

योगद्रव्य--

नाग भस्म १० तोला, शुद्ध पारद ५ तोला, शुद्ध श्वेतमल्ल २॥ तोला।

निर्माण-विधि--

सर्वप्रथम पारद तथा मल्ल को अच्छी तरह मर्दन करें। फिर नाग भस्म मिलाकर घोंटें और घृतकुमारी का स्वरस दें। तीन दिनों तक घुटाई के बाद टिकिया बनाकर शुष्क कर लें। तत्पश्चात् बीस तोला अरीठों के छिलकों को कूट कर महीन करें और एक छोटी हंडी में आधा नीचे देकर बीच में टिकिया को रख कर अवशिष्ट चूर्ण ऊपर देकर दबा दें। हंडी के मुँह पर शराव देकर कपड़मिट्टी कर के सुखालें। हंडी को चूल्हे पर रख कर नीचे तीन घंटे तक मन्दी आंच दें। स्वाङ्गशीतल होने पर हंडी को खोलकर अरीठों के आवरण को धीरे से हटाकर दवा को निकाल लें। अच्छी तरह पीसकर सुरक्षित रखलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

साधारण दवाओं से बना होने पर भी यह एक तीव्र योग है। इसका रहस्य है पारद तथा सोमल के अंश का भस्म होना। इन दोनों का पक्ष छेदन का काम अरीठों का आवरण करता है। अग्नि देने का परिज्ञान नितान्त आवश्यक है। इस योग की उग्रता के कारण सर्दी के समय में ही इसका प्रयोग करना चाहिये। इसे ७ से १५ दिन तक $^{१}/_{२}$ रत्ती की मात्रा में केवल प्रातःकाल मक्खन के साथ देना चाहिये। यह रसायन तथा वाजीकरण हैं।

निद्राकर रस

योगद्रव्य--

रस सिन्दूर $^{१}/_{२}$ तोला, अहिफेन $^{१}/_{२}$ तोला, खुरासानी अजवायन १ तोला जटामांसी $^{१}/_{२}$ तोला, वंशलोचन $^{१}/_{२}$ तोला, आमला १ तोला एवं घातकी पुष्प १ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों के सूक्ष्मचूर्ण को रससिन्दूर के साथ मर्दन कर अहिफेन मिलाकर भांगके क्वाथकी भावना देकर अच्छी तरह घोटकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनावें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग अनुपान और मात्रा--

जैसा कि योग के नाम से प्रकट है, यह अनिद्रा रोग की कार्यकर औषधि है। मस्तिष्क के अशान्त स्नायु मण्डल को अपने शामक प्रभाव के कारण शान्ति प्रदान कर निद्रा आने की स्थिति पैदा करता है। मियादी ज्वर के निद्रानाश पर इसका सफल प्रयोग होता है। इसे १ बटी की मात्रा में जटामांसी जल से देना चाहिये।

पक्षाघातारि रस—लघु

योगद्रव्य--

शुद्ध सोमल १।। माशा, अम्बर ३ माशा, मुक्तापिष्टी ६ माशा एवं शुद्ध कुचिला १ तोला।

निर्माण-विधि—

सोमल को दोलायन्त्र से गोदुग्ध में तीन घंटा स्वेदित करें। कुचिला को गो दुग्ध में तीनदिन तक भिगोवें। प्रतिदिन दूध ताजा बदलते रहें। फिर छिलका उतार कर अन्दर का अंकुर निकाल दें। बाद में चाकू से चावल बनाकर घृत में ईषत् लाल होने तक भून लें। अनन्तर कूटकर सूक्ष्म चूर्ण करलें। सर्वप्रथम सोमल को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर अम्बर, मुक्ता पिष्टी तथा कुचिला चूर्ण को डालें। दशमूल क्वाथ की ३ भावना देकर १/२ – १/२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

पक्षाघात, अर्दित रोग की यह अमोघ औषधि है। इन रोगों की नूतनावस्था में कुछ ही दिनों में इससे चमत्कारपूर्ण लाभ मिलता है। रोग की जीर्णावस्था में बहुत ही विशिष्ट लाभ क्रमशः प्राप्त होता है। अर्दित में इसका प्रयोग माष बलादि पाचन के साथ करना चाहिये। पक्षाघात में इसका अनुपान चोपचीन्यादि क्वाथ है।

पक्षाघातारि रस--बृहत

योगद्रव्य--

शुद्ध सोमल ३ माशा, स्वर्ण भस्म ३ माशा, मुक्तापिष्टी ६ मासा, लौह भस्म ६ माशा, अभ्रक भस्म ६ माशा, वंग भस्म ६ माशा, अम्बर ६ माशा, मकरध्वज ६ माशा, सोंठ ६ माशा, मरीच ६ माशा, पीपल ६ माशा, पीपलामूल ६ माशा, जायफल ६ माशा, जावित्री ६ माशा एवं शुद्ध कुचिला १ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि—

सोमल तथा कुचिला की शुद्धि पूर्ववत् करें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण कर लें। खरल में सोमल को डाल कर मर्दन करें। फिर मकरध्वज तथा भस्मों को क्रमशः डालें तथा मर्दन करें। अनन्तर औषधि चूर्ण को डालकर लौंग क्वाथ, निर्गुण्डी स्वरस या क्वाथ, सुहाञ्जना क्वाथ, आर्द्रक स्वरस की १-१ भावना दें। अन्तमें माषबलादि पाचन की ३ भावना देकर १–१ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया शुष्क कर लें। यहाँ यह अवधेय है कि अम्बर को अन्तिम भावना देने के समय मिलाना चाहिये, इसके पूर्व नहीं।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

यह पूर्वोक्त योग का ही बृहत् रूप है। यह उक्त दोनों रोगों की दोनों ही अवस्थाओं में समान रूप से काम करता है। इसके अतिरिक्त यह कलायखञ्ज, स्नायुगतवात, अपतन्त्रक आदि वात रोगों में भी पूर्ण लाभकारी सिद्ध होता है। इसके उपयोग की विधि पूर्व योग के ही सदृश है।

पंचभद्र रस

योगद्रव्य—

शुद्ध श्वेत सोमल १॥ माशा, शुद्ध पीतहरिताल ३ माशा, शुद्ध हिंगुल ६ माशा, प्रवाल भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म २ तोला।

निर्माण-विधि—

सोमल, ताल एवं हिंगुल की शुद्धि प्रचलित विधि से कर लें। फिर एक दवा को क्रमशः खरल में डालकर मर्दन करें। बाद में छोटे करेले की लता के स्वरस की २१ भावनाएँ देकर चौथाई रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

वस्तुतः इसे मृतोत्थापन औषधि समझनी चाहिये। कफ प्रधान सन्निपात और श्वसनक ज्वर की चरम परिणति में यह अपना चमत्कारिक लाभ दिखलाती है। नूतन उरस्तोय और वक्षोवेदना में भी इसका अच्छा उपयोग होता है। कफप्रधान सन्निपात में वृ० भार्ग्यादि क्वाथ, द्वात्रिंशत् कषाय आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये। उरस्तोय एवं वक्षोवेदना में दशमूल, पुष्कर मूल क्वाथ से इसे देना चाहिए।

प्रदर दावानल रस—लघु

योगद्रव्य—

चाँदी भस्म १ तोला, वंग भस्म १ तोला, शुद्ध श्वेत रसाञ्जन १ तोला, शुद्ध शिलाजतु १ तोला, दारुहल्दी का चूर्ण २ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

रसाञ्जन को त्रिफला क्वाथ और गोदुग्ध में ३-३ घंटा स्वेदन करें। शिलाजीत को प्रचलित विधि से शुद्ध कर लें। समस्त दवाओं को खरल में डालकर दार्व्यादि क्वाथ की भावना देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

श्वेतप्रदर की चमत्कारी दवा है। इसके कुछ समय के प्रयोग से स्थायी रूप में रोग की निवृत्ति हो जाती है। अनुपान में दार्व्यादि क्वाथ मधु, अशोकादि क्वाथ मधु, अशोकादि दुग्धपाक आदि देना चाहिये। गर्भाशय एवं योनिमार्ग का प्रक्षालन अशोकादि वस्ति के जल द्वारा कराने से रोग के कारण बने हुए घाव तथा क्लेद शीघ्र सूख जाते हैं।

प्रदर दावानल रस--बृहत्

योगद्रव्य--

रससिन्दूर ६ माशा, केशर ६ माशा, शुद्ध श्वेत रसाञ्जन ६ माशा, रौप्य भस्म ६ माशा, वंग भस्म, १ तोला, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म १ तोला, स्फटिका पुष्प १ तोला, शुद्ध रसौत १ तोला, जायफल १ तोला, लोध १ तोला एवं शुद्ध शिलाजीत १ तोला।

निर्माण-विधि--

रसाञ्जन को त्रिफला क्वाथ और गो-दुग्ध में दोलायन्त्र से ३-३ घण्टा स्वेदित करें। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। रसाञ्जन को खरल में डाल कर मर्दन कर १-१ भस्म को डालें और घोंटें। रसौत को जल के साथ वस्त्रपूत कर के सुखा लें। उपरोक्त दवाओं के साथ इसका भी मर्दन करें। अनन्तर शुद्ध शिलाजीत, लोध तथा जायफल का सूक्ष्म चूर्ण डालकर दार्व्यादि क्वाथ की भावना देकर अच्छी तरह घोंटें। अनन्तर मकरध्वज और केशर मिला कर चार घण्टा मर्दन कर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

प्रदर रोग की यह अमोघ औषधि है। विशेषत: श्वेतप्रदर पर तो चमत्कारी दवा है। इसे १ से २ गोली की मात्रा में दार्व्यादि क्वाथ मधु, अशोकादि क्वाथ मधु, अशोकादि दुग्धपाक, शतावरी स्वरस मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रदरान्तक लौह--वृहत्

योगद्रव्य--

वंग भस्म, खर्पर भस्म, प्रवाल भस्म या पिष्टी, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म या पिष्टी, कहरवा पिष्टी, शुद्ध शिलाजतु, सेमर गोंद, पीपल की लाख, लोध, स्वर्ण-गैरिक प्रत्येक १-१ तोला, लौह भस्म ५ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण बना लें। भस्मों तथा पिष्टियों को खरल में डालकर औषधि चूर्ण के साथ मर्दन कर दूर्वा, दाड़िम, आमलकी स्वरसों की ७-७ भावना देकर १।।-१।। रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

उपयोग और तद्विधि--

समस्त प्रकार के प्रदर रोगों की यह श्रेष्ठ महौषधि है। रक्त प्रदर में आया पान रस मधु, जवा फूल शर्बत, अंजवार की जड़ का शर्बत, लाक्षा मिश्रीजल, दूर्वा मिश्री का शर्बत आदि से और श्वेत प्रदर में शतावरी स्वरस मधु, गूलर स्वरस मधु, चावल भिगोया जल मधु आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये। अशोकादि दुग्ध पाक दोनों ही प्रदरों में इसका श्रेष्ठ अनुपान है। योग निम्न है— अशोक छाल १० तोला, शतावरी ५ तोला, लोध २।। तोला, दारुहल्दी २।। तोला, नागर मोथा १। तोला, नील कमल १। तोला, दालचीनी ९ माशा, छोटी इलायची ९ माशा। क्वाथ को जौकुट करके रख लें। १।। तोला दवा को १ पाव दूध और १ सेर जल के साथ पकावें। दुग्ध मात्र रहने पर छानकर वंशलोचन १ तोला मिश्री २ तोला मिला कर दें।

प्रभाकर रस

योगद्रव्य--

स्वर्णवर्क १।। माशा, चाँदीवर्क ३ माशा, मकरध्वज ६ माशा, मुक्तापिष्टी ६ माशा, विषाण भस्म ६ माशा, अभ्रक भस्म ६ माशा, स्वर्ण माक्षिक भस्म ६ माशा, प्रवालपिष्टी १ तोला, अकीक भस्म १ तोला, लौह भस्म १ तोला, शुद्ध शिला-जीत १ तोला, आबरेशम १ तोला, दालचीनी १ तोला, रुमीमस्तकी १ तोला, छोटी १ इलायची के बीज १ तोला एवं वंशलोचन २ तोला।

निर्माण-विधि--

आबरेशम को कैंची से महीन काट लें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। अनन्तर मकरध्वज को खरल में डाल कर घोंटें। फिर १-१ भस्म को डालते जावें और मर्दन करते जावें। बाद में वर्कों को भी इसी प्रकार डाल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर घोंटें। अनन्तर अर्जुन क्वाथ की तीन भावना देकर २–२ रत्ती की गोलियाँ बनावें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा––

यह हृदय बलाधायक श्रेष्ठ औषधि है। बलाधान के अतिरिक्त हृदय विकारों का भी इससे शमन होता है। वात प्रधान हृदय विकार, हृच्चञ्चलता, गति की अनियमिता पर अर्जुनादि दुग्ध पाक के साथ सुबह-शाम १-१ वटी का प्रयोग करना चाहिये। अर्जुनादि दुग्धपाक का योग निम्न है––

अर्जुन छाल ९ माशा, शतावर ६ माशा, चोपचीनी ३ माशा, आसगन्ध ३ माशा, जटामांसी ३ माशा, शालपर्णी ३ माशा, छोटी इलायची ४ अदद, लौंग २ अदद। विधि––दूध १।। पाव तथा जल १।। पाव को आग पर चढ़ाकर अर्जुनादि काढ़ा डालें। मन्दाग्नि पर पाक करें। दूध मात्र रखकर छानकर मिश्री मिला कर दें।

प्रलापान्तक रस—लघु

योगद्रव्य––

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध भांग, जायफल प्रत्येक ६-६ माशा, लवंग, नागकेशर, अकरकरा, धायफूल, शुद्ध अहिफेन प्रत्येक ३-३ माशा।

निर्माण-विधि––

औषधियों के सूक्ष्म चूर्ण को पारद गन्धक की कज्जली तथा अफीम के साथ खरल में डालकर तगरादि क्वाथ की भावना देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि

अधिक समय तक तीव्र ज्वर के रहने के कारण मस्तिष्क का स्नायु मण्डल उत्तेजित होकर निद्रानाश और प्रलाप के लक्षण पैदा हो जाते हैं। इस औषधि के शामक प्रभाव से दोनों ही लक्षणों में लाभ मिलता है और प्रलाप में शान्ति आजाती है। अनुपान में जटामांसी जलमधु, शैव रसायन अर्क, तगरादि क्वाथ आदि देने चाहियें।

प्रलापान्तक रस—बृहत

योगद्रव्य––

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, स्वर्णमाक्षिक भस्म, प्रवाल पिष्टी, संगयशव पिष्टी, जायफल, जावित्री, सर्पगन्धा प्रत्येक ६-६ माशा, स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी, रुद्राक्ष,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुद्ध धतूरा बीज, लौंग, अकरंकरा, सोंठ, मरीच, पीपल, करंजमज्जा, नागकेशर, शुद्ध अहिफेन प्रत्येक ३-३ माशा।

निर्माण-विधि--

औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करलें। पारद गन्धक की कज्जली करें। भस्म तथा पिष्टियों को खरल में डाल मर्दन करें। फिर कज्जली और औषधि चूर्ण को डालकर तगरादि क्वाथ की ३ भावनाएं देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर शुष्क करलें।

उपयोग और तद्विधि--

तीव्र ज्वर के उत्ताप का आघात लगकर हुए निद्रा नाश और प्रलाप में इसका पूर्ण सफल उपयोग होता है। इससे प्रलाप की शान्ति होकर इस अस्वाभाविक स्थिति का निवारण होता है। अनुपान में जटामांसी, जवासा का फाण्ट, तगरादि क्वाथ, ताल शाखा स्वरस मधु आदि देने चाहियें।

प्रवाल नवामृत रस

योगद्रव्य--

प्रवाल शाखा ६ माशा, मुक्ता ६ माशा, अकीक ६ माशा, पन्ना ३ माशा, माणिक्य ३ माशा, वैक्रान्त ३ माशा, स्वर्णवर्क १।। माशा, चांदीवर्क १।। माशा, अम्बर १।। माशा।

निर्माण-विधि--

प्रथम की ६ औषधियों की शुद्धि करके स्वच्छ हिमामदस्ता में सूक्ष्म कूटकर न घिसनेवाली खरल में डालें और केवड़ा अर्क की भावना देकर मर्दन करें। कुछ महीन हो जाने पर स्वर्ण तथा चाँदी के वर्कों को १-१ करके डालें और मर्दन करते रहें। समस्त वर्क मिल जाने पर और अर्क देकर घोंटें। प्रतिदिन ६ घण्टा घोटते हुए ७ दिन तक घोंटें। फिर १ टिकिया बनाकर शुष्क करलें। अनन्तर शराव सम्पुट में रखकर गोठों की मध्यम आँच में फूंक लें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकालें। मृदु भस्म बन जाने पर खरल में डालकर घोंटें और अम्बर मिलावें। अच्छी तरह से मर्दन कर अर्क गुलाब की भावना देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करलें। यहाँ यह अवधेय है कि एक पुट में मृदु भस्म न होने पर पूर्ववत् पुनः मर्दन कर पुट दें। ऐसा तब तक करे कि मृदु भस्म हो जावे।

उपयोग और तद्विधि--

मस्तिष्क रोगों के लिए यह अमृत समान औषधि है। मस्तिष्क दौर्बल्य, स्मरणशक्तिहीनता, अवसाद, दुष्ट प्रतिश्याय आदि रोगों में इसकी विशिष्ट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तम क्रिया है। वर्षों से रहनेवाला प्रतिश्याय इससे निर्भ्रान्त ठीक हो जाता है। हृदय की दुर्बलता, प्रमेह, यकृत विकार, स्नायविक विकार आदि रोगों में भी अच्छा फल मिलता है। मस्तिष्क रोगों में विशेषत: दुष्टप्रतिश्याय में बादाम, पोस्त-दाना, गेहूँ, ब्राह्मीपत्ती, कद्दूबीज, ककड़ीबीज, खीराबीज के विधिवत् बने हलवा से इसे प्रयुक्त करना चाहिये, अथवा गाज़वां अवलेह से करना चाहिये। अन्य-रोगों में रोगानुसार अनुपानों से दिया जाता है।

प्रवाल सप्तामृत रस

योगद्रव्य–

प्रवाल शाखा, मुक्ता शुक्ति, रक्त अकीक, श्वेत अभ्रक, गोदन्ती ताल, संग-जरा एवं शंखनाभी प्रत्येक ५-५ तोला।

निर्माण-विधि––

सब दवाओं को अच्छी तरह सफा करके गोदुग्ध मिश्रित जल में औटावें। फिर जल से स्वच्छ करके आतप में सुखाकर महीन कूट लें। अनन्तर चिरायता क्वाथ की भावना देते हुए ३ पुट दें। इसी तरह गिलोय स्वरस की भावना देकर ३ दफे अग्नि दें। अनन्तर अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा तथा अर्क वेदमुश्क की भावना देकर सुखा लें और पीसकर रखलें। अथवा शेष की भावना के बाद २-२ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया शुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा––

किसी भी तरह के ज्वर में जब उत्ताप की अतिशय वृद्धि हो जाती है तब इस योग से अच्छा फल मिलता है और किसी भी तरह विपरीत प्रतिक्रिया नहीं होती। प्रत्युत इसके प्रयोग से रोगी को बल प्राप्त होता है। हमेशा बढ़कर रहनेवाली शारीरिक उष्मा, हाथ पैरों की जलन, हृदय की दुर्बलता, श्वेत प्रदर, स्नायुदौर्बल्य, मानसिक अवसाद आदि बीमारियों में अच्छा लाभ करता है। इसे २ से ४ रत्ती की मात्रा में श्वेत चन्दन, बड़ी इलायची, लौंग मिश्री का धासा, अनार, चन्दन, गुलाब के शर्बत, पटोल पत्ता, धनियाँ के फाण्ट आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिये।

पार्श्व शूलारि रस

योगद्रव्य––

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, लौहभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, ताम्र भस्म, वंगभस्म, प्रवाल भस्म, कम्बू भस्म, अकरकरा, पीपलामूल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोंठ, कालीमिर्च, शुद्ध धतूराबीज, सुहागा फूल, नागरमोथा, विडंग, एवं पीपल प्रत्येक १-१ तोला, पुष्करमूल २ तोला, विषाण भस्म २ तोला, दशमूल मिलित ४ तोला, ऋक्षपित्त १/२ तोला एवं अम्बर १/२ तोला।

निर्माण-विधि--

सर्व प्रथम काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। फिर इसे पारद गन्धक की कज्जली के साथ मर्दन करें। अनन्तर अन्य भस्मों तथा ऋक्षपित्त तथा अम्बर को मिलाकर आदी का स्वरस देकर घोटें। इस तरह तीन भावनाएं आदी स्वरस की दें। अनन्तर दशमूल क्वाथ की तीन भावनाएं देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करलें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग साधारण सर्दी से लेकर वातश्लेष्म ज्वर-न्यूमोनिया–तक की वक्षोवेदना में तथा पार्श्व शूल में चमत्कार पूर्ण लाभ करता है। इसे १ से २ वटी की मात्रा में आदीरस मधु, दशमूल पाचन मधु अथवा बृहत् भार्ग्यादि कषाय मधु से प्रयोग करना चाहिये।

बलादि मण्डूर

योगद्रव्य--

बलामूल, यवमूल, एरण्डमूल, शतावरी, पटोलपत्ता, गुलाबफूल, खस, श्वेत जीरा, धनियाँ प्रत्येक १-१ तोला, भौममण्डूर भस्म ९ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करलें। फिर भौममण्डूर के साथ अच्छी तरह मर्दन कर रखलें। भौममण्डूर बनाने की विधि यह है कि विशुद्ध मण्डूर २० तोला, शुद्ध स्वर्णमाक्षिक १० तोला, दोनों को गोमूत्र की भावना देकर सम्पुट कर अग्नि दें। इस तरह से १० पुट दें।

उपयोग और तद्विधि--

यह योग पित्त विकृति जनित पाण्डु की श्रेष्ठ औषधि है। त्वचा तथा नेत्रों की पीतता, मूत्र का गाढ़ा पीलापन, हाथ पैरों की जलन, तीव्र ज्वर आदि कठिन लक्षणों से संयुक्त ज्वर में इसे ३ से ४ रत्ती की मात्रा में पटोल पत्ता स्वरस मधु, मूलीपत्ता स्वरस मधु, उशीरादि फाण्ट आदि के साथ प्रयोग करना चाहिये। उशीरादि फाण्ट का योग निम्न है—खस, गुलाब फूल, चिरायता मीठा, अमलतास का गूदा, सनायफली, गोखरु छोटा, काशमूल, कुशमूल प्रत्येक १/२-१/२ तोला १/२ सेर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पानी में भिगोकर छानकर मिश्री मिलाकर दें। एक साथ समस्त जल न ले सकें तो दो बार करके दें। आवश्यक समझने पर इसमें गुलकन्द मिलाया जाता है।

बलार्जुन रस

योगद्रव्य--

रस सिन्दूर १ तोला, वंग भस्म १ तोला, शुद्ध शिलाजीत १ तोला, बलामूल १ तोला एवं अर्जुन छाल २ तोला।

निर्माण-विधि--

बलामूल तथा अर्जुनछाल का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। रससिन्दूर को खरल में डालकर अच्छी तरह घोंटें। फिर समस्त दवाओं को एक साथ कर सेमर मूसली के स्वरस की भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

हृद्बलाधायक औषधियों में इसका विशिष्ट स्थान है। शुक्रसंस्थान की दुर्बलता और ओजक्षय के कारण पैदा हुई धमनियों की शिथिलता का निवारण अपने पौष्टिक गुणों के कारण सम्पन्न कर हृदय को बल प्रदान करता है। इससे रक्तस्थ वात का शमन होकर स्नायुकेन्द्र को बल प्राप्त होता है। शतावरी स्वरस मधु, गोदुग्ध मिश्री, अर्जुनादि दुग्ध पाक आदि अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

बहुमूत्रान्तक रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, वंग भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक १-१ तोला, कुलिञ्जन, कीकर फली, अजवायन, कालेतिल, बलामूल त्वचा, शुद्ध अहिफेन प्रत्येक $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली कर लें। अहिफेन को आदीस्वरस में आर्द्र कर वस्त्र द्वारा परिस्रुत करके मन्दाग्नि पर शुष्क कर लें। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। फिर समस्त द्रव्यों को खरल में डालकर अच्छी तरह घोंटें। अनन्तर गूलर के क्वाथ की भावना देकर १॥-१॥ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

जैसा कि इसके नाम से विदित होता है यह बहुमूत्र रोग की प्रशस्त औषधि है। शर्करा रहित इस रोग में तो यह फलप्रद है ही साथ ही शर्करा युक्त बहुमूत्र में भी इसकी अच्छी क्रिया है। इसे १ वटी की मात्रा में तेलाकूचा पत्ता रस, उदुम्बर स्वरस आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिये।

बृहत् नवायस लौह

योगद्रव्य--

सोंठ, कालीमरीच, छोटीपीपल, हर्रेछाल, बहेड़ाछाल, आमला, चव्य, चित्रक-मूल, पीपलामूल, तेजपत्ता, विडंग, नागरमोथा, वंशलोचन, दालचीनी, छोटी इलायची, तालीश पत्ता, लौंग एवं श्वेत जीरा प्रत्येक १-१ तोला, मण्डूर भस्म ९ तोला, लौह भस्म ९ तोला।

निर्माण-विधि, मात्रा और उपयोग--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करके भस्मों के साथ खरल में डालकर अच्छी तरह घोंट लें। वटी बनानी हो तो कुलेखड़ा का रस देकर खूब घुटाई करके ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना कर सुखा लें। यकृत की क्रियाहीनता, अग्निमान्द्य, रक्ताल्पता, ग्रहणी विकार, आमदोष, अम्लपित्त आदि उदर गुहा के प्राय: समस्त रोगों में बहुत अच्छा लाभ करनेवाला योग है। इससे यकृत् की क्रिया वृद्धि होकर रक्त के लाल कण बढ़ते हैं। अग्निमान्द्य को नष्ट करके अग्नि के गुण दीपन, पाचन को बल प्रदान करता है। किसी अन्य बीमारी से आई हुई दुर्बलता को मिटाने में इसकी अच्छी क्रिया होती है। हृदय, यकृत् एवं वृक्कों की विकृति के कारण पैदा होनेवाले शोथ रोग में तत्तत् रोगों की प्रधान दवाओं के साथ इसका योग अच्छा लाभकारी सिद्ध होता है। इसे दो से तीन रत्ती की मात्रा में रोगा-नुसार विविध अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

बृहत् पिप्पल्यादि लौह

योगद्रव्य--

बीज रहित मुनक्का, मुलहठी, गाजवाँ, छोटी पीपल, आमला, झड़बेर की मज्जा प्रत्येक २-२ तोला, वनफसाफूल, लिसोड़ा, हंसराज, जूफा, सोम, भारंगी प्रत्येक १-१ तोला, काकड़ासिंगी, कटैरी, वासापत्ता, हल्दी, विडंग, पुष्करमूल प्रत्येक $^{१}/_{२}$ तोला, लौह भस्म २० तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण विधि—

वस्त्रछन औषधि चूर्ण को खरल में डालकर लौह भस्म के साथ अच्छी तरह मर्दन करें। फिर आवश्यक मधु देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना लें।

उपयोग और तद्विधि—

वात प्रधान शुष्क श्वास रोग के भेदों में यह अच्छा फलप्रद योग है। इससे श्लेष्मा तरल होता है और फुफ्फुस की उष्मा का शमन होता है। कफ आसानी के साथ निकलने लगता है। फलत: श्वास वेग में आराम मिलता है।

औषधि सेवन से यह क्रिया सतत चालू रहती है जिससे रोग के मूल का उन्मूलन क्रमश: होता जाता है। हिक्का रोग में भी यह योग अच्छा फल प्रदान करता है। श्वास रोग में इसका अनुपान आर्द्रक स्वरस मधु, वासा स्वरस मधु, भार्ग्यादि क्वाथ मधु, यष्ठ्यादि क्वाथ मधु आदि दिये जाते हैं। हिक्का में इसके साथ पृच्छ भस्म का योग कर अनुपान में केवल मधु, भूनी लवंग का चूर्ण मधु, सुरंजानादि क्वाथ मधु आदि दिये जाते हैं।

बृहत् रस मण्डूर

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोला, मुलैठी ४ तोला, आमला ६ तोला, हरीतकी ८ तोला, निशोथछाल १२ तोला, मण्डूर भस्म १६ तोला एवं भृंगराज-स्वरस १४० तोला।

निर्माणविधि—

पारद गन्धक की कज्जली करके औषधि चूर्ण और मण्डूर के साथ लोहे की खरल में डालकर भृंगराज स्वरस की भावना दें। क्रमश: उपरोक्त परिमाण का रस दें और घोटते रहें। अन्त में आतप में शुष्क कर महीन पीसकर रख लें। अथवा ३-३ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

अम्लपित्त, पित्तविकार, परिणामशूल एवं अन्नद्रव शूल की यह सम्पूर्ण कार्य-क्षम औषधि है। इससे पित्त की उग्रता का शमन होकर वह प्रकृतिस्थ बन जाता है। इसका उपयोग स्वतन्त्र रूप से अथवा पित्तशामक अन्य औषधियों के साथ किया जाता है। इसे पटोल पत्ता स्वरस मधु, शतावरी स्वरस मधु, पटोल पत्ता धनियाँ क्वाथ मधु आदि अनुपानों से किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बृहत् वरुणादि लौह

योगद्रव्य--

वरुणछाल, आमला, पाषाणभेद, यवक्षार, शुद्ध शिलाजीत, स्वर्णमाक्षिक भस्म २-२ तोला, हर्रेछाल, धायफूल, धनियाँ, पृश्नपर्णी, गोखरु छोटा, कलमीशोरा, शीतलचीनी एवं बेर पत्थर प्रत्येक १-१ तोला, लौह भस्म १० तोला।

निर्माणविधि--

काष्ठौषिधयों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। बेरपत्थर, यवक्षार एवं शोरा को खरल में महीन पीस लें। फिर शिलाजीत तथा माक्षिक भस्म के साथ सबको मिश्रित कर अच्छी तरह मर्दन और अनन्तर लौह भस्म डालकर १२ घंटा मर्दन कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

वरुणादि लौह का यह बृहत् रूप है। मूत्रसंस्थान की यह बहुत ही उपयोगी औषधि है। वृक्क और मूत्राशय की बीमारियों पर इसका सफल उपयोग होता है। वृक्क, मूत्राशय, मूत्रमार्ग में जमनेवाली पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, रक्त-मूत्र पर स्वतन्त्र रूप में अथवा सहायक औषधियों के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। अनुपान में पंचतृण मूल पाचन, गोक्षुरादि पाचन, पुनर्नवा अर्क, मकोय अर्क, मूत्रलहिमकषाय आदि दिये जाते हैं। इसे २ से ४ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

बालकल्याण रस

योगद्रव्य--

स्वर्णवर्क ५ अदद, चाँदीवर्क १० अदद, मुक्तापिष्टी १।। माशा, केशर १।। माशा, गोरोचन १।। माशा, रससिंदूर १।। माशा, यशद भस्म ३ माशा, गोदन्ती-ताल भस्म ३ माशा, जहरमोहरा खताई भस्म ३ माशा, गिलोयसत्व ३ माशा, छोटी इलायची के बीज ३ माशा, वंशलोचन ३ माशा, छोटी पीपल के दाने ३ माशा, नागकेशर की किञ्जल्क ३ माशा एवं गुलाब की केशर ३ माशा।

निर्माणविधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। भस्मों तथा पिष्टियों को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर एक-एक वर्क डालते हुए घोंटें। समस्त पत्र समाप्त होने पर केशर डालकर गुलाब जल देकर लगातार ६ घंटा घोटते हुए दो दिन मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि——

बच्चों को नीरोग रखने और उन्हें हृष्ट-पुष्ट करने की यह सर्वश्रेष्ठ दवा है। प्राकृतिक रूप से कमजोर रहनेवाले बच्चे इससे सम्पूर्ण स्वस्थ हो जाते हैं। विकृत मातृदुग्ध के कारण पैदा होने वाली बच्चों की बीमारियाँ इससे स्थायी रूप से ठीक हो जाती हैं। बालशोष, अस्थिदौर्बल्य जैसे कठिन रोगों पर इसकी अप्रतिहत क्रिया है। दांत निकलने के समय होने वाले ज्वर, अतिसार आदि रोगों पर अनुपान भेदों से इसका सफल प्रयोग होता है। इससे दाँत सरलता के साथ निकल आते हैं और उनकी पुष्टता स्वाभाविक हो जाती है।

बालामृत रस

योगद्रव्य——

रससिन्दूर, स्वर्णमाक्षिक भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, शृङ्ग भस्म, कंटकारी फूलकी केशर, गोरोचन, पुष्करमूल, भूना सुहागा, मीठा वच एवं कायफल—— समस्त दवायें समभाग।

निर्माण-विधि——

औषधियों का वस्त्रपूत चूर्ण करें। फिर रस सिन्दूर आदि को खरल में क्रमशः डालते हुए घोंटें। अनन्तर उपरोक्त चूर्ण को डाल कर आर्द्रक स्वरस की भावना देकर दो दिन घोंट कर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा——

यह योग बालकों के श्लेष्मज विकारों की बहुत ही फलप्रद औषधि है। प्रतिश्याय, कास, ज्वर, उत्फुल्लिका आदि रोगों में इसका सफल प्रयोग होता है। रोगानुसार पानरस मधु, आर्द्रक स्वरस मधु, मुक्तावर्षीपत्ता रस मधु, स्नुही पत्र स्वरस मधु आदि अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

बालशोषान्तक रस

योगद्रव्य——

जहरमोहरा खताई भस्म ४ तोला, गोदन्ती ताल भस्म, कच्छप पृष्ठ भस्म, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म प्रत्येक २-२ तोला, कम्बू भस्म, वराटिका भस्म, संगयशव-भस्म, बेरपत्थर भस्म प्रत्येक १-१ तोला, कहरवा पिष्टी, दरयायी नारियल, जरावन्द, पद्माख, पीलीजड़, गुलाब का जीरा, कमल केशर प्रत्येक ६-६ माशा, नागकेशर, वंशलोचन, छोटी इलायची, गिलोय सत्त्व, कपूर भीमसेनी, केशर एवं मुक्ता पिष्टी प्रत्येक ३-३ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। भस्म तथा पिष्टियों को खरल में डालकर घोंटें और फिर औषधिचूर्ण को डालकर गदही के दूध की ३ भावनाएँ दें। अन्तिम भावना में केशर कपूर को डालें। सम्यक्तया मर्दन कर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर अच्छी तरह सुखालें। मर्दनकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर अच्छी तरह सुखालें।

उपयोग और तद्विधि--

बाल शोषरोग की यह महौषधि है। गर्भावस्था में माता के रोगग्रस्त रहने से पोषण की अल्पता, भूमिष्ठ होने के तत्काल किसी रोग का आक्रमण, मातृ दुग्ध का दूषित होना, स्तन्य की स्वल्पता, यकृतक्रिया विकृति, रस प्रक्रिया का अभाव अतिसार, वमन, दन्तोद्भेदज रोग आदि कारणों से पैदा होने वाला बालशोष इसके सेवन कराने से निश्चित रूप से ठीक होता है। रोगानुसार अनुपान भेदों से इसका प्रयोग किया जाता है।

मकरचिन्तामणि रस--लघु

योगद्रव्य--

रससिन्दूर २ तोला, भीमसेनी कर्पूर १ तोला, जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, लौंग १ तोला, सोंठ ½ तोला, आसगन्ध ½ तोला, समुद्रशोष ½ तोला, एवं पीपल छोटी ½ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों के वस्त्र छन चूर्ण को खरल में घुटे रससिन्दूर तथा कर्पूर के साथ मर्दन करें। फिर दशमूल काढ़े की भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

स्नायुसंश्रित वातविकारों में अच्छा फलप्रद योग है। हृच्चञ्चलता, बेचैनी, हाथ-पैरोंके पसीने, अपतन्त्रक, अवसाद, ऊर्ध्ववात आदि लक्षणों में लौंग, इलायची, मिश्री का घासा, बड़ी इलायची के बीजों की बुकनी मधु, शतावरी स्वरसमधु, धारोष्ण दूध मिश्री आदि अनुपानोंसे १ से २ वटी की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

मकरचिन्तामणि रस--बृहत्

योग द्रव्य--

मकरध्वज २ तोला, भीमसेनी कर्पूर १ तोला, जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, लौंग १ तोला, आसगन्ध १ तोला, चोपचीनी १ तोला अकरकरा ½

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तोला, सोंठ $^1/_2$ तोला, छोटी पीपल $^1/_2$ तोला समुद्रशोष के बीज $^1/_2$ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा $^1/_2$ तोला मुक्तापिष्टी $^1/_2$ तोला, छोटी इलायची के बीज ३ माशा नागकेशर ३ माशा, हर्रेछाल ३ माशा, कालीमिर्च ३ माशा, अम्बर ३ माशा, केशर ३ माशा, कस्तूरी १।। माशा।

निर्माण और उपयोगविधि--

यह योग पूर्व उल्लिखित योग का बृहत् रूप है और उससे अधिक शक्तिशाली भी है। उस योग का कार्यक्षेत्र इसकी क्रिया का लक्ष्य स्थल है, विशेषत: रोगों की जीर्णावस्था। स्नायविक दुर्बलता जनित हमेशा रहनेवाला अवसाद, मानसिक अस्थिरता, हृच्चञ्चलता, विचारों का अयथा प्रवाह आदि लक्षणों में इससे अच्छा लाभ होता है। योषापस्मार और उसके लक्षणों पर इसकी क्रिया शीघ्र होती है। अनुपान भेदों से विविध रोगों में इसका प्रयोग किया जाता है। इसकी निर्माण विधि और मात्रा पूर्व योग के सदृश है।

मकरध्वज पर्पटी

योगद्रव्य---

मकरध्वज या रससिन्दूर १ भाग, शुद्ध आमलासार गन्धक ४ तोला।

निर्माण-विधि--

दोनों दवाओ को खरल में अच्छी तरह पीसकर पर्पटी बनाने की विधि से पर्पटी जमा लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग मकरध्वज की तरह योगवाही दवा है। सहयोगी औषधि तथा अनुपान भेद से यह त्रिदोषों से पैदा हुए विकारों में लाभ करता है। तीव्रज्वर जनित दाह, पिपासा एवं वान्ति में भी यह सद्य: फलप्रद योग है। बड़ी इलायची को आग पर फुला कर उसके बीजों का चूर्ण ४ से ६ रत्ती के साथ दवाको २ रत्ती की मात्रामें मधु के साथ उपरोक्त स्थिति में प्रयोग करना चाहिये। श्वेत वज्रक्षार ६ रत्ती के साथ इसका प्रयोग करने से पेशाब साफ होकर ज्वर में शीघ्र कमी आती है। इसे १।। से ३ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।

मकरध्वज रस वटी--लघु

योगद्रव्य--

कस्तूरी १।। माशा, केशर ३ माशा---मुक्तापिष्टी या भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, रजत भस्म, बंग भस्म प्रत्येक ६-६ माशा, भीमसेनी कपूर, समुद्रशोष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के बीज, पीपल छोटी, श्वेतमरीच, छोटी इलायची के बीज, मोचरस प्रत्येक ९-९ माशा, भांग के बीज, जायफल, जावित्री, लवंग, श्वेतमूसली, सालम पंजा प्रत्येक १-१ तोला, मकरध्वज ६ तोला।

निर्माण-विधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। मकरध्वज को खरल में डालकर मर्दन करें और भस्मों तथा पिष्टियों को डालकर अच्छी तरह मिश्रित करें। फिर औषधि चूर्ण को डालें और पान के रस की भावना देकर मर्दन करें। जब अच्छी तरह घुटाई हो जावे तब कस्तूरी, केशर एवं अम्बर को मिलाकर ८ घण्टा घोंट कर १।।-१।। रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

शारीरिक शक्ति का पुनरुज्जीवन इस योग की विशेषता है। इससे शरीर के प्रत्येक अवयव को नवशक्ति प्राप्त होती है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत पुरुष-संस्थान आदि शरीर के प्रधानस्तम्भों को इस से बल प्राप्त होता है। स्वतन्त्र-रूप से अथवा सहायक औषधियों के साथ इसका उपयोग किया जाता है। मकर-ध्वज के समान यह योग भी योगवाही है। फलत: संयुक्त किये जानेवाले योग की शक्ति इसके द्वारा बढ़ जाती है। इसे $^1/_2$ से १ वटी की मात्रा में प्रयुक्त किया जाता है।

मकरध्वज रस वटी—बृहत्

योगद्रव्य--

कस्तूरी ३ माशा, अम्बर, केशर, स्वर्णवंग, मुक्तापिष्टी या भस्म प्रत्येक ६-६ माशा, अभ्रकभस्म, लौहभस्म, रजत भस्म, वंग भस्म, भीमसेनी कपूर, समुद्रशोष के बीज, पीपल छोटी, श्वेतमिर्च, छोटी इलायची के बीज, मोचरस प्रत्येक ९-९ माशा, भांग के बीज, जायफल, जावित्री, लवंग, श्वेतमूसली, सालम-पंजा प्रत्येक १-१ तोला एवं मकरध्वज ९ तोला।

निर्माण और उपयोग--

इस योग का निर्माण पूर्वयोग की तरह ही करना चाहिये। उपयोग भी उसकी ही तरह किया जाता है। विशेषत: ऐसे क्षेत्रों में इसका प्रयोग आवश्यक माना जाता है, जहाँ रोग की गहराई अधिक हो। इस योग में मकरध्वज, भस्मों की मात्रा तो अधिक है ही, साथ ही स्वर्ण भस्म भी है। स्नायु-मण्डल पर स्वर्ण की क्रिया अधिक होनी सुविदित है। हृदय, मस्तिष्क, यकृत्, वृक्क, शुक्रग्रन्थि आदि अवयवों पर इसकी बलाधायक क्रिया उच्चकोटि की होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फलतः इससे नवजीवन प्राप्त होना अवश्यम्भावी है। ओजक्षय के कारण सदा अवसादग्रस्त रहनेवाले व्यक्ति को कुछ समय तक इसका सेवन कराया जाये तो मूल कारण सहित बीमारी में श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है। मात्रा और अनुपान पूर्ववत् है।

मकरध्वज रसायन

योगद्रव्य--

स्वर्णसिन्दूर २ तोला, लौहभस्म, अभ्रक भस्म, बंग भस्म, शुद्ध अहिफेन, भाँग के बीज, मोचरस प्रत्येक १-१ तोला, मुक्तापिष्टी, रौप्य भस्म, केशर, जायफल, जावित्री, मस्तकी, माजूफल, सुपारी फूल, नागकेशर, छोटी इलायची के बीज, वंशलोचन एवं खुरासानी अजवायन प्रत्येक $^{1}/_{2}$–$^{1}/_{2}$ तोला।

निर्माण-विधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। स्वर्ण सिन्दूर को खरल में मर्दन कर अन्य भस्में मिलावें। फिर औषधि चूर्ण को डालकर वटके दूध की भावना दें। २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

रसायन, वाजीकरण गुण एवं शारीरिक तथा मानसिक शक्ति की वृद्धि के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। शरीर के समस्त प्रमुख अवयवों पर इसकी बलाधायक क्रिया होती है। किसी भी रोग के कारण विशेषतः शुक्रमेह और मधुमेह के कारण पैदा होनेवाली शीर्णता को मिटाने के लिए इसकी अमोघ क्रिया है। इससे शुक्र संस्थान को ताकत मिलती है और मधुमेह की शर्करा का नियन्त्रण होता है। बुढ़ापा में पैदा होनेवाली अङ्गों की शिथिलता और मानसिक अस्थिरता का यह श्रेष्ठ नियामक है। लक्षणों के अनुसार अनुपान भेद से इसका प्रयोग किया जाता है।

मण्डूराष्टक

योगद्रव्य--

सोंठ, धायफूल, नागरमोथा, श्वेतजीरा, खस, बेलगिरी, चिरायता एवं लोध प्रत्येक १-१ तोला, मण्डूर भस्म ८ तोला।

निर्माण-विधि, अधिकार और मात्रा--

काष्टौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करके मण्डूर भस्म के साथ खरल में डाल कर अच्छी तरह मर्दन कर लें। यकृतवृद्धि एवं यकृतक्रिया विकृति से होनेवाले अजीर्ण के प्रतिफल मल द्रवता और अतिसार में यह योग अच्छा फल प्रदान करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशेषतः बालकों के इन विकारों में इसकी क्रिया आशुफल प्रदान करती है। इसे स्वतन्त्र रूप से या अन्य समगुण विशिष्ट औषधियों के साथ चार रत्ती की मात्रा में वयस्कों के लिए प्रयोग करना चाहिये। बालकों को उनकी उम्र के अनुपात से देना चाहिये। अनुपान में भूना जीरा, मधु, चौबीस घंटा भिगोई सोंठ का घासा, भूनाजीरा, सोंठ एवं सैन्धवनमक मिश्रित दही का मट्ठा या छाछ एवं सौंफ जल आदि वस्तुएँ दी जाती हैं। यहाँ यह अवधेय है कि यह योग मण्डूर भस्म प्रधान है। भस्म जितनी उत्तम होगी इसका गुण भी उतना ही अच्छा मिलेगा।

मधुमेहारि रस

योगद्रव्य—

शुद्ध अहिफेन २ तोला, मकरध्वज २ तोला, त्रिवंग भस्म २ तोला, शुद्ध शिलाजतु २ तोला, स्वर्ण भस्म १ तोला, मुक्ता भस्म १ तोला, रौप्य भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, लौहभस्म १ तोला, प्रवाल भस्म १ तोला, गुड़मार १ तोला, नीमपत्ती १ तोला, सप्तरंगी १ तोला, जामुनमज्जा $^1/_2$ तोला, शुद्ध कुचिला $^1/_2$ तोला, सोंठ बेतरा $^1/_2$ तोला, ईमली के बीजों की मज्जा $^1/_2$ तोला, केले की जड़ $^1/_2$ तोला, कुक्कुटाण्डत्त्वक् भस्म दरद योग से बनी $^1/_2$ तोला, केशर $^1/_2$ तोला एवं कपूर $^1/_2$ तोला।

निर्माण-विधि—

अहिफेन को आर्द्रक रस से भावित कर शुष्क कर लें। काष्टौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। मकरध्वज को खरल में डाल कर मर्दन करें। भस्मों को मिलाकर घोंटें। फिर समस्त औषधियों को एकत्र कर गुड़मार क्वाथ, एवं श्वेत सदा बहार पुष्प स्वरस की ३-३ भावनाएँ देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

यह मधुमेह की विशिष्टतम औषधि है। इससे शर्करा विनियोजन क्रिया तो सुधरती ही है, साथमें उस रोग से पैदा होनेवाली शारीरिक दुर्बलता एवं स्नायविक विकारों में भी लाभ मिलता है। इस रोग से पैदा हुई रतिशक्तिहीनता में भी इससे अच्छा लाभ होता है। वायु की रुक्षता से शाखाओं की स्नायुओं में होनेवाले खिचाव को पूर्णलाभ करता है। तेलाकूचा पत्ता स्वरस, यज्ञोदुम्बर स्वरस, बेलपत्ता स्वरस, करेला फल स्वरस, निम्बादि हिम कषाय, मधुमेहान्तक क्वाथ आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मन्मथ रस

योगद्रव्य--

मकरध्वज या स्वर्णसिन्दूर ४ तोला, शुद्ध तथा पक्व अहिफेन २ तोला, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, वंगभस्म, रौप्य भस्म, शुद्ध शिलाजतु, जायफल, मोचरस प्रत्येक १-१ तोला, जावित्री, मांजूफल, रूमीमस्तकी, सुपारी फूल, सालमपंजा, शुद्ध श्वेत गुञ्जा, नागकेशर, छोटी इलायची के बीज, जुन्दवेदस्तर, वंश लोचन एवं केशर प्रत्येक १।२ – १।२ तोला।

निर्माण-विधि--

गुञ्जा को पोटलीबद्ध करके गो दुग्ध में १ घंटा तक स्वेदित करें। फिर गरम जलसे धोकर सुखा लें। जायफल के अन्दर में अहिफेन रखकर ऊपर आटा लगा कर घी में तल लें। काष्टौषधियों का वस्त्र छन चूर्ण तैयार करें। मकरध्वज को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर भस्मों को मिलावें और घोंटें। अनन्तर औषधि चूर्ण को डालें और घोंटें। बाद में प्याज के स्वरस में अफीम को घोलकर उपरोक्त संमिश्रण में मिलावें और अच्छी तरह मर्दन करें। फिर केशर मिलाकर घोटें। किंचित् शुष्क करके वटकी दूध की भावना देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सम्यक्तया शुष्क करलें।

उपयोग और तद्विधि--

रसायन, बाजीकरण गुणों के लिए इस योग की विशिष्ट क्षमता है। प्रमेह, धातु दौर्बल्य, स्तम्भन शक्ति की अल्पता, रति शक्ति का अभाव इसके विशेष लक्ष्य-स्थल हैं। बचपन की गलत प्रवृत्तियों से अपक्व शुक्र का क्षय होकर पैदा होनेवाले लक्षणों में इसका सफल प्रयोग होता है। इसके सतत सेवन से शुक्र की तरलता नष्ट होकर शुक्र गाढ़ा होता है। बाजीकर क्रिया के लिए संभोग से एक घण्टा पहिले १ से २ वटी घृतसितामिश्रित दूध से इस का सेवन करना चाहिये।

महाग्रन्थिवातान्तक रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर आर्द्रक स्वरस को वस्त्र गालित एवं वजन कर के भावनार्थ डालें। मर्दन करते हुए ४ सेर रस सुखा देना चाहिये। फिर २–२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर आतप शुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि—

पुरातन ग्रन्थिवात की यह अमोघ औषधि है। अर्दित, पक्षाघात, अवबाहुक, कलायखञ्ज आदि वातव्याधियों से भी इस से अच्छा लाभ होता है। १ से २ वटी की मात्रा में आदीरस मधु, बेलपत्ता रस मरीच चूर्ण, रास्नासप्तक, महारास्नादि चोपचीन्यादि आदि क्वाथ, हलवा आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

महावातगजांकुश रस

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तालतपकी, शुद्ध कुचिला, जावित्री, जायफल, लौंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, अकरकरा, शुद्ध हींग, शुद्ध मुसब्बर प्रत्येक १–१ तोला, शुद्ध संगी मोहरा एवं शुद्ध अहिफेन $^1/_2$-$^1/_2$ तोला

निर्माण-विधि—

पारद गन्धक की कज्जली कर लें। काष्टौषधियों का वस्त्र चूर्ण करके यथाविधि शुद्ध की हुई अन्य औधियों के चूर्ण के साथ खरल में डालकर आदी रस की भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करें।

उपयोग और तद्विधि—

वातव्याधि की प्रसिद्ध औषधि वातगजांकुश का यह बृहत् रूप है। वायु की विकृति के कारण पैदा होनेवाली समस्त वेदनाओं तथा शूलों पर इस की अमोघ क्रिया है। प्रतिश्याय जनित अङ्गव्यथा, सन्धि शूल, ग्रन्थिवात, आमवात, गृध्रसी, अवबाहुक, जानुशोथ, गुल्फ शोथ आदि रोगों पर इसका सफल प्रयोग होता है। आदी रस मधु, बेलपत्ता रस मरीच चूर्ण, सिन्धुवार स्वरस मधु, रास्नासप्तक, महारास्नादि, चोपचीन्यादि आदि क्वाथ एवं गरम दूध, गरम जल आदि अनुपानों से रोगानुसार १ से २ वटी की मात्रा में प्रयोग किया जाता है।

महावातराज रस

योगद्रव्य—

श्वेतसंखिया, पीतहरताल, हिंगुल, गन्धक, आमलासार, सिंगीमोहरा, वायविडंग, वंशलोचन एवं छोटी इलायची प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण-विधि—

संखिया को गो दुग्ध में दोलायन्त्र से चार घंटों तक पकावें। इसी तरह हरताल को कुष्माण्ड स्वरस में उतनी ही देर उसी विधि से पकावें। सिंगी मोहरा, गन्धक तथा हिंगुल की शुद्धि प्रचलित तरीकों से करें। फिर इन को खरल में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालकर मर्दन करें। अनन्तर ७ भावनाएँ आदी स्वरस की, ५ भावनाएँ लहसुन स्वरस की तथा ३ भावनाएँ भृंगराज स्वरसकी देकर दवाको शुष्क कर लें। अनन्तर अन्य दवाओं का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर दशमूल क्वाथ जल से अच्छी तरह घोंटकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

यह योग पुरातन दूषीविषों के कारण पैदा हुए वात विकारों में अतिशय लाभकारी है। आमवात, गठिया, अवबाहुक, गृध्रसी, कलायखञ्ज, क्रोष्टुकशीर्ष आदि कठिन वात रोगों में इसके प्रयोग से अति विशिष्ट लाभ प्राप्त होता है। इन रोगों की पुरातनता तथा कठिनता इसके प्रयोग का विशिष्ट लक्षण है। उष्णवात, गनोरिया एवं उपदंश—गर्मी का जहर शरीर में पुराना होकर जिन समस्त विकारों को उत्पन्न करता है, उन पर इस औषधि से पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। वात व्याधियों में आदीरस मधु, बेलपत्ता रस मरीच चूर्ण, सिन्धुवार स्वरस मधु, रास्ना सप्तक, महारास्नादि क्वाथ आदि से १-से-२ वटी की मात्रा में इसका प्रयोग करना चाहिये।

मुक्तागर्भ रस

योगद्रव्य—

अनवींध मोती ½ माशा, कस्तूरी १ माशा, केशर २ माशा, जायफल ३ माशा, रुद्राक्ष ४ माशा, जावित्री ५ माशा एवं लौंग ६ माशा।

निर्माण-विधि—

सर्व प्रथम मोतियों को पीतल के हिमामदस्ता में विधिसे कूट कर न घिसनेवाली खरल में डालकर दशमूल क्वाथ के जल से अच्छी तरह मर्दन करें। केशर तथा कस्तूरी को छोड़ कर अन्य औषधियों के सूक्ष्म चूर्ण को डाल कर दशमूल काढ़ा की भावना देकर खूब घोंटें। अनन्तर केशर, कस्तूरी डालकर चार घण्टा मर्दन कर १—१ रत्ती की गोलियाँ बना कर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

मोतीझरा, रोमान्तिका आदि स्फोटक संयुक्त ज्वरों के उपद्रवों को शमनकर निरापद ठीक करने की अति लाभकारी औषधि है। इसके प्रयोग से अन्दर बैठी फुन्सियां शीघ्र बाहर निकल आती हैं और रुग्ण की बेचैनी का शमन हो जाता है। शीतला रोग की प्रथमावस्था में इसके प्रयोग से माता की फुन्सियाँ अन्दर में नहीं रुकतीं और किसी तरह का उपद्रव नहीं होता। माता की फुन्सियों के अन्दर में बैठ जाने पर भी इसका प्रयोग लाभकारी सिद्ध होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुक्तादि बाल रस

योगद्रव्य--

मुक्तापिष्टी, स्वर्णवर्क, चाँदीवर्क, केशर, गोरोचन, भीमसेनी कपूर प्रत्येक ३-३ माशा, प्रवालपिष्टी, शुक्तिपिष्टी, कहरवापिष्टी, गोदन्ती ताल भस्म, गिलोय सत्व, संगयशव पिष्टी या भस्म, जहरमोहरा खताई पिष्टी या भस्म, दरयायी नारियल, गुलाब की केशर, कमल की केशर, नागकेशर, जराबन्द, पद्माख, छोटी-हर्रे, छोटी इलायची एवं वंशलोचन प्रत्येक ६-६ माशा।

निर्माण-विधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। भस्म तथा पिष्टियों को खरल में डालकर घोंटें। फिर औषधि चूर्ण को डालकर मर्दन करें। अनन्तर स्वर्णवर्कों को १-१ डालकर मर्दन करें। इसी तरह चाँदी के वर्कों को डालें और मर्दन करें। समस्त दवा को गुलाब जल की भावना देकर अच्छी तरह मर्दन करें। सम्यक् प्रकार घुट जाने पर केशर, गोरोचन एवं कपूर को डालें और घोंटें। फिर १-१ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

बालकों के समस्त रोगों की श्रेष्ठ औषधि है। विशेषतः जो बच्चे जन्मजात दुर्बल होते हैं, जिनकी अस्थियाँ कमजोर होती हैं और यकृत् पूर्ण क्रियाक्षम नहीं होता। ऐसे क्षेत्र में इससे बहुत ही अच्छा लाभ मिलता है। क्रमशः शरीर पुष्ट होता जाता है और अस्थिमार्दव पूर्णतया मिट जाता है। अवस्थानुसार १ वटी से २ वटी तक की मात्रा में इसका प्रयोग मधु के साथ करना चाहिये।

यष्ट्यादि लौह

योगद्रव्य--

मुलैठी, भारंगी, कटैरी, वासापत्ता, हल्दी, छोटीपीपल, गाजवां, सोम, हंसराज, वनप्साफूल, लिसोड़ा, उन्नाब एवं खत्मी बीज प्रत्येक १-१ तोला, लौह भस्म १४ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करके लौह भस्म के साथ खरल में डालकर ६ घण्टा मर्दन कर रख लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

समस्त श्लेष्म विकारों की यह पूर्ण फलप्रद औषधि है। इससे शुष्क हुआ श्लेष्मा तरल होकर आसानी से निकलने लगता है। वातज शुष्क श्वास और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कास में इसके प्रयोग से अच्छा फल प्राप्त होता है। दो से चार रत्ती की मात्रा में स्वतन्त्र रूप से अथवा अन्य सहयोगी दवाओं के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये।

रत्नगर्भ पोटली रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद १ तोला, स्वर्ण भस्म १/२ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, शंख भस्म १/२ तोला, सुहागाफूल १/२ तोला, पन्ना भस्म या पिष्टी १/२ तोला एवं माणिक्य भस्म या पिष्टी १/२ तोला।

निर्माण-विधि--

सर्वप्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें। फिर उसके साथ स्वर्ण भस्म डालकर अच्छी तरह मर्दन करें। अनन्तर शंख भस्म तथा सुहागा पुष्प मिलाकर निम्बू स्वरस देकर अच्छी तरह घोंटकर गोला बना कर सुखा लें। फिर इसे शराव सम्पुट में बन्द कर कपड़ मिट्टी करके लघुपुट दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल कर माणिक्य तथा पन्ना की भस्मों या पिष्टियों को मिलाकर घोंटें और आक के दूध की भावना देकर पूर्ववत् गोला बनाकर उसी तरह सम्पुट कर अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर पीसकर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

इस योग को जीवनी शक्ति के ह्रास के समय उसे पुनरुज्जीवित करने के लिए व्यवहृत किया जाता है। सन्निपात ज्वर में श्लेष्मा की वृद्धि होकर मस्तिष्क क्रिया लोप की स्थिति पैदा होने पर इसका प्रयोग आश्चर्यजनक लाभ करता है। संज्ञा शून्यता नष्ट होती है और ज्ञान का सम्यक् उदय होता है। इसके अतिरिक्त श्लेष्मा की विकृति से पैदा हुए अन्य कठिन रोगों में भी इससे अच्छा लाभ मिलता है। इसे १/२ से १ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार अनुपान भेद से प्रयोग करना चाहिये।

रविक्रान्ति रस--लघु

योगद्रव्य--

शुद्ध हिंगुल २ तोला, चोपचीनी २ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा, जायफल, जावित्री, लौंग, अकरकरा, सोंठ, मिर्च, पीपल छोटी, तेजबल का कांटा प्रत्येक १-१ तोला एवं केशर ६ माशा।

निर्माण-विधि--

हिंगुल को खरल में डालकर घोंटें। फिर केशर मिलाकर दृढ़ मर्दन करें। अनन्तर अवशिष्ट औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण को मिलाकर ६ घण्टा घोंटकर रख लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

पित्ताश्रित वातविकारों की श्रेष्ठ औषधि है। अकस्मात् हृदयावरोध मालूम पड़ना, यह अनुभव करना कि मेरा प्राणान्त अभी हो जायगा, हृदय की चंचलता का अनुभव होना, हथेली पगथली में पसीना आना, या जलन होना, मस्तिष्क में चक्कर आना, ओजक्षय के लक्षण, योपापस्मार आदि लक्षणों में इसे बड़ी इलायची के बीजों का चूर्ण चार रत्ती मधु, लौंग इलायची मिश्री का घासा, शतावरी स्वरस मधु आदि अनुपानों से अथवा आकस्मिक रूप के रोग लक्षणों में केवल मधु से २ से ३ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

रविक्रान्ति रस--बृहत्

योगद्रव्य--

रससिन्दूर या शुद्ध सिंगरफ २ तोला, चोपचीनी १ तोला, लौंग, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, दालचीनी, तालीशपत्ता, बीजबन्द, सोंठ, मिर्च, पीपल छोटी, पीपलामूल, श्वेतमूसली, स्याहमूसली, मोचरस, अकरकरा, विधारा, चित्रक, पित्तपापड़ा, देवदारु, दारुहल्दी, शुद्ध सिंगी मोहरा, तेजवल का कांटा, गिलोयसत्व एवं प्रवालपिष्टी, केशर प्रत्येक ६-६ माशा, मुक्तापिष्टी ३ माशा, अम्बर ३ माशा, कस्तूरी १।। मांशा।

निर्माण-विधि--

सर्व प्रथम काष्टौषधियों का कपड़छन चूर्ण कर लें। केशर, कस्तूरी तथा अम्बर को छोड़कर सब औषधियों को खरल में डालकर पान के स्वरस की भावना २ दिन तथा तुलसी स्वरस की भावना १ दिन देकर अच्छी घुटाई करें। फिर अवशिष्ट चीजें मिलाकर दशमूल काढ़े की १ भावना और लौंग के काढ़े की एक भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह पित्त संयुक्त वातविकारों में अतिशय लाभकारी है। दिल की घबराहट, मुँह का तिक्त तथा कषाय रस युक्त होना, मस्तिष्क के चक्कर, कानों की आवाज, मानसिक अस्थिरता, किसी काम पर जी न लगना, ऐसा अनुभव होना कि मैं जिन्दा न रह सकूँगा, हाथ-पैरों तथा समस्त शरीर में जलन, किसी एक अङ्ग की या समस्त शरीर की स्नायुओं में खिंचाव का अनुभव, नींद न आना, हाथ-पैरों में पसीना, अकस्मात् हृदय अवसाद का भय लगकर अत्यन्त बेचैन होना, नाड़ी की गति का कम होना, अपतन्त्रक तथा योपापस्मार के लक्षण पैदा होने पर इससे बहुत ही अच्छा फल मिलता है। रोग की निवृत्ति स्थायी रूप में होकर स्वस्थता प्राप्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होती है। इसका प्रयोग पूर्वयोग की तरह ही करना चाहिये। विशेष परि-स्थितियों में रोगानुसार अन्य अनुपान भी दिये जाते हैं।

रस गुग्गुलुः

योगद्रव्य—

रस सिन्दूर ½ तोला, वंग भस्म १ तोला, लौह भस्म १।। तोला, शुद्ध शिलाजीत २ तोला, त्रिकुटा चूर्ण ३ तोला, त्रिफला चूर्ण ४।। तोला, शुद्ध गूगल ६ तोला।

निर्माण-विधि—

शिलाजीत तथा गुग्गुलु की शुद्धि प्रचलित विधि से कर लें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। रस सिन्दूर को खरल में डालकर घोंटें। फिर भस्मों को मिलावें और घोंटें। बाद में औषधि चूर्ण को डालकर घोंटें। अनन्तर गूगल को हिमामदस्ता में डाल किंचित् जल देकर कूटकर अवलेह-सा बनावें। फिर उपरोक्त मिश्रित दवा को डाल कर अच्छी तरह कूटें। एकात्मता सम्पन्न होने पर ४-४ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर शुष्क कर लें।

प्रयोग और तद्विधि—

स्नायु संश्रित वात विकारों में इससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। शरीरस्थ धातुओं में से किसी की अल्पता होकर रुक्षता के साथ उत्पन्न वायु और तज्जन्य-विकारों पर इसका सफल प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त आमरस और तज्जन्य वात के शमन में भी इसकी अच्छी उपयोगिता है। एक से दो वटी की मात्रा में उचित अनुपान से इसका प्रयोग करना चाहिये।

रस भल्लातक

योगद्रव्य—

शुद्ध रसकर्पूर, अजमोद, अजवायन, खुरासानी अजवायन, किरमानी अज-वायन, दालचीनी, लौंग, वंशलोचन प्रत्येक ६-६ माशा, नारियल सूखा १ तोला, शुद्ध भल्लातक २ तोला, मक्खन २ तोला, गुड़ पुरातन ५ तोला।

निर्माण-विधि—

रसकर्पूर को क्रमशः १४ बैंगुनों में पकावें। भल्लातकों को दुग्ध में स्वेदित कर शुष्क करके वृन्तहीन कर लें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। फिर भल्लातकों को हिमामदस्ता में कूटें और थोड़ा चूर्ण डालकर छान लें। फिर उसके साथ नारियल को कूट लें। रसकर्पूर को खरल में डालकर मर्दन करें और मक्खन मिलाकर अच्छी तरह घोंटें। उपरोक्त चूर्ण के साथ इसको एकरस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संमिश्रित कर लें। फिर गुड़ को किंचित द्रव करके उसमें मिलावें और दृढ़ मर्दन करके ४-४ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

उपयोग और तद्विधि–

उष्णवात, उपदंश एवं तज्जनित विकार, ग्रन्थिवात, दूषित व्रण, पुरातन रक्त-विकार आदि सांघातिक रोगों पर इस योग की सफल क्रिया है। इसका प्रयोग करते समय यह लक्ष्य रखना चाहिये कि दवा दाँतों से चबाई न जाय। अतः अनुपान में हलवा, दूध आदि देना चाहिये। पूरी गोली निगलना संभव न होने पर सरोता या चाकू से टुकड़े करके देना चाहिये। मात्रा इसकी १ वटी से ३ वटी तक है। मुँह में घृत लेकर उसके साथ भी निगला जा सकता है। १ से २ सप्ताह तक इसका प्रयोग करना चाहिये।

रसेश्वर रस

योगद्रव्य––

रसकपूर १ तोला, अहिफेन १ तोला, लाल मरीच के बीज १ तोला।

निर्माण-विधि––

रस कपूर को स्वच्छ पतले वस्त्र में बाँधकर घृत पात्र में लटका कर नीचे मृदु अग्नि देकर एक घण्टा तक स्वेदित करें। यह ध्यान रखना चाहिये कि आँच इतनी न हो कि घी को जला दें। मरीच के बीजों का सूक्ष्म चूर्ण कर लें। फिर तीनों दवाओं को खरल में डालकर जल से अच्छी तरह घोंटकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

अधिकार, अनुपान और मात्रा––

यह योग अजीर्णजनित अतिसार से लेकर विशूचिका तक में समान फलप्रद है। इससे उदर में बनने वाले दूषीविष का शीघ्र शमन होता है और मल की प्रवृत्ति पर शामक प्रभाव होकर अतिसार ठीक होता है। विशूचिका की यह अन्यतम विशिष्ट औषधि है। इसमें पड़नेवाली तीनों ही औषधियाँ इस रोग में पूर्ण लाभकारी हैं। लाल मरीच के बीज इस बीमारी में चमत्कारपूर्ण काम करते हैं। इनसे रोग के बीजाणुओं का ही उन्मूलन नहीं होता, गिरती हुई प्राकृतिक शक्ति को भी बल मिलता है। इसे साधारण अतिसार में ४-४ घण्टा से शीतल जल से प्रयुक्त करना चाहिये। विशूचिका में प्याज के रस से १-१ घंटा से देना चाहिये। पर्याय क्रम से इसके साथ विशूचिकाहर वटी का प्रयोग किया जाय तो बहुत ही शीघ्रता से आशातीत लाभ मिलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशेष--

रसकर्पूर को पोटलीबद्ध न करके सीधा घृत में डालकर अच्छी तरह औंटकर भी शुद्ध किया जाता है। अन्य तथ्य यह है कि इस योग के व्यवहार के समय नमक त्याज्य नहीं करना होता और रस कपूर के कोई उपद्रव नहीं होते।

लीलाविलास रस

योगद्रव्यं--

हिंगुल विशेष पक्व २ तोला, बेलगिरी २ तोला, आमगिरी २ तोला, जामुन गुठली २ तोला, लौह भस्म १ तोला, जायफल १ तोला, मोचरस १ तोला, मस्तकी १ तोला, सोंठ १ तोला, शुद्ध कुचिला ६ माशा, जावित्री ६ माशा, गिलोय सत्व ६ माशा, शुद्ध अहिफेन ३ माशा, केशर ३ माशा।

निर्माण-विधि--

हिंगुल को भेड़ के दूध में ४ प्रहर भिगोवें। फिर निम्बूस्वरस में ४ प्रहर भिगोवें। अनन्तर मकोय तथा आर्द्रक स्वरस की भावना देकर गोल टिकिया बनावें। पेठा में छिद्र करके उसमें से टिकिया को अन्दर रखकर कपड़मिट्टी कर सुखावें। फिर ४ सेर गोठों की आँच दें। स्वांग शीतल होने पर हिंगुल को निकाल लें। काष्टौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। अहिफेन को आदी रस से भावित कर शुष्क कर लें। फिर समस्त औषधियों को खरल में डालकर पोस्तड़ोड़ा क्वाथ की भावना देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

संग्रहणी रोग की यह बहु फलप्रद औषधि है। मल बाँधने के साथ-साथ पाचन शक्ति को सबल करती है और आम तथा वायु का शमन करती है। अति प्रवृत्त आम दोष के आंशिक अवरोध के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। जीर्ण ग्रहणी विकार में दोषों की उल्वणता न रहने पर इसके सेवन से मल बँध के आने लगता है और वातादि का प्रदूषण शान्त हो जाता है। ह्रीबेरादि क्वाथ, मुस्तकादि क्वाथ, जातिफलादि क्वाथ, सोंठ, जायफल, बेलगिरी का घासा आदि अनुपानों से १-१ वटी की मात्रा में इसका प्रयोग किया जाता है।

वमनकुठार रस

योगद्रव्य--

रस सिन्दूर १ तोला, निम्बूसत्व ९ माशा, लौंग ६ माशा, छोटी इलायची के बीज ४।। माशा, जहरमोहरा, खताई की पिष्टी ३ माशा एवं पीपरमेंट १।। माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

रस सिन्दूर को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर अन्य दवाओं को क्रमशः डालते जायं और मर्दन करते जायं। अच्छी तरह मर्दन हो जाने पर निकाल कर रख लें। गोलियाँ बनानी हों तो कमरख का रस देकर घोटें और २-२ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क करके रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

किसी भी कारण से और किसी भी स्थिति में होनेवाली उल्टियों पर इसकी शामक क्रिया तत्क्षण प्राप्त होती है। कुछ ही मात्राओं से वमन की शान्ति हो जाती है। उचित अनुपान अथवा केवल मधु से इसका प्रयोग करना चाहिये।

वंगाष्टक रस

योगद्रव्य--

वंगभस्म विशेष विधि निर्मित ४ तोला, शुद्ध शिलाजतु २ तोला, रौप्य भस्म १ तोला, रससिन्दूर १ तोला, अभ्रक भस्म $^1/_2$ तोला, लौह भस्म $^1/_2$ तोला, स्वर्णवंग $^1/_4$ तोला एवं मुक्ता भस्म या पिष्टी $^1/_4$ तोला।

निर्माण-विधि--

शुद्ध वंग को गलाकर समान भाग शुद्ध पारद में मिलावें। करंजवे के पत्तों को पीस कर उसके गोले में रखकर कपड़मिट्टी कर फूंकें। स्वांगशीतल होने पर निकालकर पुनः उक्त गोले में फूंकें। इस तरह ६ पुट दें फिर समस्त औषधियों को खरल में डाल शतावरी स्वरस की ३ भावना देकर १।।-१।। रत्ती की गोलियाँ बना कर शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

प्रमेह, धातुदौर्बल्य की यह विशिष्टतम औषधि है। पारद के साथ बनी वंग भस्म में अतिशय गुण होने से यह योग अधिक फलप्रद सिद्ध होता है। योग में पड़नेवाले अन्य योगिक भी गुण वृद्धि में सहायक होते हैं। वंग, रौप्य एवं शिलाजतु ये तीन औषधियां शुक्र विकारों के लिए विशिष्ट गुणदायक होती हैं। इनका आंशिक समावेश भी लाभदायक होता है। और जिस योग में तीनों का संमिश्रण हो वह अच्छा फलप्रद होगा ही। रससिन्दूर, मुक्ता, लौह तथा अभ्रक योग के गुणों को प्रवल बनाते हैं। शुक्र विकार के कारण हृदय दौर्बल्य तथा धारणाशक्ति की कमी में यह अच्छा फल प्रदान करता है। शतावरी स्वरस मधु, कौंच बीज चूर्ण मधु, मक्खन, मलाई आदि अनुपानों से १ से २ वटी की मात्रा में इसका प्रयोग करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्रणराक्षस रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

शुद्ध श्वेत सोमल को खरल में मर्दन कर लें। फिर भेड़ का दूध डालकर घोंटें। क्रमशः भेड़ का दूध डालते जायं और घोटते रहें। इस तरह २।। सेर दूध भेड़ का डालें। २५-३० दिन भर जब दवा गाढ़ी होकर दूध की रबड़ी जैसी हो जाय तब गुलाब फूल का चूर्ण गोली बनने लायक डालकर मर्दन कर १-१ रत्ती वजन की गोलियाँ बनावें और अच्छी तरह से सुखा लें।

उपयोग और तद्विधि--

उपदंश व्रण, गलित कुष्ट, नेत्र के अन्दर का व्रण, तालुव्रण, दुष्ट व्रण, विद्रधि, भगन्दर आदि पर इसका सफल प्रयोग होता है। २ से ४ गोली की मात्रा में दूध, घी, हलवा आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये। इस योग में नमक-खटाई अपथ्य है। उपदंश के दूषीविष के कारण रक्तविकार की स्थिति पैदा हो जाने पर रक्तशोधक अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

वातचिन्तामणि रस

योगद्रव्य--

रससिन्दूर १ तोला, शुक्ति भस्म १ तोला एवं शुद्ध स्वर्णगैरिक १ तोला।

निर्माण-विधि--

गैरिक को वस्त्रछन करके कच्चे गो-दुग्ध से भावना देकर घोंट कर सुखा लें। रससिन्दूर को खरल में डालकर मर्दन करें। फिर अन्य दवाओं को मिलाकर घृत कुमारी स्वरस से घोंटकर १।।-१।। रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

यह औषधि वृ० वात चिन्तामणि रस की प्रतिनिधि अथवा प्रतिरूपात्मक है। रुक्ष वायुजनित विकारों में इससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। मस्तिष्क में चक्कर आना, दिलकी घबराहट, मानसिक अस्थिरता, अनिद्रा आदि लक्षणों में शीघ्र ही इसका सुफल प्राप्त होता है। रोगानुसार उचित अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

वातभैरव रस

योगद्रव्य--

कस्तूरी १।। माशा, अम्बर ३ माशा, केशर ६ माशा, मल्लमकरध्वज १ तोला, मुक्ता भस्म १ तोला, माणिक्य भस्म १ तोला, अकीक भस्म १ तोला, प्रवाल भस्म १ तोला, छोटी इलायची के बीज २ तोला एवं वंशलोचन २ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

इलायची के बीज तथा वंशलोचन को खरल में पीस कर सूक्ष्म कर लें। मल्ल-सिन्दूर को खरल में डालकर मर्दन करें और अन्य भस्मों को क्रमशः डालते जायें एवं मर्दन करते रहें। फिर दशमूलक्वाथ की भावना देकर अच्छी तरह घोंटें। बाद में केशर, अम्बर एवं कस्तूरी को मिलाकर ४ घंटा घोंटकर $^1/_2$–$^1/_2$ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करके रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

वातशामक और दुर्बलता नाशक रूप में इस दवा का अच्छा उपयोग है। इसकी कुछ ही मात्राओं से अर्दित में लाभ दिखाई देने लगता है। पक्षाघात, मन्यास्तम्भ, अवबाहुक, अपतन्त्रक आदि वात विकारों में बहुत ही अच्छा फल इससे प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त श्लेष्मज व्याधियों तथा शारीरिक दुर्बलता, हृदय दौर्बल्य, मानसिक अस्थिरता में भी इससे असीम लाभ होता है। रोगानुसार उचित अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

वातरक्तारि रस

योगद्रव्य--

रसकपूर, श्वेतसंखिया, दाल चीकना, सिंगरफ, भल्लातक, लवंग, श्वेत चन्दन, श्वेत सारिवा एवं काले तिल प्रत्येक १-१ तोला, अकरकरा, अजमोद, अजवायन, खुरासानी अजवायन एवं केशर प्रत्येक $^1/_2$-$^1/_2$ तोला।

निर्माण-विधि--

रस कपूर को महीन कपड़े में बाँध कर क्रमशः चौदह बैगुनों में पकावें। सोमल को गो-दुग्ध में स्वेदित करें। फिर रसकपूर से लेकर सिंगरफ तक के चार द्रव्यों को अलग-अलग निम्बूस्वरस में घोंटें। अनन्तर चारों को एकत्रित करके ३ दिन तक ब्राण्डी शराब से घोंटकर शुष्क करके काष्ट औषधियों के साथ सूक्ष्म चूर्ण कर लें। अनन्तर केशर सहित भल्लातक एवं औषधि चूर्ण को खरल में डालकर चोपचीनी के क्वाथ से एक दिन घोंटें। अनन्तर उपरोक्त उड़ाये पुष्पों में से एक तोला पुष्प मिलाकर तीन दिनों तक चोपचीनी के क्वाथ से घोंटकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग वातरक्त जैसी कष्टप्रद एवं दुःसाध्य बीमारी में अतिशय फलदायी औषधि है। औषधि प्रयोग के समय निम्नलिखित क्वाथ अनुपान रूप में प्रयोग करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मजीठ, मुण्डी, शीशम बुरादा, खस, उशवा, उन्नाव, मकोय, बनप्साफूल, काशनी बीज, हर्रे छाल, बहेड़ा छाल, आमला, मुलैठी, धमासा, नीमछाल, लाल चन्दन, चिरायता, शाहतरा, पित्तपापड़ा, नीलकमल, गोखरू, गिलोय, गुलाबफूल एवं बबूल छाल सब औषधियाँ समान भाग। यथाविधि तैयार कर के दो तोला की मात्रा को चालीस तोला जल में औंटाकर दश तोला जल शेष रखकर छान लें। इसमें एक तोला मधु मिलाकर उपरोक्त रस की एक गोली के साथ पिलावें। इस तरह रोगनिवृत्ति पर्यन्त इन दोनों दवाओं का प्रयोग करें। रोगी को नमक विहीन पथ्य देना चाहिये।

वातराज रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सिंगरफ, शुद्ध तपकी हरताल, शुद्ध सिंगी मोहरा, शुद्ध अहिफेन, शुद्ध सुहागा चौकीया, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, सुरंजानमीठा, मुसब्बर एवं जायफल, समस्त औषधियाँ समभाग में।

निर्माण-विधि--

प्रचलित विधि से शुद्ध करने की औषधियों को शुद्ध कर लें। पारद तथा गन्धक की कज्जली बना लें। औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण तथा अन्य दवाओं को कज्जली के साथ खरलमें डालकर एरण्डमूल २ तोला के काढ़े की भावना दें। इस तरह ७ भावनाएँ एरण्ड मूलक्वाथ की, एक दो पोथिया लहसुन की ७ भावनाएँ और आदी के रस की ७ भावनाएँ देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छाया शुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

आमरस संयुक्त वात विकारों में यह पूर्ण सफल महौषधि है। आमवात, ग्रन्थिवात, अवबाहुक, जानुशोथ आदि वातव्याधियों में इससे बहुत ही शीघ्र और अच्छा फल प्राप्त होता है। हर अवयव के वातज शूल में इसकी तत्क्षण क्रिया होती है। आर्द्रक रस मधु, निर्गुण्डी स्वरस मधु, रास्नासप्तक क्वाथ मधु, महा-रास्नादि क्वाथ मधु आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

वातश्लेष्म चिन्तामणि रस

योगद्रव्य--

कस्तूरी, अम्बर, भीमसेनी कर्पूर, गोरोचन प्रत्येक ३-३ माशा, स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, मुक्तापिष्टी, केशर प्रत्येक ६-६ माशा, षड्गुणबलिजारित मकरध्वज, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, प्रवाल भस्म, अमृतासत्व प्रत्येक १-१ तोला, अकरकरा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दालचीनी, जावित्री लवंग प्रत्येक १।।-१।। तोला, खैरसार, पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, जायफल २-२ तोला।

निर्माण-विधि--

भस्मों को एक साथ अच्छी तरह मर्दन कर, काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण मिलाकर एक दिन सूखा घोंटें। फिर तुलसी स्वरस, ब्राह्मी स्वरस, वासास्वरस, कटैरी स्वरस, पान स्वरस की ३-३ भावनाएं दें। आदी रस की २ भावनाएं देकर अम्बर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन एवं केशर मिलाकर एक भावना आदी रस की देकर अच्छी तरह घोंटकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

जैसा कि इसके नाम से विदित होता है यह वात तथा श्लेष्मा के विकारों की श्रेष्ठतम महौषधि है। विशेषतः जिन वात विकारों में श्लेष्मा का आश्रय रहता है, ऐसे रोगों में इससे शीघ्र ही सुफल प्राप्त होता है। श्लेष्मा के ऐसे विकार जिनमें वायु का संयोग होता है इसके प्रयोग से शीघ्र शान्त होते हैं। रोगानुसार उचित अनुपान से इसका प्रयोग करना चाहिये।

बाताशनि रस

योगद्रव्य--

शुद्ध श्वेत सोमल ४ माशा, शुद्ध पारद ४ माशा, शुद्ध गन्धक ४ माशा, शुद्ध अहिफेन ४ माशा, शुद्ध सिंगरफ ८ माशा, कत्था १ तोला एवं मरीच १ तोला।

निर्माण-विधि--

सोमल को भैंस के गोबर में दोलायन्त्र से स्वेदित करें अथवा कद्दू के रस, गाय के दूध में उपरोक्त विधि से स्वेदित करें या ७ बैंगुनों में क्रमशः पुटपाक करें। पारदादि औषधियों की प्रचलित विधि से शुद्धि करें। फिर पारद गन्धक की कज्जली के साथ सोमल को घोंटें। बाद में अन्य औषधियों को मिलाकर मर्दन कर आमलकी स्वरस या आमलों के क्वाथ की भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग अर्दित, ग्रन्थिवात, पक्षाघात, वातज अस्थिवृद्धि, उपदंश, पुरातन श्लेष्म विकार, फलायखञ्ज, संवेदन शून्यता एवं जीर्ण रक्तविकार पर अच्छा फलदायक है। इसे १ वटी की मात्रा में अनुपान भेद से इन रोगों में प्रयुक्त किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विद्रुमादि रस

योगद्रव्य—

प्रवाल शाखा २ तोला, रक्त अकीक २ तोला, चाँदी वर्क १ तोला, जहरमोहरा १ तोला, अनबींध मुक्ता ½ तोला, आवरेशम ½ तोला।

निर्माण-विधि—

प्रवाल शाखा तथा अकीक आदि को सफा हिमामदस्ता में महीन कूट कर न घिसनेवाली अच्छी खरल में डालें। फिर इनके साथ चाँदी के वर्कों को एक-एक डाल कर मर्दन करें। समस्त पत्र मिल जाने पर गुलाब फूलों का स्वरस देकर घुटाई करें। सूखने पर छोटी-छोटी टिकिया बनाकर छायाशुष्क करके छोटे सम्पुट में बन्दकर कपड़मिट्टी कर आरण्यकोत्पलों की हल्की आँच दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल कर नील कमल स्वरस की भावना देकर उपरोक्त तरीके से आँच दें। फिर मोलसरी के पुष्पों के स्वरस की भावना देकर पुट दें। अन्त में अर्क चन्दन से घोंटकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

अल्प औषधियों से बना होकर भी यह अपने क्षेत्र का बड़ा वीर्यवान योग है। हृदय, मस्तिष्क को शक्ति देने और पित्त शान्ति में इसकी श्रेष्ठ क्रिया है। इसके अतिरिक्त यकृत, वृक्क तथा मूत्र संस्थान के ऐसे रोग जिनमें शामक और बलाधायक औषधि की आवश्यकता होती है इसके द्वारा अच्छे लाभान्वित होते हैं। १-१ वटी की मात्रा में रोगानुसार उचित अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

विशूचिका भञ्जन रस

योगद्रव्य—

सुपुष्ट भल्लातक २० तोला, खुरासानी अजवायन २० तोला, शुद्ध हिंगुल ४ तोला, जायफल, जावित्री, अकरकरा, जहरमोहरा खताई पिष्टी प्रत्येक १-१ तोला, दालचीनी, स्याहजीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, छोटी इलायची, अगर, मस्तकी, शंखभस्म, वराटिका भस्म, अभ्रक भस्म एवं भीमसेनी कपूर प्रत्येक ½-½ तोला।

निर्माण-विधि—

सर्वप्रथम भिलावों तथा अजवायन को हमामदस्ता में डालकर महीन लुगदी बन जाने तक कूटें। फिर एक हंडी में आधी दवा को बिछा दें। उस पर हिंगुल के २-२ तोले के दो टुकड़े रखकर बाकी आधी दवा उसके ऊपर देकर जमा दें। यह सावधानी रखनी चाहिये कि भल्लातक तैल का स्पर्श न हो। हंडी के ऊपर ढक्कन देकर सन्धि बन्धन करके चूल्हे पर रखकर नीचे ३ घंटा तक मध्य-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माग्नि दें। शीतल होने पर हिंगुल की कृष्ण भस्म को अलग निकाल लें। फिर औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण भस्मों के साथ इसको खरल में डालें दो तोला की मात्रा में। अच्छी तरह खरल करके गोमूत्र की भावना देकर खूब मर्दन कर सूखने पर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग विशूचिका की प्रारम्भावस्था में अच्छा लाभ करता है। दो से चार गोली की मात्रा में आधा घण्टा से एक घण्टा के अन्तर से रसोन स्वरस मधु और आदीरस मधु से पर्याय क्रम से देनी चाहिये। रसोन स्वरस में कर्पूर तथा पीपरमेंट के यौगिक अथवा पोदीना अर्क को उचित मात्रा में मिलाया जा सकता है। रोग के कारण हाथ-पैरों पर खिचाव-आक्षेप-चालू होने पर सरसों तैल में इस रस की १० गोलियाँ एवं जायफल, सोंठ, कुटकी का ४-४ माशा चूर्ण मिलाकर मालिश करने से लाभ होता है।

विशूचिका विध्वंशन रस

योगद्रव्य--

लाल मरीच वीज सहित २॥ तोला, गोघृत स्वेदित रस कपूर ३ माशा, अहिफेन ३ माशा, केशर ६ माशा एवं कपूर ६ माशा।

निर्माण-विधि--

रस कपूर को पोटलीबद्ध करके १ घंटा तक मन्दाग्नि पर गोघृत में स्वेदित करें। अतितीक्ष्ण बीजसहित लालमिर्चों को अति सूक्ष्म पीस लें। समस्त औषधियों को ख़रल में डालकर प्याज़ का रस देकर अच्छी तरह मर्दन कर १॥-१॥ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

विशूचिका की द्वितीय और तृतीय अवस्था में यह औषधि ईश्वर का वरदान सिद्ध होती है। इससे विशूचिका के दूषीविष का सर्वथा निरसन होकर रोगी मृत्यु मुख से वापिस लौट आता है। प्याज के स्वरस के साथ १-१ घंण्टा के बाद इसकी ३ मात्राएँ देनी चाहिये। आवश्यक अन्य दवाओं का प्रयोग अथवा उपचार करते रहना चाहिये।

विश्वेश्वर रस

योगद्रव्य और निर्माण-विधि--

शुद्ध सोमल ६ माशा, गोदन्ती हरताल १ तोला। दोनों को खरलमें मर्दन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर तुलसीपत्र स्वरस की ७ भावनाएँ देकर $^1/_४$ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि–

विषमज्वर की अच्छी दवा है। ज्वर विसर्ग काल में १ से ३ मात्रा मिश्री की बुकनी जल से देनी चाहिये। पुरातन विषमज्वर में १-१ वटी प्रतिदिन किसी सहयोगी अनुपान अथवा दूध से कुछ दिन सेवन कराने से ज्वर का विसर्ग और निवृत्ति तो होती ही है, साथ में अच्छा बल प्राप्त होता है। कफप्रधान श्वासरोगों में भी इसका सेवन लाभकारी सिद्ध होता है।

विषमज्वरारि रस

योगद्रव्य––

शुद्ध सोमल १ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला, पपड़िया कत्था १ तोला एवं छोटी इलायची के बीज २ तोला।

निर्माण-विधि––

सोमल तथा हिंगुल की शुद्धि प्रचलित तरीकों से कर लें। इलायची के बीजों का वस्त्रछन चूर्ण बनावें। खरल में क्रमशः एक-एक दवाओं को डालते हुए मर्दन करें। फिर अमर बेल स्वरस की ५ भावनाएँ देकर चौथाई रत्ती के प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा––

यह योग विषमज्वर में प्रयुक्त होनेवाले मल्ल घटित योगों में सबसे सौम्य है, अथच पूर्ण लाभप्रद भी। इसे १ से २ गोली की मात्रा में ज्वर के विसर्गकाल में २-२ घंटे से मिश्री के जल से देना चाहिए। गोदन्ती ताल भस्म तथा सितोपलादि चूर्ण के साथ भी इसका प्रयोग होता है। पथ्य में रोगी को दूध तथा मीठे फलों का रस अधिक देना चाहिये। औषधि की वीर्यवत्ता को अधिक बढ़ाने के लिए इसके साथ किसी तिक्त दवा सप्तपर्णघन, सुदर्शन चूर्ण फाण्ट आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

वेदनाहर रस

योगद्रव्य––

रससिन्दूर १ तोला, शुद्ध कुचिला ६ माशा, खुरासानी अजवायन ६ माशा, शुद्ध अहिफेन ६ माशा, कपूर ६ माशा, केशर ३ माशा, जायफल ३ माशा, जावित्री ३ माशा, अम्बर १॥ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

समस्त औषधियों को सूक्ष्म करके रीठा भिंगोये जल से मर्दन कर १–१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क करलें।

उपयोग और तद्विधि—

पीड़ा की विशेष अनुभूति का शमन करके आराम देने की दवाओं में इसका अन्यतम महत्त्वपूर्ण स्थान है। वात तथा श्लेष्मा की विकृति से पैदा होनेवाली व्यथा में भी इसका अच्छा उपयोग है। एक से दो वटी की मात्रा में उचित अनुपान से इसका प्रयोग करना चाहिये।

शतमल्लादि रस

योगद्रव्य--

शुद्ध श्वेत संखिया, शुद्ध हिंगुल, शुद्धताल तपकी, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ, वायविडंग, वंशलोचन एवं छोटी इलायची प्रत्येक औषधि १-१ तोला।

निर्माण-विधि--

सोमल को गोदुग्ध में तीन घंटा स्वेदित कर क्रमशः चौदह वैंगुनों में पकावें। हरताल को कुष्माण्ड स्वरस में स्वेदित करें। हिंगुल को निम्बू स्वरस से भावित करें। गन्धक तथा वत्सनाभ की शुद्धि प्रचलित विधि से करें। औषधि चूर्ण के साथ उपरोक्त दवाओं को खरल में डाल कर भृङ्गराज स्वरस की ७ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग उपदंश तथा उष्णवात की पुरातनावस्था तथा तज्जनित वात एवं रक्त विकारों में अति सुन्दर लाभ करता हैं। अनेकों दवाओं के प्रयोग से शमन न होनेवाली इन बीमारियों का दूषी विष इसके प्रयोग से शीघ्र शान्त हो जाता है। रोगी को कुछ खिलाकर २ तोला घी के साथ इसे निगलवा देना चाहिये। इस तरह चौदह दिनों तक सुबह-शाम दवा का प्रयोग करना चाहिये। दवा देने के पन्द्रह मिनट के बाद थोड़ा-सा गरम पानी रोगी को पिलाना चाहिये। दवा प्रयोग के समय तथा इतने ही दिनों बाद में भी नमक का प्रयोग न करना चाहिये। घी तथा दूध का सेवन अधिक कराना चाहिये।

श्वास गजेन्द्र केशरी रस

योगद्रव्य--

कस्तूरी १।। माशा, केशर ३ माशा, अभ्रक भस्म ३ माशा, लौह भस्म ३ माशा, जायफल ३ माशा, जावित्री ३ माशा, अकरकरा ३ माशा, भल्लातक पक्व हिंगुल ६ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

भल्लातक ३ पाव लेकर लोहे के हिमामदस्ता में तैल के स्पर्श से बचते हुए महीन कूटलें। फिर एक हंडी में इसमें से आधा बिछावें। उस पर हिंगुल १ तोला के दो टुकड़े करके रखें और बचा हुआ आधा भल्लातक कल्क को उनपर जमा दें। फिर हंडी को चूल्हेपर रखकर नीचे एक घंटा तक अग्नि दें। भल्लातक जल जाने पर स्वाङ्ग शीतल करके हिंगुल को निकाल लें। अनन्तर एक बड़े प्याज में गड्ढा करके उसमें हिंगुल को रखें और उसको कड़ाही में रखकर मुर्गी के चालीस अण्डों की जर्दी उस पर डालें। फिर नीचे अग्नि देकर उसको जलावें। अनन्तर हिंगुल को निकाल लें। आधा तोला हिंगुल को खरल में डालकर मर्दन कर कस्तूरी, केशर, भस्म तथा कपड़छन औषधि चूर्ण को मिश्रित कर आदीस्वरस की भावना देकर अच्छी तरह मर्दन कर १॥-१॥ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

श्वास रोग की यह महौषधि है। इसकी एक गोली रोगी को रात में दूध से देनी चाहिये और सुबह उसे बाजरे के आटे का हलवा खिलाना चाहिये। इस तरह चालीस दिनों तक करना चाहिये। रोग पुराना होने पर साठ दिनों तक देना चाहिये। इससे रोग के निर्मूल होने के साथ शारीरिक शक्ति का भी सम्पूर्ण विकाश होता है।

श्वासारि शंख

योगद्रव्य--

शंख भस्म १० तोला, शुद्ध मैनसिल २॥ तोला, शुद्ध श्वेत सोमल १। तोला, अर्क दुग्ध यथावश्यक।

निर्माण-विधि--

शंख भस्म को खरल में डाल कर मैनसिल १। तोला मिलाकर मर्दन करें। फिर अर्क दुग्ध की भावना देकर अच्छी तरह घोंट कर टिकिया बना कर सम्पुट कर हल्की आँच देकर फूंक लें। इसी तरह दूसरी तथा तीसरी पुट अवशिष्ट मैनसिल और सोमल मिला कर दें। स्वाङ्गशीतल होने पर निकाल लें और सूक्ष्म पीसकर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

श्वास यन्त्रों पर इसकी असीम क्रिया है। कफाधिक्य के कारण श्वास रोग की उपस्थिति में सत्वर फल प्रदान करता है। कफ की मात्रा कम हो जाती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और श्वास का शमन होता है। वृद्धावस्था जनित श्लेष्म विकारों पर इसका सेवन अतिशय फलदायक होता है। श्लेष्मा की निवृत्ति तथा बलाधान दोनों कार्य निष्पन्न होते हैं। इसे $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में आदी रसमधु, सितोपलादि चूर्ण मधु, श्लेष्मान्तक योग मधु आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिये।

श्वासारि रस

योगद्रव्य—

शुद्ध सोमल ३ माशा, अभ्रक भस्म ६ माशा, छोटी इलायची के बीज १ तोला, वंशलोचन २ तोला एवं बंगला पान डण्डी सहित ५० नग।

निर्माण-विधि—

शुद्ध सोमल को खरल में डाल कर मर्दन कर लें। फिर पान की डण्डियों को क्रमशः डालते जावें और मर्दन करते रहें। फिर अन्य दवाएं मिलाकर अच्छी तरह मर्दन कर सूक्ष्म करके १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावें। आवश्यक हो तो बंगलापान का रस डालें।

उपयोग और तद्विधि—

श्लेष्मा प्रधान श्वास रोग में जिसमें कफ ज्यादा गिरता हो इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है। क्रमशः श्लेष्मा कम होता जाता है और रोगी आरोग्योन्मुख होता जाता है। इसको १-१ वटी की मात्रा में दूध से प्रयुक्त करना चाहिये। दूध की असहिष्णुता पर हलवे का अनुपान प्रशस्त होता है।

श्वासारि लौह

योगद्रव्य—

मुलैठी, गाजवां, जूफा, वनप्साफूल, लिसोड़ा, हंसराज काला, बीजरहित मुनक्का, छोटे बेर की मिंगी, छोटी पीपल, आमला, काकड़ासिंगी, कटैरी, वासापत्ता, भारंगी, विडंग, कट्फल, सोम, कालीमिर्च एवं पुष्कर मूल प्रत्येक १-१ तोला, लोह भस्म २० तोला।

निर्माण-विधि—

औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण के साथ लौह भस्म को खरल में डाल कर अच्छी तरह मर्दन कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि—

श्वास रोग की प्रत्येक अवस्था में यह अच्छा फलप्रद योग है। इसके प्रयोग से श्लेष्मा आसानी से निकलने लगता है और क्रमशः श्वास का खिंचाव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिट जाता है। इसे स्वतन्त्र रूप से अथवा अन्य सहायक औषधियों के साथ २ से ४ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

शीतज्वरारि रस

योगद्रव्य—

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला एवं पीपल १ तोला।

निर्माण-विधि—

संखियाँ को पके हुए बैंगुन में रख कर १४ बार पकावें। फिर अन्य दोनों औषधियों को डालकर पान के रस में अच्छी तरह मर्दन कर राई प्रमाण वटी बनावें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

शीत ज्वर के समय से १ घंटा पूर्व १ वटी पतासा में रख कर जल से देनी चाहिये। इससे ज्वर दौरा रुक जाता है। रोगी को दूध तथा फलों का सेवन अधिक कराना चाहिये।

शीतांशु रस

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, प्रवाल पिष्टी, जहरमोहरा पिष्टी, संगयशवपिष्टी, गिलोयसत्व एवं कपूर प्रत्येक २-२ तोला, शुद्ध शिलीजीत, श्वेतचन्दन, छोटी इलायची, कहरवा पिष्टी, नील कमल, दरयायी नारियल एवं खस प्रत्येक १-१ तोला, नागरमोथा, नेत्रवाला, जटामांसी, शुद्ध खूबकला, गाजवां के फूल, मुलैठी, कपूर कचरी एवं सूखा पोदीना प्रत्येक $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला।

निर्माण-विधि—

पारद गन्धक की कज्जली बनावें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। फिर समस्त औषधियों को खरल में डाल कर मर्दन करें और गुलाब जल की भावना दें। अच्छी तरह घुटाई होने पर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया-शुष्क कर लें।

उपयोग और उसकी विधि—

पित्त शामक गुण के लिए यह श्रेष्ठतम महौषधि है। समस्त प्रकार के पित्त विकार इसके प्रयोग से शीघ्र ही शान्त हो जाते हैं। ज्वर के तीव्र उत्ताप में भी इससे शीघ्र फल प्राप्त होता है। उत्ताप की शान्ति होकर ज्वर नीचे आ जाता है। रोगानुसार उचित अनुपानों से इसका उपयोग करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शूलामृत रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, शंख भस्म, वराटिका भस्म, शम्बूक भस्म, सोंठ, मरीच, पीपल, हर्रे छाल, बहेड़ा छाल, आमला, श्वेत जीरा, स्याह जीरा, चित्रक, बड़ी इलायची, अजवायन, खुरासानी अजवायन, लौंग, एरण्ड मूल, सोया बीज, निशोथ छाल, धनियाँ, यवक्षार, सज्जीक्षार, भूना सुहागा, भूनी हींग, सैन्धव नमक, संचर नमक, विड़ नमक, समुद्र नमक, सांभर नमक प्रत्येक १-१ तोला, शुद्ध कुचिला ४ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करें। औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण कर लें। हींग को भून लें। फिर भस्म सहित समस्त औषधियों को खरल में डालकर मर्दन कर बिजोरा निम्बू की १ भावना, आदीरस की २ भावना एवं बकरी के दूध की ३ भावना देकर ३-३ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर आतपशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

यह योग समस्त प्रकार के उदर शूलों में अच्छा लाभप्रद है। वात शूल, अम्ल शूल, यकृच्छूल, वृक्क शूल जैसे शूलों एवं वाताजीर्ण, रसशेषाजीर्ण, आध्मान, ऊर्ध्व वायु आदि अग्निविकारों पर इसकी पूर्ण सफल क्रिया होती है। स्वतन्त्र रूप में अथवा सहायक अन्य औषधियों के साथ रोगानुसार अनुपान भेद से इसका प्रयोग करना चाहिये।

श्लेष्मकुठार रस

योगद्रव्य--

सोंठ ५ तोला, सांभर शृङ्ग २।। तोला, समुद्रफेन २।। तोला, कालानमक २।। तोला, शुद्ध पारद १। तोला, शुद्ध गन्धक १। तोला, सुहागा फूल १। तोला, काकड़ा सिंगी ९ माशा, भारंगी ९ माशा, जायफल ९ माशा, पुष्कर मूल ९ माशा, सोम ९ माशा, छोटी पीपल ९ माशा एवं पुष्कर मूल ९ माशा।

निर्माण-विधि--

प्रथम की चार औषधियों को दरदरा कर एक हंडी में डालकर अर्क दुग्ध में भिगो दें। दूध इतना दें कि दवायें तर हो जायें। तीन दिनों तक यों ही पड़ा रखें। फिर हंडी का मुख बन्द कर के दश सेर उपलों की आँच में फूंक लें। स्वाङ्ग शीतल होने पर दवा को निकाल कर महीन पीस लें। अनन्तर पारद गन्धक की कज्जली तथा औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण मिलाकर दो दिन तक अच्छी तरह मर्दन कर रख लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

श्लेष्मा को समूल नष्ट करने में इसकी अप्रतिहत क्रिया है। अटके हुए पुरातन कफ को बाहर निकाल कर रोग को स्थायी रूप से मिटा देता है। स्वतन्त्र रूप में अथवा सहयोगी अन्य औषधियों के साथ २ से ४ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार उचित अनुपान से प्रयोग करना चाहिये।

श्लेष्मचिन्तामणि रस--लघु

योगद्रव्य--

शुद्ध हिंगुल २ तोला, जायफल, जावित्री, लौंग प्रत्येक १-१ तोला, सोंठ, मरीच, पीपल, पीपला मूल प्रत्येक ९-९ माशा, अकरकरा, सुहागा फूलाया, शुद्ध सिंगी-मोहरा प्रत्येक ६-६ माशा, शुद्ध सोमल ६ रत्ती।

निर्माण-विधि--

सोमल को दोलायन्त्र द्वारा तीन घण्टा तक गोदुग्ध में स्वेदित करें। हिंगुल को आदीरस भावना देकर शुष्क कर लें। सिंगी मोहरा को गोमूत्र में भिगोकर सुखालें। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। फिर खरल में सोमल को डाल कर घोंटें और अच्छा सूक्ष्म हो जाने पर हिंगुल को डाल कर मर्दन करें। अनन्तर सिंगी मोहरा तथा अन्य औषधियों के चूर्ण को डाल घर्षण कर आदी का रस देकर मर्दन करें। इस तरह तीन भावनाएँ देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

नूतन प्रतिश्याय एवं तज्जनित उपद्रव और ज्वर में इससे बहुत अच्छा लाभ मिलता है। कुछ मात्राओं से ही सर्दी मिट जाती है और उसके उपद्रव शान्त हो जाते हैं। एक से २ वटी की मात्रा में पान रस मधु, आदी रस मधु, तुलसी रस मधु आदि अनुपानों से इसका प्रयोग करना चाहिये। वीर्यवान् औषधि होने के कारण यह केवल गरम पानी, चाय आदि के साथ भी लाभ प्रदान करती है।

श्लेष्मचिन्तामणि-बृहत्

योगद्रव्य--

शुद्ध हिंगुल, जायफल, जावित्री, लौंग प्रत्येक २-२ तोला, सोंठ, मरीच, पीपल, पीपलामूल प्रत्येक १-१ तोला, दालचीनी, अकरकरा, सुहागाफूल, शुद्ध सिंगी मोहरा प्रत्येक $^1/_2$-$^1/_3$ तोला, केशर ३ माशा, कस्तूरी १॥ माशा, शुद्ध श्वेत सोमल ६ रत्ती।

निर्माण-विधि--

सोमल हिंगुल और सिंगी मोहरा की शुद्धि उल्लिखित विधि से कर लें। फिर पूर्ववत् इनका खरल में घर्षण करके औषधि चूर्ण को मिश्रित कर आर्द्रक स्वरस की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भावना देकर मर्दन करें। इस तरह तीन भावनाएं दें। अन्तिम भावना की आधी घुटाई हो जाने पर कस्तूरी और केशर डालें और अच्छी तरह मर्दन करें। फिर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

पूर्व उल्लिखित योग के समस्त गुण अधिक वीर्यवत्ता के साथ इसमें विद्यमान हैं। कुछ ही मात्राओं से नूतन प्रतिश्याय, अंगमर्द, ज्वर में इसके द्वारा लाभ होता है। इसके अतिरिक्त आम संयुक्त वातविकारों में जहाँ शामक गुण की आवश्यकता रहती है इसके द्वारा अच्छा लाभ मिलता है। पुरातन श्लेष्म विकारों में कुछ समय तक इसका सेवन करने से प्रशस्त लाभ होता है। रोगानुसार अनुपान भेदों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

श्लेष्मज्वरारि रस

योगद्रव्य--

शुद्ध मैंनसिल, शुद्ध हिंगुल, अतीस, लवंग, जायफल, छोटी पीपल प्रत्येक १-१ तोला, शुद्ध सिंगी मोहरा, काली मरीच $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला।

निर्माण-विधि और उपयोग--

नूतन ज्वर के विसर्ग में यह अच्छा फलदायी योग है। आदी रस की भावना देकर १-१ रत्ती की मात्रामें इसकी गोलियाँ बनाई जाती हैं। वयस्क व्यक्ति को १ से २ वटी की मात्रा में तुलसी रस मधु, पानरस मधु से देना चाहिये। बच्चों को $^{१}/_{४}$ वटी से $^{१}/_{२}$ वटी की मात्रायें धनियाँ मिश्री के क्वाथ के जल से दी जाती है।

श्लेष्मार्क रस

योगद्रव्य--

शिलासिन्दूर, यशद भस्म, श्रृङ्ग भस्म, प्रवाल भस्म प्रत्येक १-१ तोला, गोरोचन, केशर, टंकण, कन्टकारी फल, रेवतसत्व प्रत्येक $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला, पीपल छोटी, मुलेंठी, हल्दी, लवंग एवं कचूर प्रत्येक $^{१}/_{४}$-$^{१}/_{४}$ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। सिन्दूर को खरल में डालकर घोटें। फिर भस्मों को मिलावें और मर्दन करें। अनन्तर औषधि चूर्ण को डालकर गोरोचन तथा केशर को मिश्रित कर सेहुण्ड के पत्ते का स्वरस अथवा आर्द्रक स्वरस की भावना देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि--

श्लेष्मा के विकारों के लिए यह सूर्य समान प्रभावशाली है। विशेषतः बालकों के कफ विकारों पर तो इसकी असीम क्रिया है। प्रतिश्याय और तज्जनित ज्वर, उत्फुल्लिका, महाकास आदि रोगों पर इसके प्रयोग से बहुत अच्छा फल प्राप्त होता है। जिन बच्चों को बराबर सर्दी बनी रहती है उन को कुछ समय तक इसको देते रहने से हमेशा के लिए सर्दी मिट जाती है। नूतन विकारों में पान रस मधु, आदी रस मधु आदि अनुपानों का प्रयोग करना चाहिये। पुरातन रोगों में बाल श्रृंगादि, सितोपलादि आदि योगों के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये।

श्लेष्मान्तक मण्डूर

योगद्रव्य--

मुलैठी १ तोला, हंसराज १ तोला, वनप्साफूल ९ माशा, गाजवां ९ माशा, खत्मीबीज ९ माशा, जूफा ९ मांशा, कटैरी ६ माशा, भारंगी ६ माशा, हल्दी ६ माशा, वासापत्ता ६ माशा, लिसोड़ा ७ अदद, उन्नाब ५ अदद, मण्डूर भस्म ४ तोला।

निर्माण-विधि--

औषधियों के वस्त्रछन चूर्ण को मण्डूर भस्म के साथ अच्छी तरह मर्दन करके रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

श्वसनक ज्वर के रक्त आने के उपद्रव में इससे बहुत ही अच्छा लाभ प्राप्त होता है। कफ के साथ आनेवाला रक्त इसकी कुछ ही मात्राओं से आना बन्द हो जाता है और रोगी के वक्षोवेदना में शान्ति प्राप्त होती है। श्लेष्म ज्वर, प्रतिश्याय, श्वास, कास आदि में भी इसकी अच्छी क्रिया है। १॥ माशा से ३ माशा की मात्रा में मधु से चटाकर ऊपर से द्वादशाङ्ग क्वाथ, भार्ग्यादि क्वाथ, वृ० भार्ग्यादि क्वाथ के सेवन कराना चाहिये।

शोणित कपाट रस

योगद्रव्य--

लाल चन्दन, शुद्ध रसौत, खून खराबा, शुद्ध गैरिक प्रत्येक १-१ तोला, लौह-भस्म, अभ्रक भस्म, लाख सफा, फिटकरी भूनी एवं कहरवापिष्टी प्रत्येक $^1/_2$-$^1/_2$ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

रसौत को जल में भिंगोकर वस्त्र से छान कर सुखा लें। गैरिक को गोदुग्ध से घोंट कर सुखा कर वस्त्रछन कर लें। लाख को जल से धोकर सुखा लें। फिर कूटने योग्य औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करके अन्य दवाओं के साथ खरल में डालें। फिर कीकर के पत्तों की ३ भावनाएं देकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बनाकर सुखा लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह योग रक्तातिसार, रक्तार्श, रक्तपित्त एवं रक्त प्रदर के रक्त को रोकने की अमोघ औषधि है। रक्तातिसार में चावल धोया जल, दाड़िम्बी पत्र स्वरस, दूर्वा स्वरस, कुकरौंदा स्वरस से इसका प्रयोग करें। रक्तार्श में हजारा पत्र स्वरस, आयापान स्वरस एवं लाक्षा जल से उपयोग में लें। रक्तपित्त में दूर्वा स्वरस, कुमड़ा, शतावरी स्वरस से और रक्त प्रदर में गुड़हल की कली, मिश्री के शर्बत, अंजवार की जड़ तथा मिश्री के शर्बत आदि से प्रयोग करें।

सन्निपातभैरव रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक १।।-१।। तोला, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, वंग भस्म, स्वर्ण माक्षिक भस्म प्रत्येक ९-९ माशा, शुद्ध हिंगुल, अम्बर, केशर, शुद्ध अहिफेन, शुद्ध सिंगी मोहरा, शुद्ध धतूरा बीज, पीपला मूल, खुरासानी अजवायन, सोंठ, मरीच, पीपल, सुहागा फुलाया, श्वेतवच, वंशलोचन, दालचीनी प्रत्येक ६-६ माशा, कस्तूरी ३ माशा।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। अहिफेन, सिंगी मोहरा एवं धतूरा बीजों की प्रचलित विधि से शुद्धि कर लें। सबको खरल में विधिवत डालें और आदी रस की १० भावनाएँ, पान रस की ७ भावनाएं, तुलसी स्वरस की ५ भावनाएं, दशमूल क्वाथ की ३ भावनाएँ दें। शेष भावना में कस्तूरी केशर एवं अम्बर को मिलावें। अच्छी तरह मर्दन कर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

त्रिदोषी ज्वर में जब सन्निपात के लक्षण पैदा हो जाते हैं तब इसका प्रयोग किया जाता है। विशेषतः वायु तथा कफ की अधिकता के लक्षण सामने आने पर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका उपयुक्त क्षेत्र होता है। अनिद्रा, प्रलाप, अज्ञानावस्था, फुफ्फुस में कफ का संचय आदि होने पर तगरादि क्वाथ, द्वात्रिंशत् कषाय, भार्ग्यादि क्वाथ, यष्ट्यादि क्वाथ, दशमूल क्वाथ, आदीरस मधु, ताल शाखा स्वरस मधु आदि अनुपानों से प्रयुक्त करना चाहिये।

स्मृतिरञ्जन रस

योगद्रव्य--

स्वर्ण भस्म या स्वर्णपत्र ६ माशा, मुक्तापिष्टी ६ माशा, रस सिन्दूर, प्रवाल-पिष्टी, संगयशव पिष्टी,, जहरमोहरा खताई पिष्टी, कहरवा पिष्टी, स्वर्ण माक्षिक भस्म, शुद्ध शिलाजीत, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, सर्पगन्धा, उदसलीव छोटा, खुरासानी अजवायन, कपूर कचरी, जटामांसी प्रत्येक १-१ तोला, तगर, जायफल, लवंग, श्वेत चन्दन, गुलाब फूल, बादरंज बोया आसगन्ध एवं खस प्रत्येक $^{१}/_{२}$-$^{१}/_{२}$ तोला।

निर्माण-विधि--

कच्ची औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। अच्छी खरल में भस्मों तथा पिष्टियों को डाल कर घोटें। फिर उपरोक्त चूर्ण को डाल कर अच्छी तरह मर्दन करें। अनन्तर ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मालकांगनी, श्वेतवच, शतावरी, इन को $^{१}/_{४}$-$^{१}/_{४}$ तोला की मात्रा में लेकर काढ़ा बनाकर उसकी भावना दें और अच्छी तरह मर्दन करें। शुष्कप्राय होने पर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें।

उपयोग और तद्विधि--

उन्माद, अपस्मार, बुद्धिभंश जैसे कठिन मस्तिष्क रोगों की यह प्रभावशाली महौषधि है। इस योग की शामक औषधियाँ मस्तिष्क के बुद्धि केन्द्रों पर अपने प्रभाव का विस्तार कर पैदा हुई विकृति को मिटा देती हैं। फलतः स्वाभाविक स्थिति का विकास अनिवार्यतः हो जाता है।

स्वर्णायः कान्त सिन्दूरम्

योगद्रव्य--

स्वर्ण वर्क १ तोला, शुद्ध लौह चूर्ण १० तोला, शुद्ध कान्त लौह चूर्ण १० तोला। हरताल तपकी २ तोला, श्वेतसंखिया २ तोला, पीतसंखिया २ तोला, मनः शिला २ तोला, हिंगुल २ तोला, रसकर्पूर २ तोला, दालचीकना २ तोला, गन्धक २ तोला एवं पारद २ तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

लोहे की खरल में दोनों तरह के लौह चूर्ण को डाल कर मर्दन करें। फिर स्वर्णवर्कों को १-१ डालते जांय और घोंटते रहें। जब अच्छी तरह घुट जाय तब हरताल तपकी १ तोला डालकर भृंगराज स्वरस की भावना देकर अच्छी तरह घुटाई करें। जब श्लक्षणता आजावे तब टिकिया बनाकर शुष्क कर शराव सम्पुट में बन्द करके मध्यमाग्नि में फूंक लें। दूसरी बार श्वेत संखिया एक तोला डालकर उसी रस से भावित कर पूर्वोक्त तरीके से ही पुट दें। इस तरह ९ पुट उपरोक्त दवायें १-१ तोला डालकर दें। फिर दूसरे क्रम में खन्धारी अनार के स्वरस की भावना देते हुए अवशिष्ट ताल आदि ९ दवायें १-१ तोला देकर ९ पुट दें। फिर स्वाङ्ग शीतल होने पर भस्म को निकाल लें। यह सिन्दूर के समान रंग देनेवाली भस्म तैयार होती हैं।

उपयोग और तद्विधि--

पीत ताल पारदादि के योग स्से वर्ण तथा लौह की बनी यह भस्म अशेष गुणकारी होती है। दोष निर्हरण तथा शक्ति-निर्माण इन दोनों प्रक्रियाओं को इससे अच्छा बल प्राप्त होता है। शरीरस्थ धातुओं का वर्द्धन एवं प्रवृद्ध दोषों को शमन करके यह स्थायी अटूट स्वास्थ्य का निर्माण करती है। यकृत तथा प्लीहा के रोग, धातु दौर्बल्य, क्लीवता, मानसिक अस्थिरता, अवसाद, रक्त के लाल कणों की कमी, दूषित पाण्डुरोग, श्लेष्म प्रधान श्वास, कास आदि रोगों में इससे अच्छा लाभ मिलता है। स्वतन्त्र रूप से अथवा अन्य सहयोगी दवाओं के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। ½ से १ रत्ती की मात्रा में अनुपान भेद से तत्तत् रोगों में इसे देना चाहिये

स्वर्णगर्भ रस

योगद्रव्य--

स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, मुक्तापिष्टी, प्रवाल भस्म, मकरध्वज प्रत्येक १-१ माशा, कम्बूभस्म, लौंग, अजवायन, छोटी इलायची, काकड़ासिंगी, भारंगी, मुलैठी, वंशलोचन, श्वेत मरीच, गु० सत्व, रुद्राक्ष, जावित्री, जायफल, सोंठ, तालीशपत्र, वासापत्र प्रत्येक ½-½ माशा, अमृत संजीवनी वटी ३ माशा।

निर्माण-विधि--

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण तैयार करें। अमृत संजीवनी वटी को खरल में डालकर मर्दन कर सूक्ष्म कर लें। फिर औषधि का चूर्ण डालकर मर्दन करें। फिर पिष्टी तथा भस्मों को मिलावें। वर्कों को १-१ करके डालें और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घोंटें। लौंग के काढ़े की भावना देकर १-१ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

समस्त प्रकार के मियादी ज्वरों में दोष पाचन की यह श्रेष्ठ दवा है। विशेषत: आन्त्रिक ज्वर, मोतीझरा, मसूचिका, रोमान्तिका में उपद्रवों के शमन तथा दोष पाचन के लिए इसका व्यवहार होता है। इससे किसी तरह के उपद्रव सामने नहीं आते और रोगी क्रमश: रोगमुक्ति की ओर बढ़ता जाता है। रोगानुसार अनुपान भेदों से इसका प्रयोग होता है।

स्वर्णवङ्ग पंचक रस

योगद्रव्य--

स्वर्णवंग ३ तोला, शुद्ध शिलाजीत २ तोला, लौह भस्म १।। तोला, अभ्रक भस्म १ तोला एवं मकरध्वज ६ माशा।

निर्माण-विधि--

शिलाजीत को प्रचलित विधि से शुद्ध कर लें। मकरध्वज को खरल में डालकर घर्षण करें। क्रमश: अन्य औषधियों को भी मिलाते जावें। शतावरी स्वरस की भावना देकर २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर या शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

शुक्र विकार की अच्छी फलप्रद औषधि है। प्रमेह, स्वप्नदोष, स्नायुदौर्बल्य, रतिशक्तिहीनता, मानसिक अवसाद आदि बीमारियों में इसके सेवन से अच्छा फल मिलता है। शारीरिक दुर्बलता का नाश होकर कार्यक्षमता बढ़ती है। १ से २ वटी की मात्रा में स्वतन्त्र रूप से अथवा सहायक अन्य दवाओं के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये।

स्वर्णवङ्गाष्टक रस

योगद्रव्य--

स्वर्णवङ्ग ४ तोला, शुद्ध शिलाजीत ४ तोला, वंग भस्म २ तोला, लौह भस्म २ तोला, रौप्य भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, मकरध्वज १ तोला एवं स्वर्ण भस्म १ तोला।

निर्माण-विधि और उपयोग--

इसका निर्माण पूर्व योग की विधि से ही किया जाता है। स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म एवं वंग भस्म की अधिकता इसको और भी वीर्यवान् बना देती है। अत:

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह पुरातन बीमारियों में अधिक फलदायी हो जाता है। प्रमेह के कारण स्नायविक दौर्बल्य हो जाने पर यह अच्छा फल प्रद सिद्ध होता है। वृद्धावस्था के कारण मूत्र ग्रन्थि शोथ पैदा हो जाने पर इसका प्रयोग फलदायी सिद्ध होता है। शुक्रविकार के कारण रहनेवाले हृदयदौर्बल्य में इससे अच्छा लाभ मिलता है। रोगानुसार अनुपान भेदों से इसे प्रयुक्त करना चाहिये।

सर्वज्वर हरताल

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद २।। तोला, शुद्ध गन्धक ५ तोला, श्वेत फिटकरी ५ तोला, तपकिया हरताल २।। तोला, शुद्ध गोदन्ती हरताल २।। तोला, शुद्ध मैनसिल २।। तोला, शोरा कलमी १। तोला, नवसादर १। तोला, सुहागा चौकीया १। तोला एवं कसीस १। तोला।

निर्माण-विधि--

सब औषधियों को सूक्ष्म करके घृतकुमारी रस से अच्छी तरह घोंटें। फिर टिकिया बनाकर सुखा लें। फिर सम्पुट में बन्द कर ५ सेर उपलों की आंच दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल कर पीस कर रख लें।

उपयोग और तद्विधि--

विषम ज्वर, नवीन ज्वर, तीव्र ज्वर पर इसका प्रयोग होता है। विषम ज्वर में ज्वर आने के पहिले ३ रत्ती से ४ रत्ती की मात्रा में मधु अथवा वनप्सा शर्बत से प्रयोग करना चाहिये ४ से ६ बार तक। नवीन ज्वर के विसर्ग के लिए तुलसी रस मधु, पान रस मधु, वनप्सा फूल, मकोय, सौंफ मिश्री का क्वाथ के अनुपान से दिया जाता है। तीव्र ज्वर का वेग कम करने में लौंग, बड़ी इलायची, श्वेत चन्दन, मिश्री के शर्बत का प्रयोग इसके साथ किया जाता है।

सिन्दूरादि रस

योगद्रव्य--

रस सिन्दूर १ तोला, गोदन्ती ताल भस्म २ तोला, कुटकी चूर्ण ३ तोला एवं कलमी शोरा ४ तोला।

निर्माण-विधि--

रस सिन्दूर को खरल में डालकर घोंटें। फिर अन्य दवाओं को क्रमशः डालते हुए मर्दन करें। अनन्तर आक के जड़ के रस की भावना देकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्लेष्म ज्वर तथा वात श्लेष्म ज्वर पर यह योग शीघ्र लाभ करता है। इससे ऊर्ध्वाङ्ग में संचित श्लेष्मा के पाचन के साथ उदरस्थ दूषीविष का निष्काशन होकर शरीर शीघ्र दोष रहित हो जाता है। मल तथा मूत्र की इससे शुद्धि होती है। यकृत विकृति के कारण होनेवाले जीर्णज्वर में यह फलप्रद है। इसे नूतन ज्वर में पानरस मधु, तुलसीरस मधु आदि से तथा जीर्ण ज्वर में विल्व पत्र स्वरस, मरीच चूर्ण सिन्धु रस मधु आदि अनुपानों से प्रयोग करना चाहिये।

सुधांशु रस

योगद्रव्य—

शुद्ध शीशा ५ तोला, कहरवा १ तोला, जहरमोहरा खताई १ तोला, संगजराहत १ तोला, गुलञ्च सत्व १ तोला, श्वेत चन्दन ९ माशा, खस ९ माशा, जटामांसी ९ माशा, छोटी इलायची ९ माशा, दरयायी नारियल ६ माशा, वंशलोचन ६ माशा, गुलाब फूल ६ माशा एवं नील कमल ताजा ६ माशा। मिश्री १० तोला गुलाबजल १ बोतल।

निर्माण-विधि—

शीशा २० तोला लेकर आग पर लोहे की कुड़छी में गला कर गोमूत्र में ७ बार बुझाव दें। फिर ७ बार तक्र में बुझावें। अनन्तर ७ बार गोदुग्ध में निर्वापित करें। गरमजल से धोकर घाम में सुखा लें। फिर इसमें से ५ तोला लेकर मिश्री के साथ हिमामदस्ता में कूटें। मिश्री थोड़ी-थोड़ी डालें। महीन होने पर छानते जायँ। सब छन जाने पर इसको रख लें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करें। कहरवा, जहरमोहरा, संगजराहत को अलग-अलग गुलाब जल में घोंटकर पिष्टी होने पर सुखा लें। अनन्तर समस्त दवाओं को एक साथ खरल में डालकर अच्छी तरह मर्दन करें। एकात्मता हो जाने पर रख लें। वटी बनानी हो तो गुलाब जल से घोंट कर बना लें।

उपयोग और तद्विधि—

ज्वर की अति तीव्रावस्था के उत्ताप में इस पहली मात्रा शान्तिदायिनी होती है। इसके अनुपान में लौंग, बड़ी इलायची, चन्दन श्वेत एवं मिश्री का शर्बत नीचे वर्फ देकर ठण्डा करके देना चाहिये। इसके अतिरिक्त पित्तविकार, रक्तार्श पर भी अच्छा फलप्रद उपयोग है। इसे ४ से ६ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृद्बलोदय रस

योगद्रव्य—

कस्तूरी १।। माशा, स्वर्णवर्क ३ माशा, अम्बर ३ माशा, माणिक्य-पिष्टी ३ माशा, पन्नापिष्टी ३ माशा, मुक्तापिष्टी ६ माशा, कहरवा पिष्टी ६ माशा, प्रवाल पिष्टी या भस्म ६ माशा, अकीक पिष्टी या भस्म ६ माशा, केशर ६ माशा, लौह भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म १ तोला, मकरध्वज १ तोला, चांदी के वर्क १ तोला।

निर्माण-विधि—

अच्छी खरल—जो न घिसनेवाली हो—में मकरध्वज को डालकर मर्दन करें। फिर पिष्टियों तथा भस्मों को डालें और मर्दन करें। अनन्तर वर्कों को १-१ डालें और घोंटें। समस्त वर्क अच्छी तरह से मिल जाने पर गुलाब जल की भावना दें। प्रतिदिन ८ घंटा घोंटा जाना चाहिये। सम्यक्तया मर्दन हो जाने पर अम्बर, कस्तूरी एवं केशर को डालें और एक दिन मर्दन कर शुष्क कर १-१ रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

हृदय को बल प्रदान करने में यह श्रेष्ठ औषधि है। ओजक्षय जनित धमनी शैथिल्य, वातज धमनी शोथ, रक्तः पुरः सरण क्रिया का आंशिक व्याघात आदि लक्षणों का शमन होकर हृदय को बल प्राप्त होता है। किसी भी कारण से रक्ताल्पता होकर हृदय की दुर्बलता का अनुभव होने पर इसका सेवन कराया जाता है। वात शामक एवं हृद् बलाधायक अनुपान के साथ १-१ वटी मात्रा में इसका उपयोग किया जाता है।

हिक्कान्तक लौह

योगद्रव्य—

लौह भस्म २ तोला, पृच्छ भस्म, प्रवाल भस्म, कम्बू भस्म, बड़ी इलायची ड़ोड़ा की भस्म, सुरंजान मीठा प्रत्येक ६-६ माशा, मक्का कोष भस्म, पीपल छोटी, बेर मज्जा, हर्रे छाल, बहेड़ाछाल, आमला प्रत्येक ३-३ माशा।

निर्माण-विधि—

काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण बनाकर भस्मों के साथ अच्छी तरह मर्दन कर लें।

उपयोग और तद्विधि—

हिक्का रोग की यह महौषधि है। किसी रोग के उपद्रव में अथवा स्वतन्त्र रोग के स्वरूप में हिक्का होने पर इससे शीघ्र लाभ होता है। ३ से ६ रत्ती की मात्रा में मधु के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हुताशन रस

योगद्रव्य—

शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, वंगभस्म, कम्बू भस्म, वराटिका भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्रेछाल, बहेड़ा छाल, आमला, अजवायन, अजमोद, पीपलबड़ी, वच, कूठ, चव्य, चित्रक, पीपलामूल, अकरकरा, सुहागाफूल, सर्जिकाक्षार, यवक्षार, समुद्रनमक, सांभर नमक, संचर नमक, विड़ नमक, सैन्धव नमक, घर का धुआँसा प्रत्येक १-१ तोला, शुद्ध भांग ४ तोला।

निर्माण-विधि—

पारद गन्धक को कज्ज़ली कर लें। औषधियों का वस्त्रछन चूर्ण करके समस्त दवाओं के साथ खरल में डालें और अजवायन अर्क या क्वाथ की भावना देकर घोंटकर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना कर अच्छी तरह सुखा लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा—

यह समस्त अग्निविकारों पर पूर्ण लाभकारी महौषधि है। अग्नि के दीपन-पाचन गुणों को प्रकृतिस्थ बनाकर अग्निमान्द्य, अजीर्ण, वासाजीर्ण, आध्मान, अतिसार, ग्रहणीविकार आदि को ठीक करती है। रोगानुसार अनुपान भेदों से इसका प्रयोग करना चाहिये।

हेमगर्भ रस—लघु

योगद्रव्य—

स्वर्ण भस्म अथवा स्वर्णवर्क १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, ताम्रभस्म २ तोला एवं शुद्ध पारद २ तोला।

निर्माण-विधि—

सर्वप्रथम पारद गन्धक की कज्जली करें। फिर स्वर्ण भस्म तथा ताम्र भस्म को क्रमशः डालकर अच्छी तरह घुटाई करें। यदि वर्क डालने हों तो पारद में १-१ वर्क डालकर अच्छी प्रकार मर्दन करें। अनन्तर गन्धक डालकर कज्जली बनावें और ताम्र भस्म मिलाकर घोंटें। बाद में दोनों ही विधियों में भेड़ के दूध की तीन भावनाएं देकर शिखरवाली गोलियाँ बनाकर अलग-अलग रेशमी कपड़े में बाँधें और उनको एक हंडी में लटका दें। हंडी में इतना डण्डा गन्धक डालें कि जिसके पिघलने पर पोटली डूब जावे। हंडी के नीचे कपड़े की बत्ती को तैल में जलावें। गन्धक पिघलने के बाद एक घण्टा तक बत्ती जलाकर रखें। फिर पोटलियों को निकाल कर शीतल कर चाकू से उन पर लगे गन्धक को उतार दें और गरम जल से अच्छी तरह धोलें। अनन्तर कपड़े से पोंछकर रख लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपयोग और तद्विधि--

यह योग आयुर्वेद की विशिष्टतम औषधियों में से है। सन्निपात एवं विशूचिका जैसी प्राणहर बीमारियों की चरम स्थिति में यह चमत्कारी फल प्रदान करता है। शरीर शीतल होने की स्थिति और पसीने की अधिकता इसके प्रयोग से कुछ समय बाद ही नियन्त्रित हो जाती है। आदी के रस के साथ घिसकर शहद मिलाकर इसका प्रयोग किया जाता है।

हेमगर्भ रस--बृहत्

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, समीर पन्नग रस १ तोला, ताम्र भस्म १ तोला, स्वर्ण भस्म ¹।₂ तोला, रौप्य भस्म ¹।₂ तोला, मुक्ता भस्म ¹।₂ तोला, लौह भस्म ¹।₂ तोला, अभ्रक भस्म ¹।₂ तोला।

निर्माण-विधि और उपयोग--

इसका निर्माण पूर्व योग के सदृश ही होता है। उपयोग भी पूर्व के समान ही है। लेकिन इस योग की वीर्यवत्ता उससे अधिक है। सन्निपात ग्रस्त अज्ञान व्यक्ति को चेतना प्रदान कर मृत्यु से रक्षा करने का गुण इसे प्राप्त है। इस योग में गिरनेवाली भस्में अच्छी बनी हुई होनी चाहिये। विशूचिका रोग की तीसरी अवस्था में इसके प्रयोग से जीवनी शक्ति को बल प्राप्त होता है और रोगी आरोग्योन्मुख हो जाता है। वातश्लेष्मविकार जनित पक्षाघात, अर्दित, ग्रन्थिवात, कलायखञ्ज, अवबाहुक, गृध्रसी, उरस्तोय, श्वास, कास आदि में इससे असीम गुण प्राप्त होते हैं। अर्दित रोग में इसकी कुछ मात्राओं से ही लाभ प्राप्त हो जाता है। पक्षाघात के बार-बार आनेवाले झटके इसके प्रयोग से पूर्णतया रुक जाते हैं और रोग की निवृत्ति क्रमशः होती चली जाती है। कलायखञ्ज में इसका प्रयोग वातशामक बलाधायक सहयोगी दवाओं और अनुपानों से करना चाहिये। अवबाहुक तथा गृध्रसी में इसे संशोधक अनुपान से देना चाहिये और स्थानीय शामक प्रयोग करने चाहियें। उरस्तोय में भार्गीदशमूल क्वाथ से इसे देना चाहिये। कफप्रधान श्वास-कास में आदीरस मधु, सितोपलादि चूर्ण मधु, श्लेष्मान्तक योग मधु आदि अनुपानों से ¹।₂ से १ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करना चाहिये।

क्षयकेशरी रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्ध सोमल, शुद्ध गन्धक एवं शुद्ध पीत वराटिका।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्माण-विधि--

पारद ५ तोला के साथ सोमल ५ तोला को खरल में डाल कर घोंटें। फिर स्वरस देकर एक दिन मर्दन कर शुष्क करके पारद को ५ बार ऊर्ध्वपातित करें। इस तरह इतनी ही मात्रा में सोमल मिला-मिलाकर उपरोक्त विधि से पारद को ऊर्ध्वपातित करलें। फिर पारद के सम भाग शुद्ध गन्धक मिलाकर कज्जली बनावें। अनन्तर इस को आवश्यक कौड़ियों में भर कर लोकनाथ रस की तरह फूंक लें। बाद में उक्त भस्म के समान स्वर्णमाक्षिक भस्म मिलाकर पान के रस से खरल करके १-१ रत्ती की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

अल्प व्यय में बननेवाली क्षय की यह उत्कृष्ट दवा है। इससे क्षय कीटाणुओं के विनाश के साथ शारीरिक शक्ति बढ़ती है। दुर्बल प्रकृतिवाले श्लेष्मरोगियों के लिए यह अमृत समान औषधि है। इसका सेवन करनेवाले व्यक्तियों को दूध का सेवन अधिक मात्रामें करना चाहिये।

क्षुद्रबोधक रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद, शुद्धगन्धक, लौह भस्म, पीपल छोटी, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, हर्रे छाल, बहेड़ा छाल, आमला, अजवायन, श्वेतजीरा, स्याहजीरा, तिन्तड़ीक, अनारदाना, सौंफ, जायफल, जावित्री, कूठ, दालचीनी, तेजपत्ता, छोटी इलायची, शुद्ध हींग, यवक्षार, सज्जी क्षार, सुहागा फूल, अपामार्ग क्षार, इमली क्षार, शुद्ध कुचिला प्रत्येक १-१ तोला, भीमसेनी कपूर ६ माशा, अम्लबेत, समुद्र नमक, संचर नमक, सांभर नमक, नोशादर प्रत्येक २-२ तोला, सैन्धव नमक एवं कम्बू भस्म प्रत्येक ४-४ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करें। काष्टौषधियों का वस्त्रछन चूर्ण कर लें। फिर समस्त दवाओं को खरल में डालकर आदी स्वरस की ३ भावनाएँ और निम्बू-स्वरस की ५ भावनाएँ देकर ३-३ रत्ती को गोलियाँ बनाकर अच्छी तरह सुखा कर रख लें।

उपयोग, अनुपान और मात्रा--

यह दीपन-पाचन गुणयुक्त विशिष्टतम औषधि है। इसके अतिरिक्त इससे शीघ्रता के साथ वातानुलोमन होता है। अतिसार तथा विष्टब्ध रूपी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजीर्ण लक्षणों पर इस की समान क्रिया है। अग्निमान्द्य पर इसके प्रयोग से बहुत ही अच्छा फल मिलता है। इसके १ से २ गोली की मात्रा में सौंफ अर्क, अजवायन अर्क, निम्बू रस जल, कमला निम्बू का स्वरस, गरम जल आदि अनुपानों से विविध रोगों में स्वतन्त्र रूप से या सहायक अन्य दवा के साथ प्रयोग किया जाता है।

क्षुधावर्द्धन रस

योगद्रव्य--

शुद्ध पारद २ तोला, शुद्ध गन्धक ४ तोला, सोंठ, मरीच, पीपल, अजमोद, हर्रे छाल, गुलाब फूल, छोटी हर्रे, सुहागा फूल, सैन्धव नमक, संचर नमक, सांभर नमक, विड़ नमक, समुद्र नमक प्रत्येक २-२ तोला, सनाय ४ तोला, शुद्ध भांग ८ तोला।

निर्माण-विधि--

पारद गन्धक की कज्जली करलें। भांग को जल में औंटाकर शीतल जल से प्रक्षालित कर शुष्क कर लें। औषधियों के वस्त्रपूत चूर्ण के साथ कज्जली को मिलाकर अम्लता आने तक निम्बूरस की भावना देकर ४-४ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना कर सम्यक् शुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

यकृत की अल्प क्रिया के कारण अजीर्ण के लक्षणों के साथ कब्ज का बना रहना इस योग के प्रयोग का प्रधान कर्म स्थल है। इससे यकृत की सशक्तता तो निष्पन्न होती ही है, साथ में हमेशा रहने वाला विष्टब्ध भी ठीक होता है। उदर में रहनेवाली वायु का इससे शमन होता है और आध्मान ठीक होता है। वायु की ऊर्ध्व प्रवृत्ति होकर आनेवाले डकारों पर इससे अच्छा लाभ होता है। १ से ३ वटी की मात्रा में रोगानुसार आवश्यक अनुपान से इसका प्रयोग होता है। साधारण स्थल पर हल्का गरम जल इसके अनुपान में व्यवहृत हो जाता है। मुख में रखकर आचूषण करने से भी इससे लाभ प्राप्त होता है।

त्रिमूर्त्ति रसायन

योगद्रव्य--

शुद्ध हरताल तपकी १ तोला, शुद्ध सोमल १ तोला, शुद्ध हिंगुल १ तोला।

निर्माण-विधि--

तीनों औषधियों को यथाविधि शुद्ध कर के प्याज के स्वरस में एक टिकिया बनाकर शुष्क कर लें। फिर कपड़मिट्टी की हुई हंडी में प्याज का कल्क विछाकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसपर टिकिया रखकर उसे मन्दी आंच पर रखें और उस पर प्याज के रस को बूंद-बूंद टपका लें। इस तरह २ सेर प्याज का रस जलावें। फिर स्वाङ्गशीतल होने पर टिकिया को निकाल कर खरल में डालें और कागजी निम्बुओं के स्वरस से घोंटें। क्रमशः १०० निम्बुओं का रस देकर घुटाई करें। फिर १/२-१/२ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

रसायन, वाजीकरण गुणों के वास्ते यह बड़ी चमत्कारी महौषध है। स्त्री संयोग के एक घण्टा पहिले गो-घृत मिले दूध के साथ इसका सेवन करने से वहुत अच्छी ताकत प्राप्त होती है। शीतकाल में तीन सप्ताह तक इसका सेवन कर लेने से पुरुष शक्तिहीनता नष्ट होकर नूतन शक्ति प्राप्त होती है।

ज्ञानोदय रस

योगद्रव्य--

स्वर्ण भस्म १/२ तोला, मुक्ता भस्म १/२ तोला, प्रवाल भस्म २ तोला, अभ्रक भस्म ३ तोला, स्वर्ण सिन्दूर ४ तोला।

निर्माण-विधि--

अच्छी खरल में रससिन्दूर को डाल कर मर्दित करें। फिर स्वर्ण आदि भस्मों को क्रमशः डालें और अच्छी तरह मर्दन करें। फिर पान, तुलसीपत्र, आर्द्रक एवं स्तन्यदुग्ध की १-१ भावनाएँ देकर २।।–२।। रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनाकर छायाशुष्क कर लें।

उपयोग और तद्विधि--

प्रवृद्ध सन्निपात में जब रोगी के ज्ञान का लोप हो जाता है, फुपफुसों में बढ़े हुए श्लेष्मा की आवाज स्पष्टरूप से सुनाई देने लग जाती है और रोगी का अन्तिम समय पुरोवर्त्ति मालूम देने लगता है, तब इस महौषधि के सेवन से अच्छा फल मिलता है। बढ़ते हुए श्लेष्मा के प्रकोप का शमन होता है और रोगी के ज्ञान का प्रत्यावर्तन होता है। इसे १-१ घंटा के अन्तर से सेवन कराना चाहिये। आवश्यकता का आभास प्राप्त होने पर इसके साथ कस्तूरी का योग दिया जा सकता है। ऐसी स्थिति में १।२ रत्ती कस्तूरी १ वटी के साथ दी जाती है। अनुपान में तालशाखा रस मधु देना चाहिये। तालशाखा न मिलने पर वृ० भार्ग्यादि क्वाथ, लवंग दशमूल क्वाथ आदि कषायों का जल मधु, अथवा आमर्द्रक स्वरस मधु दिया जाता है।

—o—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भस्मों के विशिष्ट प्रयोग

हरताल तपकी भस्म योग—१

शुद्ध वंशपत्र हरताल ५ तोला को भेड़ के मूत्र में ११ दिन तक घोंटें। फिर २१ दिन तक भेड़ के दूध में घोंटें। द्रोण पुष्पी स्वरस को आग पर रखकर गरम कर फाड़ लें। इस रस में से १ बोतल रस उपरोक्त हरताल में थोड़ा-थोड़ा डाल कर खपावें। रस बिल्कुल निथरा हुआ होना चाहिये। अनन्तर हरताल की ८-१० टिकिया वनाकर छाया में १५-२० दिन तक सुखावें। यह ध्यान रहे कि कोई जानवर या जन्तु न खाने पावे। फिर एक कुण्डा में पारस पीपल की छाल की भस्म १ सेर रख कर उसके ऊपर टिकिया रक्खें। उतनी राख उनपर जमाकर दूसरा कुण्डा ऊपर देकर सन्धिबन्धन कर ३ कपड़मिट्टी करें। फिर दो कपड़मिट्टी पूरे पात्र पर करें। अनन्तर दो हाथ गहरा एक हाथ चौड़ा गर्त वनाकर उसके आधे हिस्से तक बकरियों की मींगनियाँ डालें। इनको युक्ति से अग्नि पकड़ा दें। जब वे सिलगने लगें तब उपरोक्त कुण्डा को उनपर रखकर गर्त को मीगनियों से आमुख पूर्ण कर दें। जब अच्छी तरह सिलग जावे तब गर्त का कुछ हिस्सा खुला रखकर अवशिष्ट को राख मिली धूल से ढक दें। गर्त ऐसी जगह होना चाहिये जहाँ पानी गिरने का अवकाश न हो। अग्नि जब स्वयं शान्त हो जावे और सम्पुट स्वाङ्गशीतल हो जावे तब सम्पुट को खोल कर हरताल को निकाल लें। हरताल की भस्म श्वेत बन गई हो तो सर्वोत्तम है। अन्यथा बछड़ी के मूत्र से तीन दिन तक घोंटकर पूर्वोक्त विधि से फिर अग्नि दें। अबकी बार निश्चित श्वेत भस्म प्राप्त होगी। इसे सुरक्षित रख लें। यह वह रत्न है जो अन्यत्र दुर्लभ है।

ऐसा कोई रोग नहीं जिस पर यह निष्फल हो जाये। रक्त विकार के वे विविध भेद जिन पर अन्य औषधियाँ फलप्रद नहीं होतीं यह रामवाण सिद्ध होती है। अनुपान भेद से इसे विविध रोगों में दिया जाता है। श्वास रोग में ७-७ दिन का कल्प इतने समय के अन्तर से ३ दफे करना चाहिये। कुष्ठ में १।४ रत्ती भस्म त्रयोदशांग गुग्गुलु ६ माशा के साथ १ मास तक तुवरकादि क्वाथ के साथ देना चाहिये। इस रोग में इसका प्रयोग इतने समय के अन्तर से तीन बार करना चाहिये। श्वित्र रोग पर इस का प्रयोग सोमराजी चूर्ण आधा तोला के साथ आधी रत्ती की मात्रा में ४५ दिनों तक किया जाता है। रोग पुराना तथा ज्यादा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होने पर इतने समय के ३ मण्डल उतने समय का अवकाश देकर किये जाते हैं। कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ तथा रक्त विकारों में इस के प्रयोग के समय नमक खाना वर्जित होता है। वातरक्त में भी इसका प्रयोग पूर्ण सफल सिद्ध है। महातिक्त घृत गुग्गुलु १।। माशा के साथ १।२ रत्ती की मात्रा में इसका उपयोग किया जाता है। ऊपर से निम्बादि, सारिवादि आदि कषायों का सेवन कराना चाहिये।

हरताल भस्म योग—२

हरताल तपकी को २५ दिन तक ब्राण्डी शराबमें डुबोकर रखें। फिर ऊँटकटाली के स्वरस में १५ दिन तक रखे। अनन्तर १०-१० दिन तक पीले कनेर के स्वरस तथा छोटी कटैरी के स्वरस में रखें। अनन्तर पारस पीपल के दूध की ३ भावना और आकके दूध की ३ भावना देकर टिकिया बनाकर छायाशुष्क करलें। फिर ढाक के छाल की भस्म तथा अपामार्ग की भस्म दोनों को बराबर की की मात्रा में मिश्रित कर एक सेर भस्म एक कड़ाही में रखें। बीच में गड्ढा बनाकर उसमें टिकिया रखकर इतनी ही भस्म ऊपर देकर स्तूपाकार बना लें। फिर नीचे मन्द, मध्य तथा तीव्राग्नि की आँच क्रमशः १२ घण्टा तक दें। कहीं धुआँ दिखाई दे तो उस पर चमच से राख को दबा दें। जब ऊपर रखा हुआ चना जलने लगे तब सिद्ध हुई समझनी चाहिये। अग्निबन्ध कर के स्वाङ्गशीतल होने दें। अनन्तर सावधानी से हरताल को निकाल लें।

अनेक रोगों पर इस भस्म की अमोघ कार्यकारिता है। वात विकार, रक्त विकार, श्लेष्मा विकारों पर इसका पूर्ण सफल प्रयोग होता है। वातरक्त, श्वास, श्वित्र, जैसे कठिन रोग इसके प्रयोग से निर्मूल होते हैं। मात्रा १।४ रत्ती से १।२ रत्ती रोगानुसार अनुपान भेदों से प्रयुक्त करनी चाहिये।

हरताल भस्म योग--३

तपकी हरताल १ तोला को पोटलीबद्ध कर के कुष्माण्ड स्वरस में ३ घण्टा तक स्वेदित करें। फिर अन्यून १ सेर का बिल्व फल अर्ध पक्व लेकर उसमें छिद्र कर गूदा निकालकर उसमें हरताल रखकर गूदा भर्ती कर ऊपर से ३ कपड़मिट्टियाँ करें क्रमशः सुखाते हुए। फिर ५ सेर आरण्योत्पल अथवा गोठों को जलावें। जब वे निर्धूम हो जावें तब उनके बीच में उपरोक्त बिल्व फल को रख दें। गोठों को उस पर चुन दें। स्वाङ्गशीतल होने पर सम्पुट खोल कर हरताल को निकाल लें। इस तरह २१ बार बिल्वफल में पकावें। अनन्तर खरल में डालकर बिल्वपत्र स्वरस की ३ भावना, पारस पीपल की दूध की ३ भावना और आक के दूध की ३ भावना देकर टिकिया बनाकर छायाशुष्क कर लें। फिर ढाक तथा अपामार्ग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की भस्म को बराबर की मात्रा में मिश्रित कर १ सेर भस्म लोहे की कड़ाही में रखकर उसके बीच में उस टिकिया को रखें। ऊपर से उतनी ही राख और देकर स्तूपाकार बनाकर अच्छी तरह से दबा दें। फिर पूर्वोक्त विधि से आंच दें। जब ऊपर रखा हुआ चना जलने लगे तब नीचे की अग्नि को बन्द कर दें। स्वाङ्गशीतल होने पर सावधानी से हरताल को निकाल लें। यदि किसी तरह की कचाई मालूम दे तो बकरी के मूत्र की भावना देकर फिर उसी तरह अग्नि दें। इसका उपयोग पूर्वोक्त विधि से विविध रोगों में किया जाता है।

हरताल भस्म योग--४

हरताल तपकी ५ तोला लेकर पोटलीबद्ध कर ८ सेर कांजी के पानी में दोला यन्त्र से दीपाग्नि से पकावें। फिर फिटकरी जल १ सेर तथा निम्बू रस १ सेर में पूर्व विधि से पकावें। फिर पारस पीपल का दूध १० तोला डाल कर घोंट कर टिकिया बनाकर सुखा कर लाल पुनर्नवा का पत्ता १५ तोला, हिरणचवा का पत्ता १५ तोला की लुगदी बना कर उसमें हरताल को रख कर कपड़मिट्टी करके एक वड़ी हंडी में पारस पीपल की छाल २।। सेर और जामुन की छाल २।। सेर जचाकर बीच में वह सम्पुट रखकर जला दें। हंडी का मुंह खुला रखें। स्वाङ्गशीतल होने पर राख को हटा कर यत्नपूर्वक हरताल को निकाल लें। यह पूर्ण चमत्कारी भस्म है जो पूर्व लिखित विधियों से विविध रोगों में प्रयुक्त होती है।

हरताल भस्म योग--५

हरताल तपकी २ तोला को नये मजबूत कपड़े में बाँधकर पोटली बनावें। फिर एक कुण्डा में पत्थर का चूना ८ सेर डालकर बीच में पोटली को दबा दें। पानी से चूने को तर कर लें। फिर १ लोटा पानी रोज डालते रहें। इस तरह दो मास तक करते रहें। फिर निकाल कर थूहर का दूध, काला भांगरा का रस, घीकुमारी के रस की ३-३ भावना दें और शुष्क कर लें। फिर आकका दूध २० तोला देकर घुटाई करें। प्रतिदिन ६ घण्टा तक रोज घोंटें। शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखा लें। फिर अपामार्ग और पारस पीपल की छाल की राख १ सेर कड़ाही में रखकर उसके बीच में टिकिया को रखें। ऊपर से उतनी ही राख और देकर स्तूपाकार करके चमच से जमादें। कड़ाही को चूल्हे पर चढ़ाकर नीचे अग्नि दें। मन्द, मध्य तथा तीव्र के क्रम से अग्नि दें। जब राख पर रखा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चना ज़लने लगे तब अग्नि बन्द कर हंडी को वैसा ही पड़ा रहने दें। स्वाङ्ग-शीतल होने पर भस्म को यत्नपूर्वक निकाल लें। उपयोग और प्रयोग विधि पूर्ववत् है।

सोमल भस्म योग--१

सिन्दूर प्रशस्त श्रेणि का २॥ सेर लें। इसमें से अंगार पर किंचित् मात्र डालकर देख लें कि धूम्र तो नहीं देता है। इसमें से करीब ३ पाव सिन्दूर को लोहे के तवे अथवा कड़ाही पर रखकर उसके बीच में गढ़ा करके गोदुग्ध में स्वेदित किया हुआ सोमल दो तोला रख कर ऊपर से सिन्दूर करीब १। सेर जमादें। इसे शिखर वाले स्तूप की तरह बनावें। चूल्हे पर चढ़ा कर नीचे मृदु तथा मध्य के क्रम से ५-६ घण्टा तक अग्नि दें। कहीं से धूआँ निकलता मालूम हो तो वहाँ चम्मच से सिन्दूर डाल कर दबा दें। पूर्ण समय तक अग्नि लग जाने पर अग्नि देना बन्द कर शीतल होने दें। स्वाङ्गशीतल होने पर सिन्दूर को हटा कर सोमल को निकाल कर कपड़ा से अच्छी तरह पोंछ लें। यह सोमल की भस्म है, जो कठिनता लिए होती है।

इस भस्म का उपयोग वर्षा, शीत तथा वसन्त ऋतुओं में किया जाता है। यह वातश्लेष्मविकारों में एकमेवाद्वितीयं है। श्लेष्म प्रधान श्वास रोग में इसकी महती उपादेयता है। रोगी कृश शरीर का हो तो इसे १ से ४ चावल की मात्रा में सितोपलादि चूर्ण के साथ सेवन करवाकर दशमूल, अश्वगन्धा, विभीतक, पिप्पली, पिपलामूल, दुरालमा, दाड़िमत्वक् का काढ़ा पिलाना चाहिये। प्रकृति स्थूल होने पर चित्रक हरीतकी, वासावलेह का अनुपान देना चाहिये। दुष्टप्रतिश्याय में इसको बादाम का हलवा—जो कि भिगोये हुए गेहूँ, ब्राह्मीपत्ती, पोस्तदाना, मगज कद्दू, मगज खीरा, मगज ककड़ी मिलाकर गायका दूध देकर बनाया गया हो—के साथ केवल प्रातःकाल २१ दिन देने से रोग स्थायीरूप से चला जाता है। गठिया में आटे के हलवा, आदीरस मधु, महारास्नादि क्वाथ, चोपचीन्यादि क्वाथ आदि के साथ देना चाहिये। पक्षाघात और अर्दित में लहसुन मिले आटे के हलवे से इसका प्रयोग किया जाता है। पुरातन रक्त विकार पर रक्तशोधक अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

सोमल भस्म योग--२

श्वेत सोमल १ तोला लेकर मिट्टी की छोटी कुंजी में टुकड़ा करके डालें। उसके ऊपर शलजम का रस १॥ पाव डालकर बिना धूँए के उपलों की आंच पर रखें। रस कमती होकर जब संखिया फूलने लगे तब नीचे उतार लें। फिर एक शलजम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिसका वजन करीब १। सेर हो—को लेकर उस को जड़ की तरफ से कुरेद कर डाटसी निकालें। अन्दर का गुद्दा निकाल कर सोमल को उसमें रख दें। ऊपर से डाट लगाकर उड़द के आटे से सन्धि बन्धन करें। आटा सूखने पर क्रमशः ७ कपड़मिट्टी करें। सूखने पर पाँच सेर उपलों में से आधे नीचे और आधे ऊपर देकर वायु रहित स्थान में जलावें। स्वाङ्गशीतल होने पर संखिया को निकाल कर थोड़ासा कण आग पर डाल कर देखें कि धूआँ देता है या नहीं। यदि धूआँ दे तो फिर इसी तरह दूसरी पुट दें। निर्धूम भस्म हो जाने पर पीस कर सुरक्षित रख लें।

यह सोमल भस्म वातश्लेष्मविकार, जीवनी-शक्ति का ह्रास, रक्ताल्पता, रतिशक्तिहीनता आदि रोगों में श्रेष्ठतम औषधि है। इसे प्रारम्भ में २ राई की मात्रा में मक्खन अथवा मलाई से प्रारम्भ करना चाहिये। क्रमशः बढ़ाते हुए एक सप्ताह में १ रत्ती तक बढ़ाना चाहिये। क्लीवता, नूतन तथा पुरातन अर्द्धांग-वात, में इससे असीम लाभ होता है। रोगी को घृत और दूध का सेवन पूर्ण मात्रा में कराना चाहिये।

सोमल भस्म योग—३

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला को खरल में मर्दन कर ब्राण्डी शराब की भावना दें। एक बोतल ब्राण्डी लग जाने पर टिकिया बना शुष्क कर रेशमी वस्त्र में चार तह करके अच्छी तरह बाँध दें। ऊपर मजबूत कपड़मिट्टी करके सुखा लें। फिर एक हंडी में बालू-रेत भरकर बीच में इसे रख हंडी का मुंह शराव से बन्द कर कपड़मिट्टी कर के गजपुट में फूंक लें। नरम भस्म होगी और भस्म के समस्त गुण इसमें होंगे।

पुरुष शक्तिहीनता, श्लेष्म प्रधान श्वास की यह पूर्ण सफल महौषधि है। इसे दो राई की मात्रा में प्रारम्भ कर एक सप्ताह में १ रत्ती तक ले जाना चाहिये। घृत, दूध का सेवन पूर्ण मात्रा में कराना चाहिये। नमक, मसालों का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करना होगा। एक सप्ताह तक प्रतिदिन प्रातःकाल इसका सेवन कराया जाता है। मात्रा सात्म्य पर बराबर ध्यान रखना होगा। किसी तरह की बेचैनी अरुचि आदि मालूम पड़ने पर मात्रा को कम करके जितनी अनुकूल पड़े उतनी ही चलानी चाहिये। पित्त प्रधान व्यक्ति को मात्रा अल्प ही चलती है। वर्षा, शरद्, हेमन्त ऋतुओं में इसका सेवन कराया जाता है, विशेषतः शीत ऋतु में। सोमल भस्म का सेवन करनेवाला व्यक्ति आत्म संयमी होना चाहिये। कुपथ्य का सन्देह रहने पर इसे नहीं देना चाहिये। यह अवधान प्रत्येक भस्म सेवी पर रखना उचित होगा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोमल भस्म योग--४

अग्नि स्थायी शोरा २० तोला को इतनी बड़ी कुलड़ी में आधा डाले जिससे कि वह पूरी तरह भर जावे। फिर गाय के दूध में चार घण्टा स्वेदित किया हुआ श्वेत सोमल १ तोला रखकर ऊपर से अवशिष्ट शोरा डालकर दबा कर कुलड़ी पर ढक्कन दे कपड़मिट्टी तीन बार करके सुखालें। शुष्क होने पर २॥ सेर गोठों में फूंकें। स्वाङ्गशीतल होने पर सम्पुट को खोलकर फूले हुए मल्ल को निकाल कर खुरासानी अजवायन की सफेद राख २० तोलाके सम्पुट में रख कर ½ सेर गोठों में फूंकें। अनन्तर मूली के स्वरस की भावना देते हुए ३ पुट इतनी ही अग्नि की दें। इसी तरह अर्क दुग्ध की भावना कर ३ पुटें और घीकुमारी स्वरस देते हुए ३ पुटें दें। फिर निकाल कर सुरक्षित रखलें। इस भस्म के गुण भी पूर्व भस्मों के समान हैं। विशेषतः वातव्याधियों के लिए अधिक फलप्रद हैं। क्लीवता, श्वास रोग पर भी इसका पूर्ण सफल प्रयोग किया जाता है।

सोमल भस्म योग--५

शुद्ध श्वेत सोमल १ तोला लेकर खरल में मर्दनकर उसमें लाल मरीच का स्वरस डालकर घोंटें। घोटते हुए १ पाव मरीच का स्वरस खपा दें। फिर छोटे पतासे के आकार की टिकिया बनाकर निर्धूम गोठों पर रखकर सेकें। अनन्तर खरल में डालकर आधा सेर अदरख का रस पूर्ववत् देते हुए घोंटें और पूर्व की तरह टिकिया बनाकर फिर सेंक लें। टिकिया फूलने पर उठाकर सुरक्षित रख लें।

यह भस्म समस्त प्रकार की वात व्याधि और श्वास रोग में अचूक काम करने वाली है। इसका उपयोग १ दिन के अन्तर से ७ बार करना चाहिये। अनुपान में हलवा दिया जाता है। पूर्व भस्मों के समान ही आहार-विहार को रखना उचित होगा।

दरद भस्म योग--१

सिंगरफ ४ तोला को १०० निम्बुओं की स्वरस की भावना देकर प्रतिदिन ६ घण्टा घोटते हुए टिकिया बना कर शुष्क करें। फिर भल्लातक २० तोला, एक पोथिया लहसुन ४० तोला इन को कूटकर गोला बनाकर उसके बीच में दरद की टिकिया रख कर ७ कपड़मिट्टी करें। हर कपड़मिट्टी को अच्छी तरह सुखा कर दूसरी कपड़मिट्टी करनी चाहिये। फिर ५ सेर उपलों की आंच दें। स्वांग-शीतल होने पर भस्म को निकाल सुरक्षित रख लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धातु दौर्बल्य, प्रमेह, क्लीवता की यह अमोघ औषधि है। इसे १ चावल की मात्रा से प्रारम्भ कर २ रत्ती मात्रा तक बढ़ावें। फिर उसी क्रम से ह्रास करें।

दरद भस्म योग--२

सिंगरफ ४ तोला को खरल में घोटकर १० तोला आक का दूध डालें और मर्दन करें। इस तरह ५ भावना आक के दूध की दें। प्रतिदिन ६ घण्टा दवा को अवश्य घोंटना चाहिये। फिर शुष्क करके चपटी टिकिया बनाकर अच्छी तरह सुखा लें। फिर २० तोला प्याज को कूट कर उसके गोला में टिकिया को रखकर ऊपर कपड़मिट्टी करके सुखावें। इस तरह ३ कपड़मिट्टी करके सुखालें। अनन्तर ५ सेर उपलों में रखकर इस को फूँक लें। स्वांगशीतल होने पर सम्पुट को खोल कर भस्म को प्राप्त करें। श्वेतरंग की भस्म मिलेगी।

इस भस्म का उपयोग शुक्र विकारों में अतिशय फलप्रद होता है। धातुदौर्बल्य प्रमेह, क्लीवता में इससे चमत्कार पूर्ण लाभ होता है। इसे १।२ रत्ती की मात्रा में मक्खन के साथ २१ दिन तक प्रयोग करना चाहिये।

रसकपूर भस्म योग—१

रस कपूर १० तोला लेकर पोटलीबद्ध करके बकरी के २ सेर दूध में औटावें। फिर बैंगुनोंके एक सेर रस में इसी तरह औटावें। अनन्तर गाय के घी में डालकर अच्छी तरह गरम करें। बाद में खरल में डालें और विजोरा निम्बू का स्वरस देकर घोटें। सूखने पर फिर बिजोरा का रस डालें और घोटें। इस तरह ७ दफे रस डालकर घोंटें। शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखालें। फिर एक छोटी हंडी में रीठे का २० तोला चूर्ण को रक्खें और उसपर टिकिया रखकर उतना ही रीठा चूर्ण ऊपर डालकर जमा दें। हंडी का मुख बन्दकर कपड़मिट्टी करके सुखावें। अनन्तर गजपुट में फूंक दें। स्वाङ्ग शीतल होने पर भस्म को निकाल लें।

रस कपूर भस्म योग—२

शुद्ध रसकपूर तवे पर रखकर उसके नीचे दीपक की लौ के समान अग्नि जलावें। १-१ बूंद डालते हुए अर्क दुग्ध १० तोला का चौबा दें। बूंदें शीघ्रता से डालते रहें ताकि रसकपूर उड़े नहीं। फिर इसी तरह भेड़ के दूध १० तोला का चौबा दें। काली तमाखू १० तोला को हुक्के के पानी से पीसकर लुगदी बनावें। रसकपूर को वीच में रक्खें। अनन्तर ३ कपड़मिट्टी अच्छी तरह करके ४ सेर उपलों की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आँच दें। दूसरी ३ सेर उपलों की आँच दें। फिर सम्पुट को खोल कर भस्म को सुरक्षित रखलें। मात्रा १ चावल से १ रत्ती तक।

ये दोनों ही भस्में नाड़ीव्रण, भगन्दर पर बहुत ही विशिष्ट लाभ करती हैं। उष्णवात की जीर्णावस्था में इससे बहुत ही अच्छा लाभ प्राप्त होता है। शरीर के अन्तस्थ अवयवों में व्रण की आशंका होने पर इसका प्रयोग फलप्रद देखा गया है। इसे १ चावल से १ रत्ती की मात्रा में मुनक्का में रखकर दिया जाता है। इनमें नमक अपथ्य है।

दाल चिकना भस्म योग--१

गाय के घी में औटाया दालचिकना २ तोला, जमाल गोटा बीज २ तोला, लहसुन ४ तोला, अरीठे का छिलका ४ तोला, आक का दूध ६ तोला। दालचिकना के अतिरिक्त दवाओं का गोला बनावें। दाल चिकना को बीच में रखकर कपड़ मिट्टी तीन अच्छी तरह करें। तीन सेर उपलों की अग्नि में फूँकें। पुट निर्वात-स्थान पर देनी चाहिये। जिससे अग्नि एक साथ तेज न हो जाय। शीतल होने पर सम्पुट को खोलकर दालचिकना को निकाल लें। यह फूला हुआ नरम होगा। यदि एक पुट में न बने तो दूसरी पुट फिर देनी चाहिये।

यह भस्म भगन्दर, नाड़ीव्रण, उपदंश, उष्णवात पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से काम करती हैं। इसे १ चावल से १ रत्ती की मात्रा में मुनक्का आदि में रखकर देना चाहिये। इसे १ सप्ताह से १० सप्ताह तक दिया जाता है। पथ्य में नमक नहीं दिया जाता। घी की मात्रा अधिक देनी चाहिये।

दाल चिकना भस्म योग--२

दाल चिकना को गाय के घी में एक घण्टा तक औटावें। आधा सेर अजवायन को आक के दूध में भिगोवें। दूध अजवायन के एक अंगुल ऊपर तक आजाना चाहिये। उसे घाम में शुष्क करलें। एक बड़े शराव में आधी अजवायन रखें। और उसके बीच में गड्ढा बनाकर दाल चिकना को रखें। ऊपर अवशिष्ट अजवायन देकर दबा दें। फिर दूसरा उतना ही बड़ा शराव ऊपर देकर कपड़ मिट्टी करके शुष्क करलें। तीन कपड़मिट्टियां हो जाने पर ५ सेर उपलों की अग्नि में फूँक लें। एक ही अग्नि में दालचिकना फूल जायगा और नरम हो जायगा। अग्नि की कमी के कारण कच्चापन रह जाय तो पुनः दूसरी पुट देनी चाहिये। इस भस्म के गुण भी पूर्ववत् हैं।

मुर्दा शंख भस्म

मुर्दा शंख को पीसकर चीनी मिट्टी के वर्त्तन में रखें और उस पर जल डाल दें। सुबह शाम निथरे जल को निकाल दें। इस तरह तीन दिनों तक करें। फिर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुष्क कर खरल में डालें और जितना मुर्दा शंख हो उतना अर्क दुग्ध डालकर घोंटें। शुष्कप्राय होने से टिकिया बनालें। लहसुन छिलका उतारा हुआ १० तोला लेकर उसको पीसें और उसकी लुगदी में उक्त टिकिया को रखकर कपड़मिट्टी कर सुखावें। फिर दूसरी कपड़मिट्टी कर सुखालें। इसी तरह तीन कपड़-मिट्टी कर शुष्क करें। अनन्तर ५ सेर उपलों की अग्नि में फूँक लें। स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल कर मुर्दाशंख को खरल में डाल कर पूर्ववत् आक का दूध देकर टिकिया वनाकर पहिले की तरह पुट दें। इस तरह तीन पुट देने के वाद मुर्दाशंख में घृत कुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बनावें और २० तोला भांग की लुगदी में रखकर उपरोक्त विधि से कपड़मिट्टी कर सुखावें और ५ सेर उपलों में फूँकलें। भस्म को निकाल कर सुरक्षित रखलें।

नाड़ीव्रण, भगन्दर, दुष्टव्रण, जीर्ण उपदंश, उष्ण वात, आदि कठिन रोगों पर चमत्कार पूर्ण लाभकारी महौषधि है। इसे $^1/_४$ रत्ती से १ रत्ती की मात्रा में मुनक्का आदि में रख कर ७ दिन से १० दिन तक प्रयोग करना चाहिये। इसके सेवन के समय नमक, खटाई, मसाला वर्जित हैं।

तुत्थ भस्म

नीला थोथा १० तोला को चौड़े मुँह के कांचपत्र में रखकर ऊपर से सरसों तैल २० तोला डाल दें। ढक्कन को बन्दकर घाम में रख दें। इस तरह १० दिन तक घाम में रहने दें। प्रतिदिन हिला दिया करें। फिर निकाल कर गरम जल से प्रक्षालित करें। अनन्तर नवसादर २ तोला, सुहागा २ तोला, गन्धक २ तोला डालकर खरल करें और अर्क दुग्ध ५ तोला देकर अच्छा तरह मर्दन करें। शुष्कप्राय होने पर शराव सम्पुट में बन्दकर फूंकलें। श्वेत कोमल भस्म न हो तो नवसादर आदि वस्तुएँ आधी देकर घीकुमार के रस से घोंटकर पूर्ववत् पुट दें। इसकी मात्रा १ से ३ रत्ती तक है। पाचन शक्ति की दुर्बलता, अत्य-धिक विष्टव्ध प्रमेह, नपुंसकता, नेत्रज्योति की कमी, दूषितव्रण आदि पर अच्छा फल प्रदान करती है। वमन, विवमिषा नहीं होती। रोगी को दूध का सेवन कराना चाहिये।

जंगाल भस्म

जंगाल १० तोला को २० तोला सरसो तैल में १० दिन तक भिगो कर घाम में रक्खें। प्रतिदिन शीशी को हिलावें। फिर निकाल कर स्नेहांश को कपड़े से पोंछकर खरल में डालें और चौकीया सुहागा २ तोला, नवसादर २ तोला मिला कर मर्दन करें और शुष्क करलें। अनन्तर आर्द्र होने जितना आकका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूध देकर घोंटें और आमला सार गन्धक १ तोला का चूर्ण को डालें। अच्छी तरह घोंटकर शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखा लें। फिर गजपुट में सम्पुट को रख कर फूंकलें। आवश्यक होने पर दूसरी पुट और दें।

इस भस्म का उपयोग पुरातन श्वास तथा कास रोग पर अतिशय फलप्रद सिद्ध होता है। मात्रा १ रत्ती आदी रस मधु के अनुपान से देनी चाहिये। इसके अतिरिक्त रक्त में विजातीय तत्वों की उपस्थिति को शमन करने के लिए इसका प्रयोग विशिष्ट फलप्रद सिद्ध होता है।

वैक्रान्त भस्म

दोला यन्त्र द्वारा ४ प्रहर तक गोमूत्र में स्वेदित करें। शुद्ध वैक्रान्त ५ तोला, शुद्ध गन्धक ५ तोला, शुद्ध पारद ५ तोला एवं शुद्ध हिंगुल ५ तोला लें। पारद गन्धक की कज्जली करें। शुद्ध वैक्रान्त को यत्नपूर्वक सफा हिमामदस्ता में कूट लें। न घिसनेवाली अच्छी खरल में डाल कर निम्बू स्वरस की भावना देकर अच्छी तरह मर्दन कर शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखालें। फिर शराव सम्पुट में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंक लें। पांच पुटों में हिंगुल पारद एवं गन्धक की उपरोक्त मात्रा दें। फिर ५ पुटें आधी आधी औषधियों की कर दें। सारी पुटें १० देनी चाहिये। निम्बू स्वरस की भावना से ही पुटें दी जायेंगी। १ रत्ती वैक्रान्त भस्म के साथ २४ रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर १-१ रत्ती की मात्रा में प्रयोग करें।

वैक्रान्त को हीरक का प्रतिनिधि माना जाता है। हीरक के अभाव में इसका प्रयोग किया जाता है। जीर्ण ज्वर, क्षय, दौर्बल्य, श्वास, कास, पाण्डु, प्रमेह, क्लीवता एवं कुष्ठ आदि रोगों पर इसका फलप्रद उपयोग होता है। अभ्रक भस्म की जगह पर मकरध्वज भी मिलाया जाता है।

पन्ना भस्म

पन्ना की रंगदार खड़ लेकर गरम जल से अच्छी तरह धोयें। फिर पोटली-बद्ध कर गोदुग्ध में दोलायन्त्र से २ प्रहर तक स्वेदित करें। फिर निकाल कर गरम जल से प्रक्षालित कर आतप शुष्क कर लें। अनन्तर ५ तोला पन्ना लेकर स्वच्छ हिमामदस्ता में कूट कर सूक्ष्म चूर्ण कर लें। न घिसनेवाली खरल में डालकर मर्दन करें। अनन्तर पन्ना के समभाग शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल एवं शुद्ध हरतालतपकी लेकर पन्ना के साथ १-१ का मर्दन करें। अनन्तर निम्बू-स्वरस की भावना देकर घोंटकर शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर आतप में सुखावें। फिर शराव सम्पुट में बन्द कर फूंकलें। इस तरह तीन पुटें दें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फिर चार पुटों में गन्धक आदि वस्तुओं को आधी मात्रा में देकर पुट दें। कोमल भस्म होगी, इसे रख लें। मात्रा २ चावल से ४ चावल।

इस भस्म का उपयोग कास, श्वास, पाण्डु, शोथ, अर्श, दौर्बल्य, अग्निमान्द्य आदि रोगों पर किया जाता है। हृदय तथा मस्तिष्क रोगों में व्यवहार करने के लिए शुद्ध पन्ना को कूटकर गुलाब जल से सम्यक् घोंटकर पिष्टी कर लें। फिर पन्ना का आठवां भाग शुद्ध हिंगुल मिलाकर घृतकुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बनाकर ४ सेर गोठों की अग्नि दें। दूसरी पुट हिंगुल तथा गुलाब फूल के के स्वरस के सहयोग से दें। तीसरी पुट हिंगुल और चन्दन के क्वाथ की सहकारिता से दें। भस्म को सुरक्षित रख लें। दिल-दिमाग, अम्लपित्त में अतिशय गुणकारी है।

माणिक्य भस्म

माणिक्य की रंगदार खड़े लेकर गरम पानी से प्रक्षालन करें। फिर पोटलीबद्ध करके निम्बू स्वरस में दोलायन्त्र द्वारा २ प्रहर तक स्वेदित करें। अनन्तर गरम जल से धोकर घाम में सुखावें। स्वच्छ हिमामदस्ता में कूटकर सूक्ष्म चूर्ण करके न घिसनेवाली खरल में डालकर मर्दन करें। फिर माणिक्य से चौथाई भाग शुद्ध गन्धक, शुद्ध हिंगुल एवं शुद्ध मैनसिल मिलाकर निम्बू स्वरस की भावना देकर टिकिया बनाकर गजपुट में फूकें। इस तरह १० पुट देनी चाहिये।

स्मरण-शक्ति की कमी, क्लीवता, दौर्बल्य, क्षय, श्लेष्म विकार आदि में इससे अतिशय फल प्राप्त होता है। दिल, दिमाग की ताकत बढ़ाने तथा प्रदर रक्तस्राव को रोकने के लिए बननेवाली माणिक्य भस्म में शुद्ध माणिक्य की गुलाब जल से घोंटकर पिष्टी बना लें। फिर घीकुमारी स्वरस एवं चन्दन क्वाथ की भावना देकर टिकिया बनाकर शराव सम्पुट में बन्द कर हल्की अग्नि में फूक लें। इस विधि से बनी भस्म हृदय, मस्तिष्क को बलप्रदान करने में विशिष्ट फल देनेवाली होती है। शरीर के किसी भी अवयव से होनेवाले रक्त स्राव का अवरोध करती है।

स्वर्ण पंचक भस्म

स्वर्ण १ तोला, चाँदी २ तोला, शुद्ध रांगा ३ तोला, शुद्ध यशद ४ तोला एवं शुद्ध कान्त लोह ५ तोला। स्वर्णचांदी का बुरादा करलें। चाहें तो दोनों के वर्क भी ले सकते हैं। लोह को कूटकर सूक्ष्म चूर्ण कर लें। रांगा तथा यशद को गलाकर समभाग शुद्ध पारद में मिलावें। फिर इस योगिक को कूटकर सूक्ष्म करलें। लोह चूर्ण के साथ इसको खरल में डाल कर मर्दन करें। अनन्तर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वर्ण तथा चाँदी के बुरादों को मिलावें और मर्दन करें। वर्क मिलाने हों तो एक एक करके मिलाते जांय और मर्दन करते जांय। बाद में गन्धक शुद्ध आमलासार १ तोला, तपकीहरताल १ तोला, सिंगरफ १ तोला मिलाकर घीकुमार का स्वरस देकर अच्छी तरह मर्दन करें। शुष्कप्राय होने पर टिकिया बना कर सुखा लें। फिर एक शराव में फुलाई फिटकरी का चूर्ण ५ तोला फैलाकर उसपर टिकियों को रखें और फिर उतना ही फिटकरी चूर्ण ऊपर देकर दूसरे शराव से ढक कर कपड़-मिट्टी करके शुष्क कर ५ सेर छाणों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर स्वर्ण आदि की टिकिया को खरल में डालकर मर्दन करें और गन्धक, हरताल तथा सिंगरफ को एक-एक तोला डालकर अर्क पत्र स्वरस की भावना देकर पूर्व की तरह सब क्रियायें करके ६ सेर गोठों की अग्नि में फूंकें। तीसरी पुट गन्धक आदि को उतनी ही मात्रा में डालकर छोटी कटैरी के स्वरस की भावना देकर दें। चौथी पुट गन्धक आदि डालकर बड़ी कटैरी के स्वरस की भावना से दें। अग्नि के गोठे १ सेर बढ़ा देने होंगे। पांचवीं पुट नकछिकनी के स्वरस की भावना से गन्धक आदि डालकर ९ सेर गोठों में दें। छठी में पुनर्नवा स्वरस, सातवीं में नीमछाल का स्वरस, आठवीं में केले के कन्द का स्वरस, नवमी में मकोय का स्वरस एवं दशमी में कांटेदार चौलाई का स्वरस देकर पुट देनी चाहिये। गन्धक आदि सब पुटों में लगेंगे। दश सेर गोठा हो जाने पर गोठों को और नहीं बढ़ाना चाहिये। उतने ही परिमाण में देते रहें। दशपुट हो जाने पर भस्म को सुरक्षित रखलें।

यह भस्म आयुर्वेद की एक गौरवोज्वल औषधि है। शरीर का ऐसी कोई अवयव नहीं जिसपर इसकी फलप्रद क्रिया न होती हो। मस्तिष्क, हृदय, श्वास-संस्थान, यकृत, पाचक संस्थान, मूत्राशय, स्नायुकेन्द्र के विकारों का प्रशमन करके उन्हें बलप्रदान करती है। धातु दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर रोगों पर इसकी असीम क्रिया है। रोगों का शमन तथा शरीरस्थ शक्ति का निर्माण ये दोनों कार्य समान रूप से इसके द्वारा सम्पन्न होते हैं। यह एक ऐसी औषधि है जिसके रहने पर चिकित्सक अनेकों रोगों का इलाज पूर्ण सफलता के साथ कर सकता है। इसका स्वतन्त्र अथवा अन्य दवाओं के साथ प्रयोग $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार अनुपान भेदों से करना चाहिये।

स्वर्ण भस्म योग--१

विशुद्ध स्वर्ण बुरादा अथवा स्वर्णपत्र ६ माशा को कचनार की छाल का रस १० तोला के साथ खरल में मर्दन कर शुष्क कर टिकिया बनावें। एक छोटे शराव में गन्धक आमला सार १ तोला का चूर्ण रखकर उसपर स्वर्ण की टिकिया को रखें। कपड़मिट्टी करके ४ सेर गोठों की अग्नि में फूंकें। स्वाङ्ग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतल होने पर टिकिया को निकाल कर खरल में मर्दन कर गुलेवांसा की जड़ का स्वरस देकर मर्दन करें। रस १० तोला होना चाहिये। शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखा लें। शराव में टिकिया के नीचे ऊपर पूर्ववत् गन्धक देकर कपड़मिट्टी कर पूर्वोक्त विधि से पुट दें। अनन्तर तीसरी पुट निम्बू स्वरस की भावना देकर गन्धक देते हुए पूर्व विधि से दें। फिर टिकिया को निकाल कर खरल में डाल कर तुलसीपत्र स्वरस की भावना देकर टिकिया बनाकर शुष्क कर शराव सम्पुट में बन्दकर फूंक लें। इसमें गन्धक नहीं दिया जाता। प्रत्येक रस जो भावना के लिए प्रयुक्त हो १० तोला होना चाहिये। अनन्तर नीम छाल का रस १० तोला की भावना देकर पुट देनी चाहिये। फिर गुलाब फूल के स्वरस १०-१० तोला से ३ पुटें देकर भस्म को सुरक्षित रख लें।

यह भस्म दिल, दिमाग के रोगों के लिए अतिशय लाभकारी होती है। स्नायु दौर्बल्य, मानसिक अस्थिरता, अवसाद पर पूर्ण फलप्रद है। धातुदौर्बल्य शुक्रविकार, प्रमेह में इससे विशिष्ट लाभ होता है। यकृत तथा वृक्क विकारों पर भी इसका अच्छा उपयोग है। इसे $^1/_4$ से $^1/_2$ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार अनुपानों से प्रयुक्त किया जाता है।

स्वर्ण भस्म योग—२

विशुद्ध स्वर्ण का पतला पत्र ६ माशा लेकर अग्नि में गरम करके अंगूरी सिरका, निम्बू स्वरस एवं काजी में ३-३ बार बुझाव दें। फिर बुरादा करके अच्छी खरल में डालें और शुद्ध आमलासार गन्धक ६ माशा डालकर मर्दन करें। घीकुमार की भावना देकर २ प्रहर तक घोटकर टिकिया बना कर शराव सम्पुट में रखकर ४ सेर उपलों की आंच दें। शीतल होने पर निकाल कर उतना ही गन्धक देकर निम्बू स्वरस की भावना देकर टिकिया बनाकर पूर्ववत् फूंकें। पर्याय क्रम से १० पुट घीकुमारी स्वरस की भावना से और १० पुटें निम्बू स्वरस की भावना से दें। गन्धक प्रतिपुट में देना होगा। बीस पुट हो जाने पर गन्धक देना बन्द कर निम्बू स्वरस से घोंटकर एक पुट दें। इस तरह घृतकुमारी स्वरस, तुलसी पत्र स्वरस की १-१ भावनाएं देकर भस्म को सुरक्षित रख लें।

इस भस्म का उपयोग पूर्व की भस्म की ही तरह होता है।

रौप्य भस्म योग—१

चांदी पत्र २ तोला का लेकर आग पर गरम करें और निम्बू स्वरस में २० बार बुझा दें। अनन्तर जल से प्रक्षालित करके पोंछकर सूक्ष्म बुरादा बना लें। फिर अच्छी खरल में डालकर १ तोला सिंगरफ को साथ में डालें और दोनों का मर्दन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करें। फिर आक के दूध की भावना दें और अच्छी तरह घोटें। शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर घाम में सुखावें। अनन्तर, आक की नूतन कोंपल ५ तोला देकर पीसकर लुगदी बनावें और उस लुगदी में टिकिया को रखकर अच्छी तरह कपड़मिट्टी तीन करके ५ सेर गोठों की अग्नि में फूँकें। इस तरह हिंगुल देते हुए तीन पुटें दें। अत्युत्तम भस्म तैयार होगी।

इस भस्म में शुक्रसंस्थान को बल देने का गुण अन्य विधियों से बनी रौप्य भस्म की अपेक्षा अधिक होता है। प्रमेह, धातु दौर्बल्य, शीघ्रपतन पर बहुत अच्छा काम करती है। इसके अतिरिक्त दिल तथा दिमाग की दुर्बलता पर भी इसका अच्छा उपयोग होता है। पौष्टिक योगों में पड़नेवाली रौप्य भस्म के स्थान पर इस भस्म को डालने से बहुत अच्छा फल प्राप्त होता है। इसी तरह हृदय, मस्तिष्क, यकृत, वृक्क, आमाशय, एवं श्वास संस्थान के विकारों में यह अतिप्रद फल है।

रौप्य भस्म योग—२

विशुद्ध चाँदी का पत्र ५ तोला का लेकर अग्नि में खूब तपाकर हल्दी के काढ़ा में ४१ बार बुझाव दें। फिर हल्दी की लुगदी में रखकर शराव सम्पुट में बन्द कर फूँक लें। इस तरह १४ पुट दें तो भस्म होगी। इसी तरह जामुन की छाल के क्वाथ में बुझाव तथा सम्पुट से तथा त्रिफला क्वाथ में १२० बार बुझाव तथा छोटी दूधी आधा पाव की लुगदी में रख कर पुटें देने से भी भस्म होती है।

इन तीनों ही पद्धतियों से बनी रौप्य भस्म दिल, दिमाग, यकृत्, वृक्क, शुक्र-संस्थान के विकारों में अच्छा लाभ करती हैं। धातु दौर्बल्य, प्रमेह, ओजक्षय, अवसाद, हृच्चञ्चलता, स्मरण-शक्ति का ह्रास पर इससे विशिष्ट फल प्राप्त होता है। ये भस्म सौम्य प्रकृति की तथा अतिशय गुणकारी होती हैं। $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार विविध अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है।

ताम्र भस्म योग—१

ताम्रपत्र लेकर उसको गोमूत्र में इक्कीस बार बुझाव दें। फिर इतनी ही बार गोतक्र में दें। अनन्तर निम्बूस्वरस में ग्यारह बार बुझाव देकर मिट्टी से रगड़कर उष्ण जल से प्रक्षालित करें। यदि ५ तोला हो तो उसपर १ तोला पारद को मलें और सिंगी मोहरा २ तोला, हरतालतपकी २ तोला, आमला सार गन्धक ४ तोला लेकर खरल में मर्दन कर इसको एक दिन तक वनगोभी के स्वरस से भावित करें। सूखने पर नकछिकनी पीले फूलवाली के स्वरस की एक भावना देकर लगदी बनावें। एक शराव में आधी लुगदी रख कर उसपर उक्त ताम्र पत्र को रखें और ऊपर से अवशिष्ट लुगदी को जमावें। अनन्तर दूसरा शराव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊपर देकर अच्छी तरह कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंकलें। निकाल कर देखें कि भस्म नरम होगई है या नहीं। यदि न हुई हो तो पारद १ तोला को उक्त भस्म के साथ घोटकर निम्बू स्वरस से टिकिया बनाकर उपरोक्त लुगदी तैयार करके उसमें रख पूर्वविधि से पुनः पुट दें। भस्म को निकालकर पंचगव्य की भावना देकर ३ पुटें दें। अग्नि का परिमाण कम रहना चाहिये।

ताम्र भस्म की यह प्रक्रिया बहुत ही फलदायक सिद्ध हुई है। जीर्ण ज्वर, श्वास, पुरातन कास, अर्धाङ्गवात, प्रमेह, बहुमूत्र आदि में इससे चमत्कारपूर्ण लाभ होता है। इसे $^1/_4$ रत्ती से $^1/_2$ रत्ती की मात्रा में प्रयुक्त करना चाहिये। यकृत शोथ और यकृत विद्रधि में इससे अच्छा लाभ होता है।

ताम्र भस्म योग--२

विशुद्ध ताम्रपत्र को अग्नि में तपाकर त्रिफला क्वाथ, तैल, गोमूत्र, कांजी एवं तक्र में ७-७ बार बुझाव दें। फिर ताम्रपत्र को रेती से घिसकर बुरादा बनावें। बुरादा यदि १० तोला हो तो गन्धक ५ तोला लें। गन्धक का सूक्ष्म चूर्ण करके इसमें से आधा एक छोटी मिट्टी की हंडी में डालें। फिर ताम्र के बुरादे को रखकर अवशिष्ट गन्धक डालकर निम्बू स्वरस इतना डालें कि गन्धक के दो अंगुल ऊपर आजाय। हंडी का मुख बन्द कर कपड़ मिट्टी करके गजपुट की अग्नि दें। इस तरह गन्धक तथा निम्बू स्वरस देते हुए ३ अग्नि दें। अनन्तर ताम्र को खरल में डालकर हिंगुल १ तोला देकर मर्दन करें। अनन्तर निम्बू स्वरस देकर अच्छी तरह घोंटकर शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर शुष्क करें। अनन्तर शराव सम्पुट में रखकर फूंक लें। इस तरह १० पुटें दें। भस्म को सुरक्षित रख लें।

यह ताम्र भस्म पूर्ण गुणकारी होती है। यकृत विकार, शूल, अग्निमान्द्य, गुल्म, अपतन्त्रक आदि में बहुत अच्छा लाभ करती है। औषधि योगों में ताम्र भस्म के स्थान पर इसका प्रयोग अधिक फलदायी सिद्ध होता है। स्वतन्त्र रूप से इसका उपयोग करते समय मात्रा $^1/_4$ रत्ती से १ रत्ती दी जाती है।

अभ्रक भस्म योग--१

धान्याभ्रक २० तोला लेकर उसके साथ कलमी शोरा ५ तोला और गुड़ ५ तोला मिलाकर चपटे लड्डू ५ बना कर निर्धूम कोयलों की आंच पर रख दें। जब शीतल हो जावे तब अभ्रक को उठाकर खरल में डालकर उतनी ही दोनों वस्तुएं देकर उसी तरह अग्नि दें। इस तरह पाँच बार अग्नि दें। फिर एक बड़े वर्त्तन में ५ सेर जल डालकर इस अभ्रक को उसमें डाल दें। चौबीस घण्टा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पड़ा रहने दें। बीच बीच में लकड़ी से हिला दिया करें। अनन्तर निथरे जल को निकाल दें। इस तरह तीन बार जल को निकालें। फिर अभ्रक को शुष्क कर खरल में डालकर गोमूत्र की भावना देकर घोंटें। प्रतिदिन ६ घण्टा घोंटते हुए ३ दिन तक घोटकर शुष्क प्राय करके टिकिया बनावें और सम्पुट में बन्दकर गजपुट में फूँक लें। इस तरह १० पुट देने से अभ्रक निश्चन्द्र हो जायगा। फिर श्वेत गुञ्जा ५ तोला लेकर सूक्ष्म कूट कर १ सेर जल में काढ़ा करें। आधा पाव पानी रखकर छानकर अभ्रक में देकर मर्दन करें। शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर शराव सम्पुट में बन्द कर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूँक लें। इस तरह १० पुट दें। भस्म को सुरक्षित रख लें।

इस विधि से बनी भस्म सम्पूर्णतया चन्द्रिका रहित और वारितर होती है। यह वह भस्म है जो प्रमेह तथा पुरुष शक्ति हीनता में सौ दवाओं जैसा काम करती है। इन बीमारियों के लिए बननेवाली दवाओं में अभ्रक भस्म की जगह इसे डालकर बनाने पर उनकी शक्ति १० गुनी बढ़ जाती है। शारीरिक दौर्बल्य, रक्ताल्पता, अवसाद, शिरोवेदना, वातविकार, श्लेष्मविकृति आदि पर इससे अच्छा लाभ होता है। इसे १/२ से १ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार प्रयोग करना चाहिये। शुक्र विकारों में इसे मक्खन के साथ दिया जाता है। ३० से ४० दिनों तक अहोरात्र में १ बार इसका प्रयोग करना चाहिये। रोगी को दूध अधिक मात्रा में देना चाहिये।

श्वेत अभ्रक भस्म योग

श्वेत अभ्रक को परिष्कृत करके धान्याभ्रक बनावें। फिर खरल में डालकर मूली के स्वरस से घोटकर टिकिया बनाकर सम्पुट में बन्द कर गजपुट की आंच दें। इस तरह मूली स्वरस की भावना देकर १४ पुटें दें। भस्म को सुरक्षित रख लें।

पित्त प्रधान रोगों में इसका उपयोग अच्छा फल प्रदान करता है। तीव्र ज्वर में बड़ी इलायची के बीजों का चूर्ण मधु के साथ प्रयोग करना चाहिये। गिलोय-सत्व, वंशलोचन, छोटी इलायची और मिश्री के साथ पित्त विकारों में देना चाहिये। पथरी, मूत्रावरोध पर मूत्रल अनुपानों से इसका प्रयोग किया जाता है। मात्रा १॥ रत्ती से ३ रत्ती तक दी जाती है।

लौह भस्म योग--१

विशुद्ध लौह ४० तोला लेकर अग्नि यें तप्त कर गोमूत्र में २१ बार बुझावें। फिर इसी तरह त्रिफला क्वाथ, तक्र तथा घृतकुमारी स्वरस में २१-२१ बार बुझाव दें। अनन्तर गरम जल से प्रक्षालित कर घाम में सुखा लें। पश्चात्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कूट कर सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें। जितना वजन में लौह चूर्ण हो उतना विशुद्ध कलमी शोरा डालकर घृतकुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बनावें और घाम में सुखाकर शराव सम्पुट में रख तीन कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूंकें। स्वाङ्ग-शीतल होने पर निकाल कर खरल में डाल सूक्ष्म करें। अनन्तर लौह के समान भाग शुद्ध आमला सार गन्धक डालकर मर्दन करें और पूर्ववत् घृतकुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बना कर उल्लिखित विधि से गजपुट में फूंकलें। इस तरह ७-७ पुटें दोनों औषधियों की दें। ये औषधियाँ पर्याय क्रम से दी जाती हैं।

यह भस्म क्लैव्यारि लौह भस्म के नाम से हमारे यहाँ व्यवहृत होती है। क्लीवता को मिटाने में इसकी अद्भुत क्षमता है। शुक्र विकारों को नष्ट करने में यह पूर्ण सक्षम है। इस तरह के विकारों के लिए बननेवाले योगों में लौह भस्म के स्थान पर इस का प्रयोग करने से योग की शक्ति और अधिक बढ़ जाती है। इसे स्वतन्त्र रूप से अथवा सहयोगी अन्य दवाओं के साथ १ से २ रत्ती की मात्रा में मक्खन के साथ प्रयोग करना चाहिये।

लौह भस्म योग--२

बुरादा फौलाद १० तोला को आग पर तीव्र गरम कर गूंवारपाठा के पीले रस में ३ बार बुझावें। इसी तरह पुनर्नवा स्वरस, अपामार्ग स्वरस, अर्क दुग्ध एवं वट दुग्ध में ३-३ बार बुझाव दें। अनन्तर पुनर्नवा स्वरस से घोट कर पुनर्नवा की लुगदी में रख कपड़मिट्टी कर के ५ सेर उपलों की अग्नि दें। वारितर होनेतक इसी तरह पुट दें। फिर निकाल कर सूक्ष्म पीस कर सुरक्षित रखलें।

यह लौह भस्म प्रायः सर्वरोगों पर अनुपान भेद से लाभकारी सिद्ध होती है। विशेषतः क्लीवता, दौर्बल्य, यकृत विकार, शोथ, श्वास, कास आदि में अतिशय फल प्राप्त होता है। रोगानुसार विविध अनुपानों से १ से १॥ रत्ती की मात्रा में इसका प्रयोग किया जाता है।

लौह भस्म योग--३

कान्त लौह चूर्ण—जोकि मोटा हो—को कुलछा में रख कर अग्नि पर खूब गरम करें। फिर त्रिफला क्वाथ में बुझादें। इस तरह २१ बार बुझाव दें। अनन्तर एक लौह पात्र में डालकर त्रिफला जल से सिक्त कर घाम में रखें। इस तरह ३१ दिन तक घाम में रखा रहने दें। बाद में जल से इतना धोयें कि श्वेत जल आने लगे। इस चूर्ण में से २० तोला को लोहे की खरल में डालकर मर्दन करें और सिंगरफ २ तोला को मिश्रित कर त्रिफला के क्वाथ की भावना दें। अच्छी तरह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घुट जाने पर टिकिया बना कर शुष्क कर सम्पुट में बन्धकर गजपुट की आंच दें। इस तरह १० पुटें २ तोला सिंगरफ देते हुए दें। फिर १० पुटें १ तोला सिंगरफ देते हुए गोमूत्र की भावना देकर दें और १० पुटें १।२ तोला सिंगरफ देते हुए केले के रस की भावना देते हुए दें।

यह अतिशय फलप्रद भस्म होती है। प्रायः समस्त रोगों में इस की पूर्ण फलप्रद क्रिया होती है। रक्ताणुओं को बढ़ाने में इसकी सम्पूर्ण क्षमता है। मात्रा १।२ से १ रत्ती की दी जाती है।

लौह भस्म--सूर्यपाकी योग--१

विशुद्ध लौह चूर्ण २० तोला, नकछिकनी ५ तोला एवं नवसादर २।। तोला को लोहे की खरल में अच्छी तरह मर्दन करें। फिर एक लोहे के पात्र में अथवा चीनी मिट्टी के पात्र में डालकर गौ के दही से आर्द्र कर दें और अच्छी तरह ढक कर जमीन में गाड़ दें अथवा एकान्त स्थान में रख दें। इस तरह ३० दिन तक रक्खा रहने दें। बीच-बीच में लकड़ी से चलाते रहें। अनन्तर गीलेपने को घाम में रखकर शुष्क कर लें। फिर मूली का स्वरस देकर पूर्ववत् २० दिन तक रक्खें और समय-समय पर लकड़ी से चलावें। अनन्तर आतप शुष्क करके जवा फूल के स्वरस देकर १० दिन तक पहिले की तरह बन्द करके रक्खें। समय पर निकाल कर आतप शुष्क करके सम्यक् रूप से मर्दन कर सुरक्षित रख लें।

लौह भस्म--सूर्यपाकी योग--२

विशुद्ध लौह चूर्ण २० तोला, नवसादर ५ तोला। दोनों को अच्छी तरह मर्दन कर कुकुड़छिदी के रस में चीनी मिट्टी के पात्र में ७ दिन तक भिंगो कर रखें। दिन में दवा को घाम में रखना चाहिये। बीच-बीच में लकड़ी से चलाते रहें। अनन्तर ७ दिन तक घृत कुमारी का रस डाल कर घाम में रखें। फिर पीस कर सुरक्षित रख लें।

ये दोनों भस्में लौह भस्म की सम्पूर्ण प्रतिनिधि हैं। इनका प्रयोग निःसन्देहता के साथ करना चाहिये।

मण्डूर भस्म

मण्डूर ४० तोला लेकर कूटें। फिर जल से तब तक धोयें कि जब तक मिट्टी निकलती रहे। अनन्तर लोहे के कलछा में गरम करके २१ बार गोमूत्र में बुझाव दें। बाद में अर्क दुग्ध की भावना देकर मर्दन करें। शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर शराब सम्पुट में बन्द कर गजपुट में फूंकें। इस तरह १४

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुट दें। फिर थूहर के दूध की भावना देते हुए १४ पुट दें। उत्तम भस्म तैयार होगी।

इस भस्म में अन्य साधारण विधियों से बनी मण्डूर भस्म की अपेक्षा अधिक गुण होते हैं। मण्डूर लोहे का प्रतिनिधि और उससे सौम्य होता है। यकृत् पर इसकी क्रिया सर्वाधिक होती है। रक्त के लाल अणुओं को बढ़ाने में इसका अच्छा उपयोग है। यह योगवाही भस्म होती है। अन्य सहयोगी दवाओं के साथ इसका प्रयोग बालकों के प्रायः समस्त रोगों पर किया जाता है। जो बच्चे अस्थि दुर्बलता से पीड़ित होते हैं, उनके लिए अतिशय गुणकारी होती है। इसे $^1/_2$ से १ रत्ती की मात्रा में रोगानुसार विविध अनुपानों से प्रयुक्त किया जाता है।

शीत मण्डूर भस्म

मण्डूर को कूटकर जल से खूब धोवें। जब स्वच्छ जल आने लगे तब घाम में रखकर सुखा लें। इस मण्डूर में से $^1/_2$ पाव लेकर १० तोला त्रिफला चूर्ण के साथ अच्छी तरह मर्दन करें। फिर एक मिट्टी के बर्त्तन में डालकर गौ दुग्ध की गाढ़ी लस्सी मिला कपड़े से ढक कर घाम में रख दें। जब लस्सी सूख जावे तब फिर १० तोला त्रिफला चूर्ण डाल कर घोंटें और पूर्ववत् लस्सी डालकर घाम में रक्खें। तीसरी बार फिर १० तोला त्रिफला चूर्ण मिला कर घोंट कर लस्सी मिलाकर कपड़ा बांध कर रक्खें। दवा से ३ अंगुल ऊपर आ जावे इतनी लस्सी डालनी चाहिये। लस्सी में २ हिस्सा दूध और १ हिस्सा जल देना चाहिये। तीसरी बार की लस्सी के सूख जाने पर मण्डूर को खरल में सूक्ष्म पीस कर रख लें। यह मण्डूर की भस्म कृष्ण होगी।

यह उदर विकारों की अच्छी फलप्रद औषधि है। संग्रह ग्रहणी रोग में तक्र के साथ इसका प्रयोग पर्पटी कल्प की तरह किया जाता है। इस तक्र में नमक नहीं देना होता। जल भी नहीं दिया जाता। इस तरह २७ दिन तक दवा के प्रयोग से रोग निवृत्ति हो जाती है और शरीर का वजन बढ़ जाता है। रोग पुराना हो और रोगी पूर्ण स्वस्थ न हुआ हो तो दूसरा कल्प करना चाहिये। इसे दिन में ३ दफे ६-६ रत्ती की मात्रा में दिया जाता है। दवा कल्प हो जाने पर रोगी को क्रमशः पौष्टिक आहार देना चाहिये। बालकों की यकृत् विकृति और उदर रोगों में इससे अच्छा फल प्राप्त होता है।

वंग भस्म योग—१

अच्छा रांगा को लोहे की कुलछा में आगी पर गलावें और घी कुमार के रस में बुझाव दें। इस तरह २१ बार करें। इस रांगे में से २० तोला लेकर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपरोक्त विधि से गलाकर २० तोला शुद्ध पारद में मिश्रित करें। रांगा फोटक हो जायेगा और टूटने लगेगा। इसे हिमामदस्ता में सूक्ष्म कर लें। फिर २० तोला शुद्ध आमलासार गन्धक को उसमें मिश्रित कर मर्दन करें। अनन्तर घीकुमार स्वरस की ३ भावनाएं देकर ४-४ तोला की टिकिया बनाकर घाम में सुखावें। फिर मिट्टी के कुण्डा में अपामार्ग पंचाङ्ग की श्वेत भस्म को भरकर उसके बीच में टिकियाओं को रखकर दूसरा कुण्डा ऊपर देकर कपड़मिट्टी करके शुष्क कर ५ सेर उपलों की आंच में फूंकें। स्वांग शीतल होने पर टिकियों को निकाल कर खरल में डालकर मर्दन कर ३ भावनाएं आक के दूध देकर टिकिया बनाकर शुष्क कर उपरोक्त विधि से पुट दें। इस तरह कंघी का स्वरस अथवा काढ़ा, नकछिकनी का स्वरस, वनगोभी का स्वरस, त्रिपतिया का स्वरस, भांगरे का स्वरस इनकी ३-३ भावनाएं देकर उपरोक्त विधि से पुट दें। अनन्तर टिकियों को खरल में डालकर मर्दन करें और घीकुमारी का स्वरस देकर अच्छी तरह मर्दन कर पुनः टिकिया बनाकर सम्यक् शुष्क करलें। फिर शराव सम्पुट में रख कपड़मिट्टी करें। शुष्क होने पर दूसरी कपड़मिट्टी करें। इस तरह ३ कपड़मिट्टी करके ३ सेर बकरी की मींगनियों में फूंकें। स्वांग शीतल होने पर भस्म को निकाल कर सुरक्षित रख लें।

यह भस्म धातु दौर्बल्य, प्रमेह, शक्तिहीनता की वीर्यवान औषधि है। 'सिंहो यथा हस्तिगं निहन्ति तथैव वंगोऽखिलमेह वेगम्' की यह पूर्ण प्रतिनिधि है। $^{1}/_{2}$ से १ रत्ती में इसका प्रयोग करना चाहिये।

वंग भस्म योग--२

शुद्ध वंग—रांग को पिघलकर अपामार्ग का चूर्ण डालते हुए लोहे की कलछी से चलावें। भस्म होने पर शीतल कर शराव सम्पुट में रखकर कपड़मिट्टी करके ३ घण्टा की तेज आंच दें। शीतल होने पर जल में भिगो दें। बारह घण्टा तक भिगोई रहने दें और बीच-बीच में लकड़ी से चलाते रहें। अनन्तर जल को निकाल कर शुष्क करें। फिर आठवां भाग पीतहर ताल का मिलाकर घृत कुमारी स्वरस से मर्दन कर टिकिया बनावें। शुष्क होने पर एक शराव में पीपल की छाल का चूर्ण रख कर उसपर उनको रक्खें और उनपर फिर उपरोक्त छाल का चूर्ण जमाकर दूसरा शराव ऊपर देकर कपड़ मिट्टी करके मध्यमाग्नि दें। इस तरह ८ पुट देनी चाहिये। हरताल प्रथम की ४ पुटों में आठवां भाग और पीछे की ४ पुटों में १६ वां भाग दी जायेगी। सम्पूर्ण पुट हो जाने पर भस्म को निकाल कर सुरक्षित रख लें। उपयोग और मात्रा पूर्व योग की ही तरह है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाग भस्म योग--१

शुद्ध शीशा को पिघलाकर पोस्तड़ोड़ा चूर्ण डालते हुए बड़ की डाली से चलावें। भस्म होने पर शीतल कर जल से धो डालें। फिर खट्टे दही की भावना देकर मर्दन कर टिकिया बना कर शुष्क करें। अनन्तर लोहे के खुले पात्र में लकड़ी का कोयला जलाकर उन पर टिकियों को रखकर ऊपर से और कोयला दें। पंखे से हवा करें। यह सिन्दूरी रंग की भस्म होगी। अनन्तर भस्म के आठवां भाग शुद्ध हिंगुल मिलाकर घीकुमारी स्वरस की भावना देकर टिकिया बना शुष्क करके मृदु अग्नि की पुट दें। इस तरह तीन पुट और दें। अनन्तर चार पुटें केवल घीकुमार का रस देते हुए दें। भस्म को सुरक्षित रख लें।

यह भस्म धातु दौर्बल्य, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर रोगों की पूर्णफल महौषधि है। शुक्र संस्थान पर इसकी असीम क्रिया है। यह 'नागस्तु नाग शत तुल्य बलं ददाति' की समर्थ प्रतिनिधि है। शुक्र विकारों में इसका प्रयोग $\frac{१}{२}$ से १ रत्ती की मात्रा में मक्खन के साथ किया जाता है। पौष्टिक योगों में नाग भस्म की जगह यह भस्म डालने से उस योग के गुणों की अतिशय वृद्धि हो जाती है।

नाग भस्म योग--२

शुद्ध शीशे को लोहे की कड़ाही में आग पर गलावें। कच्ची खाण्ड की चुटकी डालते हुए सुहाञ्जने की लकड़ी से चलाते रहें। भस्म होने पर पंखा से हवा देकर लकड़ी की भस्म को उड़ा दें। अनन्तर शराव सम्पुट में बन्द कर गजपुट में फूंकें। शीतल होने पर भस्म को खरल में डालकर मर्दन करें और ८ वां भाग शुद्ध पीत हरताल मिलाकर पलाश के रस की भावना देकर अच्छी तरह घोटें और शुष्कप्राय होने पर टिकिया बनाकर सुखा लें। अनन्तर सम्पुट में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंकें। शीतल होने पर निकाल कर १६ वां भाग हिंगुल मिलाकर पलाश स्वरस की भावना देकर अच्छी तरह घोटें। शुष्क प्राय होने पर टिकिया बनाकर पूर्ववत् फूंक लें। अनन्तर तीन पुटें घृतकुमारी स्वरस की भावना देते हुए दें। पलाश का स्वरस उसकी पुरानी जड़ से अधः पातन यन्त्र से निकाला जाता है। विधि यह है कि पलाश के पुराने वृक्ष के मूल की छाल निकालें और उसको धोये बिना ही छोटे-छोटे टुकड़ों के आकार में काट लें। फिर एक हंडी में भर दें जिसके तल में एक छिद्र हो। हंडी के नीचे एक चीनी मिट्टी का प्याला रखकर हंडी के चारों तरफ विधि से अग्नि दें। अर्क प्याला में आयेगा। हंडी को पाताल यन्त्र की विधि से रखना होगा।

यह भस्म भी पूर्व की भस्म की तरह ही अतिशय गुणकारी होती है। इसका प्रयोग पूर्ववत् ही करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यशद भस्म

यशद २० तोला लेकर आगी पर गलावें और गोमूत्र, घीकुमार स्वरस एवं गाय के दूध में ७-७ बार बुझावें। फिर अग्नि पर द्रव करके समान भाग शुद्ध पारद में संयुक्त करें। अनन्तर हिमामदस्ता में कूट कर सूक्ष्म करें और खरल में डालकर निम्बू स्वरस, संभालु स्वरस, घीकुमार स्वरस एवं भृङ्गराज स्वरस इन की ३-३ भावनाएँ दें। एक माशा प्रमाण की गुटिकाएँ बनाकर सम्यक् शुष्क करके कपड़ मिट्टी की हुई आतशी शीशी में रख कर वालुका यन्त्र में ४८ घंटों की अग्नि दें। शीतल होने पर निकाल कर पंचामृत की भावना देकर शुष्क कर गुटिकाएँ बनाकर पूर्वोक्त विधि से बारह घण्टा की अग्नि दें। शीतल होने पर भस्म को निकाल कर सुरक्षित रखें।

यह भस्म पारद के संयोग से बनती है और अतिशय गुणकारी है। जीर्णज्वर, संग्रहणी, अग्निमान्द्य, प्रमेह, मधुमेह में बहुत ही विशिष्ट फलप्रद होती है। मात्रा ½ से १ रत्ती की मात्रा में स्वतन्त्र रूप से अथवा अन्य सहयोगी दवाओं के साथ देनी चाहिये।

गन्धक तैल के आमयिक प्रयोग

गन्धक तैल योग—१

आमला सार गन्धक १० तोला को खरल में डालकर मर्दन कर आक का दूध डालें और १० दिनों तक घुटाई करते रहें। बीच-बीच में आवश्यक दूध देते रहें। फिर दूध में सुखाकर उसका गीलापना नष्ट करदें। अनन्तर वट के दूध में उपरोक्त विधि से ७ दिन तक घोंटकर आतप शुष्क कर लें। बाद में पीपल दूध देकर ५ दिन तक मर्दन कर सुखावें। फिर गूलर का दूध, घृतकुमारी का स्वरस, थूहर का दूध, काली भंबोलन का रस, बकरी का दूध, भेड़ का दूध, इनकी ३-३ दिन की भावना देकर गोली बना कर सुखा लें और कपड़मिट्टी की गई शीशी में भर के पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें।

इस तैल में गन्धक तैल के समस्त गुण विद्यमान होते हैं। रोग विनाशन में यह अद्भुत क्षमता रखता है। वातश्लेष्म विकार तथा पुरुषशक्तिहीनता की वीर्यवान् महौषधि है। इसे सींकपर लगा कर पान में खिलाना चाहिये। इससे बल-पौरुष बढ़ता है। रक्त की वृद्धि होकर चेहरा पूर्णतया अरुणाभ हो जाता है। पुरातन रक्त विकार और कुष्ठ की यह महनीय औषधि है। कुष्ठ के द्वारा गलित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो रहे अंगों पर इसको लगाने से त्वरित गति से बहुत अच्छा लाभ होता है। विकार तथा कुष्ठ पर इस का प्रयोग करते हुए आहार में नमक बन्द कर देना चाहिये।

गन्धक तैल योग--२

शुद्ध आमला सार गन्धक १० तोला को खरल में डालकर मर्दन कर ६० तोला श्वेत अर्क के दूध की भावना दें। फिर बाजरे के समान छोटी-छोटी गोलियाँ बना कर सुखा लें। अनन्तर मुर्गी का एक बड़ा अण्डा लेकर उसमें गोलियों को भर्ती करें। जिस छिद्र से अण्डे को खाली किया गया है और गोलियाँ डाली गयी हैं उस छिद्र को अण्डे के छिलके से बन्द कर ऊपर से दूसरा अण्डा चढ़ाकर कपरौटी कर सुखा लें। फिर उपरोक्त अण्डा को आधा सेर अलसी तैल डाली हुई लोहे की छोटी कड़ाही में रक्खें और कड़ाही के नीचे १२ घण्टा तक दीये की लौ के समान अग्नि देते रहें। जब उक्त समय हो जाय तब अग्नि को शीतल कर तैल को ठण्डा होने पर अण्डा को निकालकर कपड़मिट्टी को हटावें। अनन्तर अण्डा में छिद्र कर तैल को निकालें। यह तैल रक्त वर्ण का होगा। इसे बनाने में तीव्र अग्नि कभी भी न दें।

रोग शमन में इस तैल की विशिष्ट क्षमता है। रक्त विकार, यकृत् दोष, श्लेष्मज रोग, दौर्बल्य, रक्ताल्पता, प्रमेह, पुरुष शक्तिहीनता, दूषित पाण्डु आदि रोगों पर इसका सफल प्रयोग होता है। पामा, विचर्चिका पर यह अचूक लाभ करता है। इसका उपयोग पूर्व योग में बतलाये तरीके से करना चाहिये। इसके सेवन से शरीर में नूतन शक्ति तथा क्रिया प्रवणता का उद्भव होता है।

गन्धक तैल योग--३

गन्धक आमलासार १० तोला, पसर कटारी के फल १० तोला, गायका घृत १० तोला, दशअंगुल चौड़ा और दश अंगुल लम्बा पतली खद्दर का स्वच्छ कपड़ा लें। कटैरी के फलों को कूट लें, गन्धक को मर्दित करें। फिर ४ तहें किये हुए कपड़े पर घृत को लीपें। अनन्तर फलों के चूर्ण को फैला कर उस पर गन्धक को बिछावें। बाद में कपड़े को बत्ती की तरह समेट कर लोहे के गज अथवा तार के साथ लपेट दें और धागा से मजबूती के साथ बाँध दें। इसे निर्वात स्थान पर इस युक्ति से लटकावें कि यह अधर में लटकता रहे। फिर इसके नीचे चीनीमिट्टी का प्याला रखकर वस्त्र को अग्नि धरा दें। जलते हुए वस्त्र से तैल टपकेगा। पोटली जलकर जब शान्त हो जाय तब तैल पात्र को उठा लें। यह ध्यान रखना चाहिये कि इसका धूम्र आँखों को न लगे। इसके उचित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होगा कि आग धरा देने के बाद वहाँ से हट जायँ। तैल को वस्त्र से छान कर रख लें।

श्लेष्मा विकारों तथा यकृत् के दोषों पर यह अच्छा गुणकारी है। श्वास, कास, कफ बनना, अरुचि, रक्ताल्पता, उदर की वायु, आध्मान, अग्निमान्द्य आदि रोगों पर इससे अच्छा फल प्राप्त होता है। २ से ६ बूंद की मात्रा में पतासा में रख कर खिलाना चाहिये।

गन्धक तैल योग--४

गन्धक आमलासार ४० तोला, गन्धक डण्डा २० तोला, सिंगी मोहरा १० तोला, धतूरा बीज १० तोला, कुचिला १० तोला, मालकांगनी १० तोला, लाल-गुञ्जा १० तोला, गाय का दूध १ सेर। गन्धक को महीन पीस लें। अन्य दवाओं को कूटकर गन्धक मिलाकर गाय के दूध में भिगो दें। पांच दिनों तक भिगोये रक्खें। फिर सुखा कर आतशी शीशी में भरकर पातालयन्त्र से तैल निकालें। वात श्लेष्म विकारों पर असीम लाभ करता है। अर्दित, पक्षाघात, गठिया, आमवात, गृध्रसी, अवबाहुक, श्वास, कास आदि में इसका प्रयोग किया जाता है। धातु दौर्बल्य, रतिशक्तिहीनता, रक्तविकार, रक्ताल्पता पर भी इसका प्रयोग अच्छा फल प्रदान करता है।

गन्धक तैल योग--५

गन्धक आमलासार १० तोला को निम्बू, पान तथा लहसुन के स्वरसों की १०-१० भावना दें। फिर ७ भावना ब्राण्डी शराब की देकर गोलियाँ बनाकर पातालयन्त्र से तैल निकाल लें।

उपरोक्त योग के समान ही इसके भी गुण हैं। विशेषतः पुरातन पक्षाघात तथा पुरुषशक्ति की अल्पता में इससे अच्छा लाभ होता है। बार-बार आने वाले पक्षाघात के दौरे इससे शमन हो जाते हैं। स्नायुगत वातविकारों पर इसकी अच्छी फलप्रद क्रिया होती है। ३ से ६ बूँद की मात्रा में पतासा में इसे देना चाहिये।

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.
Book No.
Acc No. 000008

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चरक गवेषणा पीठ के अचिर भावी प्रकाशन

१—सिद्धौषधि मञ्जूषा—द्वितीय एवं तृतीय खण्ड
२—कैंसर रोग और आयुर्वेद
३—ग्रन्थि रस विज्ञान और आयुर्वेद
४—गैस्ट्रिक अल्सर और आयुर्वेद
५—सफल चिकित्सा सोपान
६—जीवेम् शरदः शतं की साधना
७—सन्तानहीनता और उसकी चिकित्सा
८—मधुमेह रोग और उसकी सफल चिकित्सा
९—जवानी में बुढ़ापा—हेतु और चिकित्सा
१०—अनेक रोगों का मूल आँव—हेतु और चिकित्सा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection